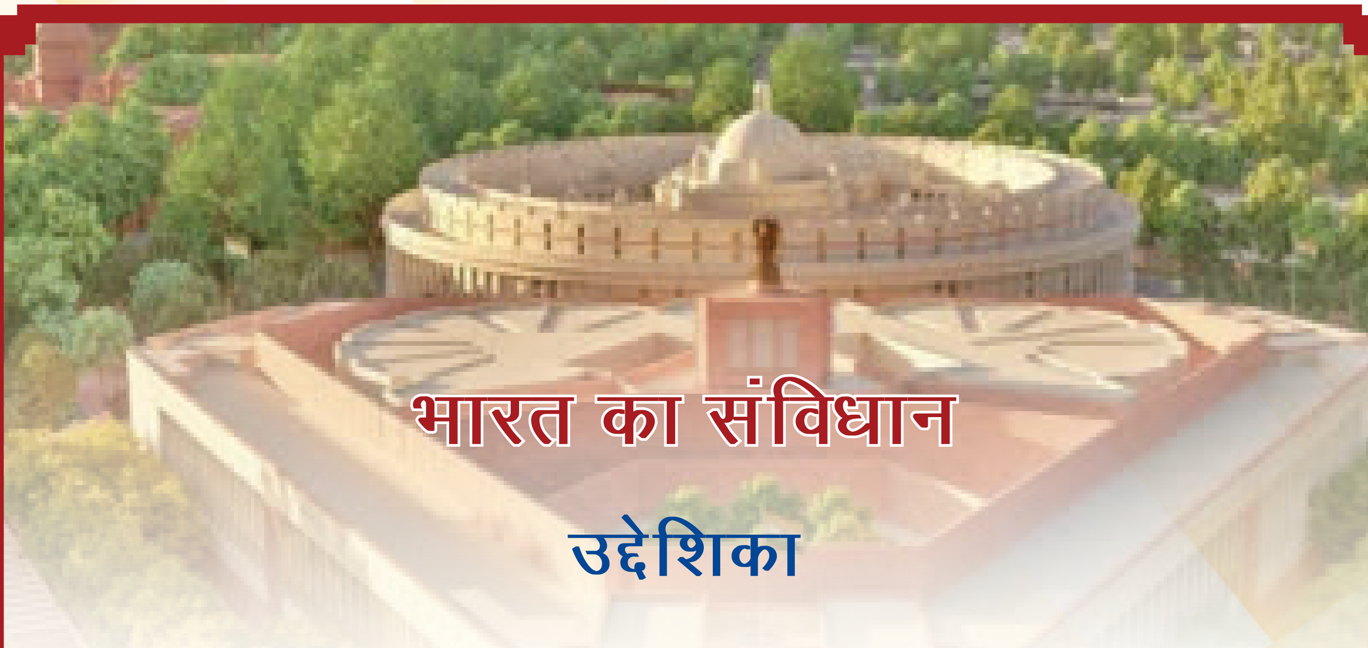

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व–संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और
राष्ट्र की एकता और अखंडता
सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए

दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज दिनांक 26 नवम्बर 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत 2006 विक्रमी) को एतद्‌द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

राष्ट्रीय गीत

वन्दे मातरम्।
सुजलाम् सुफलाम् मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्। वन्दे मातरम्।

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुरभाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्। वन्दे मातरम्। कोटि–कोटि कण्ठ कल–कल निनाद कराले,
कोटि–कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
के बॉले मां तुमि अबले,
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीम्,
रिपुदलवारिणीं मातरम्। वन्दे मातरम्।

तुमि विद्या तुमि धर्म,
तुमि हृदि तुमि मर्म,
त्वम् हि प्राणाः शरीरे,
बाहुते तुमि मां शक्ति,
हृदये तुमि मां भक्ति,
तोमारेई प्रतिमा गड़ि मन्दिरे–मन्दिरे। वन्दे मातरम्।

त्वम् हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी, नमामि त्वाम्,
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्। वन्दे मातरम्।

श्यामलाम् सरलाम् सुस्मिताम् भूषिताम्,
धरणीम् भरणीम् मातरम्। वन्दे मातरम्।

डॉ. मनसुख मांडविया
DR. MANSUKH MANDAVIYA

सत्यमेव जयते

मंत्री
श्रम एवं रोजगार
व युवा कार्यक्रम एवं खेल
भारत सरकार
Minister
Labour & Employment
and Youth Affairs & Sports
Government of India

संदेश

"सशक्त भाषा ही सशक्त संवाद की आधारशिला है।"

भारतीय खेल प्राधिकरण के राजभाषा प्रभाग द्वारा 'राजभाषा संघोष' पत्रिका के प्रथम संस्करण (2026) का प्रकाशन एक प्रेरणात्मक प्रयास है, जो खेल और राजभाषा—दोनों को एक साझा मंच प्रदान करता है। भाषा राष्ट्रीय चेतना की संवाहक होती है, जबकि खेल राष्ट्र में अनुशासन, समर्पण एवं एकात्मता की भावना को सुदृढ़ करते हैं। खेल और राजभाषा का यह समन्वय राष्ट्र-निर्माण की दिशा में एक प्रभावी कदम सिद्ध होगा।

इस पत्रिका का ई-प्रकाशन परंपरा एवं नवाचार के संकल्प का प्रतीक है, जो माननीय प्रधानमंत्री जी के 'विकसित भारत' के संकल्प को साकार करने में सहायक है।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन के साथ-साथ देश में खेल संस्कृति को भी एक नया आयाम प्रदान करेगी।

इस पत्रिका के प्रकाशन के सराहनीय प्रयास के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिन्द, जय भारत।

(डॉ. मनसुख मांडविया)

120, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली—110001, दूरभाष : +91-11-23717515, 23710240, फैक्स : +91-11-23711708
120, Shram Shakti Bhawan, New Delhi- 110001, Tel. : +91-11-23717517, 23710240, Fax : +91-11-23711708
ई-मेल/E-mail : minoffice-mole@nic.in

कार्यालय
श्रीमती रक्षा निखिल खडसे
युवा कार्यक्रम और खेल राज्य मंत्री
भारत सरकार
Office of
Smt. Raksha Nikhil Khadse
Minister of State for Youth Affairs & Sports
Government of India

सत्यमेव जयते

संदेश

"भाषा वह सेतु है, जो विचार को जन-जन तक पहुँचाती है।"

'राजभाषा संघोष' का प्रकाशन हिन्दी को खेल प्रशासन और अभिव्यक्ति के केंद्र में स्थापित करने की दिशा में एक सशक्त माध्यम बनेगा। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के संवर्धन के साथ-साथ खेल संस्कृति के प्रसार को भी मजबूती प्रदान करेगी।

पत्रिका का ई-प्रकाशन न केवल वैश्विक पटल पर हिन्दी को और अधिक विस्तारित करेगा अपितु पर्यावरण संरक्षण के संदेश को भी जन-जन तक पहुँचाएगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतीय खेल प्राधिकरण के राजभाषा प्रभाग का यह प्रयास राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग को नई दिशा प्रदान करते हुए सभी के लिए प्रेरणास्पद एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

राजभाषा संघोष के प्रथम संस्करण (2026) की इस उत्कृष्ट पहल के लिए समस्त राजभाषा प्रभाग को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।"

जय हिन्द, जय भारत।

(रक्षा निखिल खडसे)
युवा कार्यक्रम एवं खेल राज्य मंत्री
भारत सरकार

Constituency Office : AT & PO Kothali, Muktainagar-425306, Jalgaon (Maharashtra) Telefax : 02583-235050
E-mail : rakshataikhadse@gmail.com

हरि रंजन राव, भा.प्र.से.
महानिदेशक
Hari Ranjan Rao, IAS
Director General

सत्यमेव जयते

भारतीय खेल प्राधिकरण
SPORTS AUTHORITY OF INDIA

संदेश

मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि भारतीय खेल प्राधिकरण (भाखेप्रा) के राजभाषा प्रभाग द्वारा वार्षिक पत्रिका "राजभाषा संघोष" के प्रथम संस्करण (2026) का प्रकाशन किया जा रहा है।

"राजभाषा संघोष" पत्रिका कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने के साथ-साथ राजभाषा के प्रति जागरूकता को सुदृढ़ करने की दिशा में एक सराहनीय कदम है तथा इसका ई-प्रकाशन तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की प्रतिबद्धता का द्योतक है जो परंपरा एवं नवाचार के समन्वय को साकार करता है।

इस महत्वपूर्ण पहल के लिए मैं सभी संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूँ।

(हरि रंजन राव)
महानिदेशक

भारतीय खेल प्राधिकरण (युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय), जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम परिसर, पूर्वी द्वार नं. 10, लोधी रोड, नई दिल्ली–110003
SPORTS AUTHORITY OF INDIA (Ministry of Youth Affairs & Sports), Jawaharlal Nehru Stadium Complex, East Gate No. 10, Lodhi Road, New Delhi - 110003
Ph.: 91-11-24362720 (O), 24362721 (Fax) E-mail : dg-sai@gov.in

मातादीन आसीवाल
कार्यकारी निदेशक
Matadin Asiwal
Executive Director

भारतीय खेल प्राधिकरण
SPORTS AUTHORITY OF INDIA

संदेश

"राजभाषा संघोष" वार्षिक पत्रिका के प्रथम संस्करण (2026) के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

यह पत्रिका न केवल राजभाषा के प्रचार-प्रसार का माध्यम है, बल्कि यह कार्मिकों की साहित्यिक प्रतिभा को भी उजागर करती है। इसमें प्रकाशित लेख, विचार एव रचनाएँ निश्चित रूप से सभी को प्रेरित करेंगी तथा हिंदी के प्रति उनके जुड़ाव को और सशक्त करेंगी।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एव कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि "राजभाषा संघोष" भविष्य में भी इसी प्रकार नए आयामों को प्राप्त करती रहेगी।

(मातादीन आसीवाल)
कार्यकारी निदेशक

भारतीय खेल प्राधिकरण (युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय), जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम परिसर (पूर्वी द्वार क्र. 10), लोधी रोड, नई दिल्ली–110003
SPORTS AUTHORITY OF INDIA (Ministry of Youth Affairs & Sports), Jawaharlal Nehru Stadium Complex (East Gate No. 10), Lodhi Road, New Delhi - 110003
Tel. 011-24362652 (O), E-mail matadin.sai@gov.in, Website www.sportsauthorityofindia.nic.in

प्रभागीय प्रगति आख्या 2025-26

राजभाषा प्रभाग : सुशासन एवं संवाद का सेतु

हिंदी भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि भारतवर्ष के संचार एवं संवाद की आधारभूत संवाहिका है। भारतीय खेल प्राधिकरण जैसे बहुआयामी एवं राष्ट्रव्यापी निकाय में राजभाषा प्रभाग प्रशासनिक दक्षता एवं पारदर्शिता की आत्मा है; जहाँ विविध भाषाई पृष्ठभूमियों से संबद्ध खिलाड़ी, प्रशिक्षक, अधिकारी एवं कार्मिक एकात्म भाव से कार्यरत हैं, वहाँ हिंदी समन्वय, संप्रेषण तथा राष्ट्रीय एकात्मता के सुदृढ़ीकरण का प्रभावी साधन है। राजभाषा प्रभाग का ध्येय केवल हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन करना नहीं, अपितु उसे संस्थागत कार्य–संस्कृति के अभिन्न, स्वाभाविक एवं प्रभावकारी अंग के रूप में प्रतिष्ठित करना है। इसी परिप्रेक्ष्य में वर्ष 2025–26 के अंतर्गत, प्रभाग द्वारा (अपने दैनिक कार्यों के साथ–साथ) समय–समय पर सुनियोजित, नवोन्मेषी तथा परिणामोन्मुख पहलों जैसे हिंदी पखवाड़ा, राजभाषा स्वर्ण जयंती, विश्व हिंदी दिवस, राजभाषा सम्मेलन, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों एवं निरीक्षणों इत्यादि के माध्यम से कार्यालय में पूर्व से संचालित कार्यों को और अधिक सुदृढ़ता प्राप्त हुई।

वार्षिक उपलब्धियाँ (2025–26) : एक दृष्टि

वर्ष 2025–26 के दौरान भारतीय खेल प्राधिकरण, मुख्य कार्यालय के राजभाषा प्रभाग द्वारा राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु बहुआयामी, सुव्यवस्थित एवं लक्ष्याभिमुख प्रयास किए गए। इन समस्त उपक्रमों का

प्रमुख अभिप्राय शासकीय कार्य–संचालन में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को संस्थागत स्वरूप प्रदान करना तथा राजभाषा अधिनियम एवं अधीनस्थ नियमों/निर्देशों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित करना रहा। परिणामतः हिंदी का प्रयोग प्रशासनिक प्रक्रियाओं से आगे बढ़कर कार्य–संस्कृति में सशक्त एवं स्वाभाविक रूप से परिलक्षित हुआ।

भारतीय खेल प्राधिकरण, मुख्य कार्यालय सहित अधीनस्थ 12 क्षेत्रीय केंद्रों, भारतीय खेल प्राधिकरण प्रशिक्षण केंद्रों, शैक्षिक संस्थानों एवं अन्य इकाईयों में हिंदी के व्यावहारिक प्रभावी एवं सतत प्रयोग को निरंतर प्रोत्साहित किया गया। विविध प्रभागों में राजभाषा संबंधी प्रावधानों के अनुपालन को सुदृढ़ करते हुए प्रशासनिक एवं तकनीकी कार्यों में हिंदी के प्रयोग का विधिवत् विस्तार सुनिश्चित किया गया, जिसके अंतर्गत ई–ऑफिस प्रणाली में हिंदी के डिजिटल प्रयोग को प्रोत्साहित किया गया। नियमित अनुश्रवण, समुचित मार्गदर्शन एवं सतत समीक्षा–तंत्र के फलस्वरूप कार्य–निष्पादन में भाषिक एकरूपता तथा कार्यदक्षता में उल्लेखनीय वृद्धि दिखी।

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत अधिसूचित समस्त अभिलेखों, कार्यालयीन पत्राचार तथा विभिन्न प्रभागों से प्राप्त सामग्रियों का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण द्विभाषिक अनुवाद सुनिश्चित किया गया। इसके साथ, वार्षिक प्रतिवेदन 2024–25 का अनुवाद एवं मुद्रण कार्य निर्धारित समय–सीमा में संपन्न कर प्रशासनिक पारदर्शिता तथा हिंदी के संस्थागत प्रयोग को सुदृढ़ आधार प्रदान किया गया। गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्दिष्ट वार्षिक कार्यक्रम 2025–26 के दिशा–निर्देशों का व्यापक प्रचार–प्रसार सभी क्षेत्रीय केंद्रों, स्टेडिया एवं प्रशिक्षण संस्थानों तक सुनिश्चित किया गया। साथ ही, 'क', 'ख' एवं 'ग' क्षेत्रों के अनुसार, पत्राचार का अनुपालन सुनिश्चित किया गया। इसके अतिरिक्त हिंदी में मूल टिप्पणी, प्रारूप–लेखन एवं अन्य राजभाषा संबंधी कार्यों के प्रोत्साहनार्थ आवश्यक प्रशासनिक उपाय प्रभावी रूप से क्रियान्वित किए गए।

वित्तीय वर्ष 2025–26 के दौरान संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिनांक 12 अप्रैल, 2025 को प्रशिक्षण केंद्र, शिलांग का निरीक्षण किया गया, जिसमें भारतीय खेल प्राधिकरण, मुख्य कार्यालय की ओर से श्री विष्णु कान्त तिवारी, सचिव, भा.खे.प्रा. एवं सुश्री आशा, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा भागीदारी सुनिश्चित की गई। इसी क्रम में दिनांक 12 जून, 2025 को बिलासपुर एवं धर्मशाला के निरीक्षण में डॉ. गीता पाराशर, निदेशक/प्रभारी (राजभाषा) एवं उपनिदेशक (राजभाषा) की सहभागिता रही; दिनांक 07 जुलाई, 2025 को मुंबई का निरीक्षण सम्पन्न किया गया जिसमें सचिव, भारतीय खेल प्राधिकरण एवं उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा भागीदारी सुनिश्चित की गई, तथा दिनांक 30 अगस्त, 2025 को पटना केंद्र का निरीक्षण संपन्न किया गया, जिनमें निदेशक/प्रभारी (राजभाषा) एवं उपनिदेशक (राजभाषा) की सहभागिता रही। दिनांक 15 जनवरी, 2026 को गच्चीबौली, हैदराबाद स्थित प्रशिक्षण केंद्र का निरीक्षण किया गया, जिसमें भारतीय खेल प्राधिकरण, मुख्य कार्यालय की ओर से निदेशक/प्रभारी (रा.भा.) तथा उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा भागीदारी सुनिश्चित की गई।

राजभाषा स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में 13 मई से 25 मई 2025 के मध्य विविध खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें क्रिकेट, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, वॉलीबॉल एवं शतरंज प्रमुख रहे। इसी अनुक्रम में 15 जून, 2025 को जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में ***"वॉकाथॉन"*** का आयोजन डॉ. गीता पाराशर, निदेशक/

प्रभारी (रा.भा.) के मार्गदर्शन में किया गया, कार्यक्रम का शुभारंभ श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा हरी झंडी दिखा कर किया गया, जिसमें गृह मंत्रालय, भा.खे.प्रा., नराकास दक्षिणी दिल्ली–2 के विभिन्न विभागों एवं कार्यालयों की उत्साहपूर्ण सहभागिता परिलक्षित हुई तथा हिंदी के प्रचार–प्रसार को नई ऊंचाईयाँ मिली।

दिनांक 26 जून, 2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में भारतीय खेल प्राधिकरण के अधिकारियों द्वारा सहभागिता की गई, जहाँ भारतीय खेल प्राधिकरण की क्रिकेट टीम को सम्मानित किया गया।

दिनांक 30 जून, 2025 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें राजभाषा नीति, नियम एवं अधिनियमों पर विषय विशेषज्ञ, श्री सुंदर साहू द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इसमें मुख्य कार्यालय से कार्मिक भौतिक रूप से उपस्थित रहे तथा क्षेत्रीय केंद्रों के कार्मिकों ने ऑनलाइन माध्यम से सहभागिता की, जिसके फलस्वरूप कार्मिकों में हिंदी में कार्य–संपादन की दक्षता में वृद्धि हुई।

दिनांक 11 जुलाई, 2025 को हैदराबाद में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में निदेशक/प्रभारी(राजभाषा) एवं भा.खे.प्रा. के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों के कार्मिकों द्वारा भागीदारी सुनिश्चित की गई तथा क्षेत्रीय केंद्र, बैंगलुरु में दिनांक 12 जुलाई, 2025 को निदेशक/प्रभारी (रा.भा.) द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

फरवरी, 2023 में गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा भा.खे.प्रा. को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दक्षिणी दिल्ली–2 की अध्यक्षता सौंपी गई थी। इस दायित्व के अंतर्गत दिनांक 21 जुलाई, 2025 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में श्री हरि रंजन राव, महानिदेशक, भा.खे.प्रा. की अध्यक्षता में नराकास दक्षिणी दिल्ली–2 की पाँचवीं बैठक आयोजित की गई, जिसमें सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों ने भाग लेकर राजभाषा कार्यान्वयन पर विस्तृत चर्चा की।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 110वीं तिमाही बैठक दिनांक 22 अप्रैल, 2025, दिनांक 02 जुलाई, 2025 को 111वीं तिमाही बैठक, दिनांक 08 अक्टूबर, 2025 को 112वीं तिमाही बैठक एवं दिनांक 23 जनवरी, 2026 को 113वीं तिमाही बैठक सचिव, भा.खे.प्रा. की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें भा.खे.प्रा. के समस्त प्रभागों एवं स्टेडियमों के प्रमुखों ने भाग लिया। बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई तथा हिंदी में कार्य निष्पादन को बढ़ाने, राजभाषा संबंधी प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित करने एवं कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों के समाधान हेतु आवश्यक दिशा–निर्देश प्रदान किए गए।

राजभाषा नियमों के अनुपालन को सुनिश्चित करते हुए अगस्त माह से नवंबर माह तक भा.खे.प्रा. के विभिन्न प्रभागों/स्टेडियमों का व्यापक राजभाषायी निरीक्षण किया गया तथा निरीक्षण के उपरांत समीक्षात्मक रिपोर्ट संबंधित इकाइयों को प्रेषित की गई। इसके साथ ही, युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय एवं भारतीय खेल प्राधिकरण के विभिन्न प्रभागों से समय–समय पर प्राप्त अंग्रेजी सामग्री का हिंदी अनुवाद समयबद्धता से किया गया।

वर्ष 2025–26 के अंतर्गत भारतीय खेल प्राधिकरण में चयनित 5 पदों में से 4 कनिष्ठ अनुवाद अधिकारियों द्वारा कार्यभार ग्रहण करने से राजभाषा प्रभाग और सुदृढ़ हुआ, जिसके फलस्वरूप राजभाषा संबंधी कार्यों के निष्पादन में गति एवं गुणवत्ता का समुचित संवर्धन हुआ।

दिनांक 14 से 29 सितंबर 2025 तक हिंदी पखवाड़ा अत्यंत उत्साह, सक्रिय सहभागिता एवं व्यापक जन–समावेश के साथ के भारतीय खेल प्राधिकरण मुख्य कार्यालय में आयोजित किया गया जिसका शुभारंभ श्री हरि रंजन राव, महानिदेशक, भा.खे.प्रा. द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया। पखवाड़े के अंतर्गत कविता पाठ, रंगोली, श्रुतलेख, चित्र व्याख्यान, वाद–विवाद, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, निबंध, टाइपिंग, सुलेख/नारालेखन, गीतमाला–बूझो तो जाने आदि रोचक प्रतियोगिताओं के साथ–साथ विभिन्न विषय विशषज्ञों जैसे डॉ उर्मिला, अपर सचिव (सेवानिवृत्त) यूजीसी, डॉ ज्ञानेन्द्र शर्मा, सह–प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं श्री कुमार पाल शर्मा, संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय आदि द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किए गए।

पखवाड़े में हिंदी पुस्तक मेला विशेष आकर्षण का केंद्र रहा, जिसमें विभिन्न प्रकाशकों द्वारा पुस्तक प्रदर्शनी लगाई गई। 21 सितंबर, 2025 को खेलो इंडिया के सहयोग से **''संडे ऑन साइकिल''** कार्यक्रम श्री मयंक श्रीवास्तव, उपमहानिदेशक, खेलो इंडिया के नेतृत्व में निदेशक/प्रभारी (राजभाषा) द्वारा झंडी दिखाकर शुभारंभ किया गया तथा 19 अक्टूबर, 2025 को हिंदी पखवाड़े के सभी विजेताओं को पुरस्कार, प्रोत्साहन प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया।

क्षेत्रीय केंद्र, सोनीपत का राजभाषायी निरीक्षण दिनांक 18 नवंबर, 2025 को डॉ. गीता पाराशर, निदेशक/प्रभारी (रा.भा.) एवं सुश्री आशा, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया, साथ ही हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

दिनांक 17 फरवरी, 2026 – 18 फरवरी, 2026 को क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता तथा 19 फरवरी, 2026 को अगरतला स्थित प्रशिक्षण केंद्र का राजभाषायी निरीक्षण डॉ. गीता पाराशर, निदेशक/प्रभारी (रा.भा.) तथा सुश्री आशा, उपनिदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया, साथ ही कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। उक्त दोनों अधिकारियों द्वारा 20 फरवरी, 2026 को त्रिपुरा में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लिया गया एवं इस सम्मेलन में भारतीय खेल प्राधिकरण के क्षेत्रीय केंद्रों से भी सहभागिता की गई। इस सम्मेलन में माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे तथा इसमें राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन, हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग तथा सरकारी कार्यों में हिंदी के उपयोग को बढ़ाने पर विशेष बल दिया तथा विभिन्न क्षेत्रों के कार्यालयों के मध्य राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने हेतु अनुभवों का आदान–प्रदान किया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यालयों द्वारा किए गए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यों की सराहना की गई तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने हेतु प्रेरित किया गया।

विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी, 2026) के कार्यक्रम का आयोजन 13 जनवरी 2026 को किया गया। इस अवसर पर कार्यशाला एवं व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें विषय विशेषज्ञ, डॉ दीप नारायण पांडे,

सह–प्राध्यापक, जेएनयू, एवं श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक (सेवानिवृत्त), राजभाषा विभाग द्वारा व्याख्यान में आधुनिक तकनीकी साधनों के माध्यम से एवं ''भारती अनुवाद टूल्स (कंठस्थ 3.0)'' एवं ई–ऑफिस के व्यावहारिक अनुप्रयोग के माध्यम से हिंदी के संवर्धन पर विशेष बल दिया गया।

आगामी परिपेक्ष्य : नवाचार और सुदृढ़ता की ओर

अतः वर्ष 2025–26 में राजभाषा प्रभाग द्वारा संपादित गतिविधियाँ इस तथ्य को सुस्पष्ट करती हैं कि हिंदी प्रशासनिक औपचारिकता मात्र न होकर संगठनात्मक सुदृढ़ता एवं कार्यकुशलता का प्रभावी साधन है। भारतीय खेल प्राधिकरण के शीर्ष नेतृत्व, विशेषतः महानिदेशक महोदय के दूरदर्शी मार्गदर्शन एवं सक्रिय सहयोग से राजभाषा संवर्धन हेतु अनेक योजनाबद्ध एवं परिणामोन्मुख कार्य किए गए, जिनसे हिंदी के प्रयोग को संस्थागत दृढ़ता प्राप्त हुई। सामाजिक जनसम्पर्क हेतु विभिन्न कार्यक्रमों एवं कार्यकलापों को सोशल मीडिया पर अपलोड कराया गया, जिससे राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रचार–प्रसार को और अधिक व्यापकता मिली।

आगामी समय में डिजिटल प्रौद्योगिकी एवं नवाचारपरक उपायों के और अधिक समन्वित प्रयोग द्वारा हिंदी के प्रयोग को सुलभ, प्रभावकारी एवं परिणामोन्मुख बनाने हेतु भारतीय खेल प्राधिकरण, राजभाषा प्रभाग प्रतिबद्ध है।

जय हिन्द, जय भारत

गी पाराशर

डॉ. गीता पाराशर
निदेशक/प्रभारी (राजभाषा)

संपादक मंडल

डॉ. गीता पाराशर
निदेशक/प्रभारी (राजभाषा)
(मुख्य संपादक)

सुश्री आशा
उप निदेशक (राजभाषा)
(सह संपादक)

श्री नकुल पुनेठा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
(सहायक संपादक)

सुश्री प्रियंका
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
(सहायक संपादक)

श्री बनवारी लाल
अनुभाग अधिकारी
(सहायक टीम प्रमुख)

सुश्री अनिशा सिंघानिया
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
(सहायक टीम)

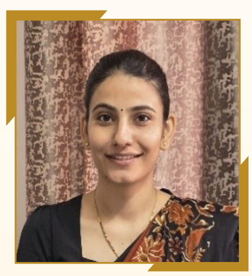

श्रीमती अनीता सहरावत
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
(सहायक टीम)

सुश्री नीति लोहाट
डाटा एंट्री ऑपरेटर
(सहायक टीम)

श्री राहुल कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर
(सहायक टीम)

अनुक्रमणिका

क्र.स.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ
1.	बोतलबंद पानीः शुद्ध या सेहत के लिए ख़तरा?	• डॉ. राजबीर सिंह गिल	1
2.	हिंदी और ई–टूल्स	• आशा	2–3
3.	वसंत–अवनि	• नकुल पुनेठा	4
4.	विजय नाद	• प्रियंका	5
5.	एक अनुशासित कर्मचारी	• सुरेन्द्र पाल सिंह	6–7
6.	कुएँ का मेंढ़क	• आशीष सिंह गरखाल 'बकैत'	8
7.	अकेला चना	• आकाश	9–11
8.	नागालैंड	• सेरनिसो रोंगपिपी	12
9.	भारतीय खेल प्राधिकरण खेल प्रशिक्षण केंद्रः आशा की एक किरण	• निशा विध्यार्थी	13–14
10.	ये आँखें	• आस्था अग्रवाल	15
11.	स्वस्थ जीवन के लिए योग और खेलों की भूमिका	• एकता यादव	16–17
12.	हिंदी भाषा का महत्व – आम जीवन में हिंदी का योगदान	• सुकृति आनन्द	18–19
13.	वृक्ष देवता	• श्याम बिहारी गुप्ता	20
14.	खेलों का महत्व और चुनौती	• तान्या श्रीवास्तव	21–22
15.	यादों की पगडंडी	• भवेश वशिष्ठ	23
16.	पर्यावरण प्रदूषण	• श्रीजा एस. नायर	24
17.	सामाजिकता क्यों जरूरी है मानव के लिए?	• श्री विकास कुमार	25–27
18.	हर्ष	• रोहित भारद्वाज	28
19.	यथार्थ गीता : भगवद्गीता को समझने की सही और क्रियात्मक दृष्टि	• ओंकार नाथ यादव	29–31
20.	मेरी कहानी, मेरी जुबानी	• वैशाली	32
21.	''हिंदी'' से अपनी पहचान	• पूजा	33
22.	एक किलकारी बोली......	• तारुषी शर्मा	34–35
23.	सोशल मीडिया का जन जीवन पर प्रभाव	• विशाल पिपल्दे	36–37
24.	एन.आई.एस. हॉस्टल का पहला दिन	• हरि शंकर शर्मा	38
25.	'कर्म ही धर्म है': जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण	• अनु कुमारी	39

क्र.स.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ
26.	जीवन की अनमोल यात्रा	• शालिनी कैन	40
27.	यादों का सफर और मेरी तन्हाई	• हिमांशु तिवारी	41
28.	महादेवी जी के काव्य में बिम्ब विधान	• शेफाली दुष्यन्त	42–43
29.	मेरी रेल यात्रा	• कोमल किरण	44
30.	पर्यावरण परिवर्तन और भारत की चुनौतियाँ	• हरिशंकर शर्मा	45–47
31.	पथिक	• जितेन्द्र कुमार मद्धेशिया	48
32.	डिजिटल युग में पुस्तकालयः सप्रू हाउस पुस्तकालय (आईसीडब्ल्यूए) में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी – सोशल मीडिया का विकास और प्रभाव	• डॉ. शशि रावत	49–53
33.	नन्ही कली आयी आँगन में	• आनंद मिश्र	54
34.	विकसित भारत 2047 में बौद्धिक संपदा, राजभाषा और नवाचार की समन्वित भूमिका	• शुभम रत्नम	55–57
35.	दिल नहीं था... सिर्फ एक शहर था	• योगेश कुमार बीलवाल	58
36.	हिंदी : समन्वय, संकल्प और सृजन	• बसंत कुमार	59
37.	बसंत का आगमन	• दुष्यंत गुप्ता	60
38.	स्वच्छता	• बबीता	61
39.	मारीच	• रेणु खरे	62
40.	भारतीय खेल प्राधिकरण में कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी के रूप में मेरा अनुभव (अक्टूबर 2025)	• अनीता सहरावत	63
41.	नारी सशक्तिकरण	• सना आफ़रीन	64–65
42.	आओ खेल का नियम बनाएँ	• अरविन्द मुखरैया	66
43.	जीवन के रंग	• राहुल कुमार	67–68
44.	आधुनिकता – विकास या ह्रास	• बनवारी लाल	69
45.	क्रीड़ा शब्दावली		70
46.	चित्रावली		71–96

राजभाषा
संघोष

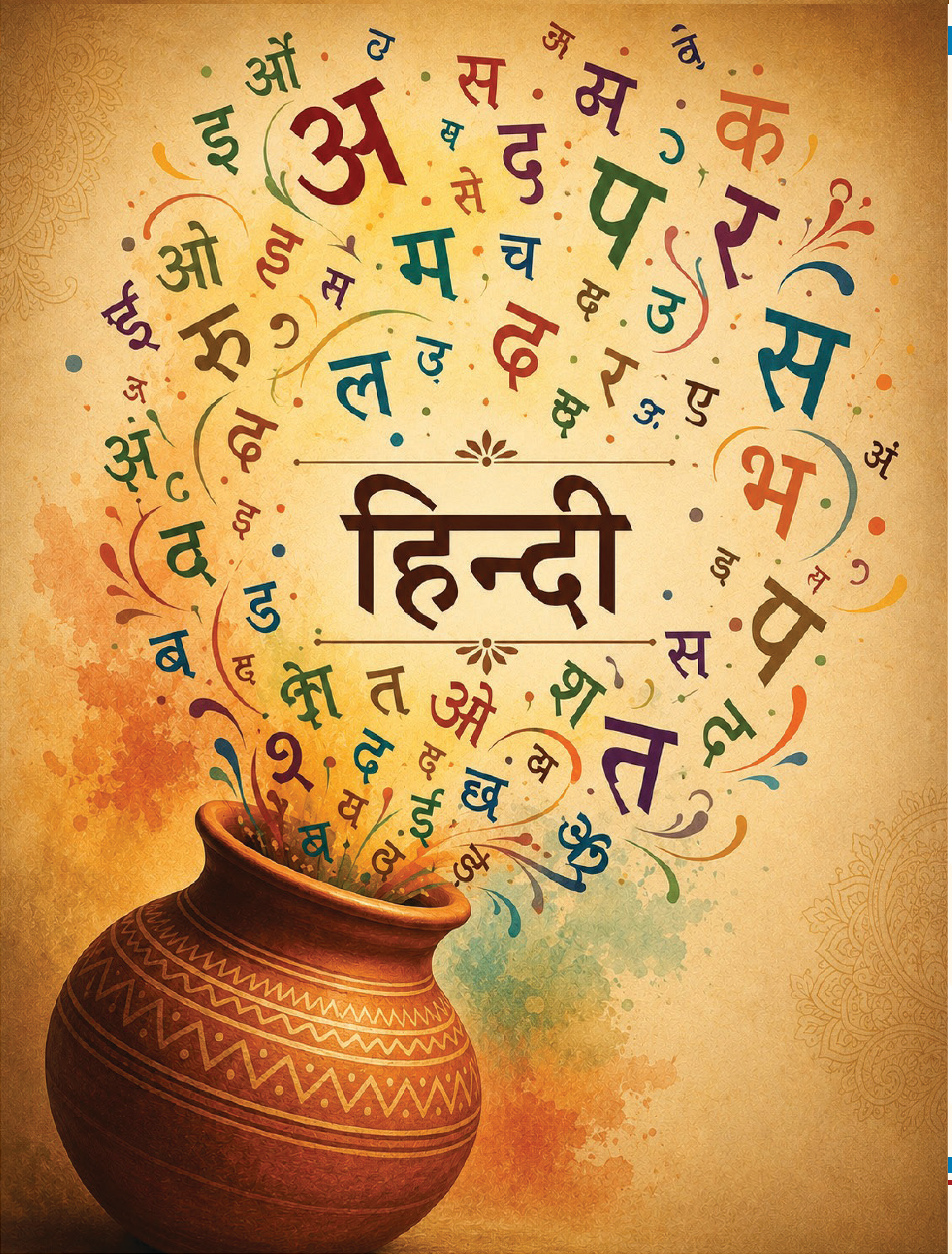
हिन्दी

बोतलबंद पानीः शुद्ध या सेहत के लिए ख़तरा ?

आज के दौर में बोतलबंद पानी को सेहत और शुद्धता की पहचान समझा जाता है। लोग अक्सर यह मानकर बोतलबंद पानी खरीदते हैं कि यह नल या टोंटी के पानी से ज़्यादा सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक है। चमकदार लेबल, हरे–भरे पहाड़ों की तस्वीरें और 'प्राकृतिक स्रोत' के दावे इस भ्रम को और मज़बूत करते हैं लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि 'मिनरल वॉटर' का दावा करने वाले बहुत कम ब्रांडों में ही खनिज होते हैं या वे प्राकृतिक स्रोतों से आते हैं, ज़्यादातर बोतलबंद पानी नल के पानी की तुलना में कोई विशेष लाभ नहीं देता। एक शोध के अनुसार दुनिया भर में बेचे जाने वाले बोतलबंद पानी का लगभग 64% वास्तव में सिर्फ़ शुद्ध किया गया नगरपालिका का पानी होता है—वही पानी जो आम तौर पर घरों की टोंटियों में आता है न केवल यह पानी सेहत के लिए कोई अतिरिक्त लाभ नहीं देता बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भी हो सकता है।

एक हैरान कर देने वाली खोज 2024 में कोलंबिया और रटगर्स विश्वविद्यालयों ने जारी की। इस शोध में एक लीटर बोतलबंद पानी में औसतन 2.4 लाख माइक्रो और नैनो प्लास्टिक कण पाए गए। यह कण ज़्यादातर उसी प्लास्टिक से बनते हैं जिससे बोतल तैयार होती है। ये प्लास्टिक कण बोतल के निर्माण, ढुलाई, रख–रखाव और उपयोग के दौरान उत्पन्न हो सकते हैं। वैज्ञानिक चेतावनी देते हैं कि ये सूक्ष्म कण प्लास्टिक में मौजूद अन्य ज़हरीले रसायनों के साथ मिलकर स्वास्थ्य के लिए ख़तरा बन सकते हैं। अधिक तापमान पर और लंबे समय तक रखी गई बोतलों में यह ख़तरा और बढ़ जाता है। ये सूक्ष्म कण और रसायन कई स्वास्थ्य विकारों जैसे हार्मोनल गड़बड़ी, जिगर और गुर्दे को नुक़सान, जनन विकार, दिमागी विकार और कई प्रकार के कैंसर का कारण बन सकते हैं।

बोतलबंद पानी सिर्फ़ सेहत ही नहीं, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था के लिए भी नुकसानदायक साबित होता है। एक प्लास्टिक बोतल बनाने के लिए लगभग तीन लीटर पानी की आवश्यकता पड़ती है और बड़ी मात्रा में कार्बन उत्सर्जन होता है। हर मिनट, दुनिया भर में 10 लाख प्लास्टिक की बोतलें खरीदी जाती हैं, लेकिन इनमें से लगभग 10% से भी कम प्लास्टिक बोतलें ही रिसायकल होती हैं। बाकी कूड़े के ढेरों, नदियों और समुद्रों में पहुँच जाती हैं, जिसके कारण हर साल 250 लाख टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। एक अनुमान के अनुसार ये बोतलें 450–500 साल तक भी नहीं गलतीं और प्लास्टिक के छोटे–छोटे टुकड़ों में बदलकर हमारे पर्यावरण का हिस्सा बन जाती हैं। आर्थिक रूप से भी बोतलबंद पानी एक महंगी पसंद है। यह नल के पानी से लगभग 2000 गुना प्रति गैलन महंगा पड़ता है और इसका ज़्यादातर ख़र्च पानी को शुद्ध करने पर नहीं बल्कि उसकी पैकेजिंग और ढुलाई पर लगता है।

आप पूछेंगे कि फिर किया क्या जाए? वैज्ञानिक मानते हैं कि घरेलू फ़िल्टर किया हुआ पानी सबसे बेहतर और सुरक्षित विकल्प है। घरों में लगे साधारण कार्बन फ़िल्टर भी पानी में मौजूद भारी धातुओं और कई ख़तरनाक रसायनों को निकालकर उसे पीने योग्य बना सकते हैं। आजकल तो ऐसे फ़िल्टर भी आने लगे हैं जो ज़रूरी खनिजों को पानी में मिलाकर उसकी गुणवत्ता बढ़ा देते हैं।

अगली बार जब आप बोतलबंद पानी के लिए हाथ बढ़ाएँ, एक बार ज़रूर सोचें—

आप क्या पी रहे हैं और इसकी असली कीमत क्या है?

डॉ. राजबीर सिंह गिल
उपनिदेशक (स्थापना)
भारतीय खेल प्राधिकरण, नेताजी सुभाष राष्ट्रीय खेल संस्थान, पटियाला

''संवेदना ही साहित्य की आत्मा है।''—महादेवी वर्मा

हिंदी और ई-टूल्स

आधुनिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने प्रशासनिक कार्यप्रणाली को नई गति और नई दिशा प्रदान की है। आज का युग डिजिटल युग है, जहाँ कार्य की दक्षता, पारदर्शिता और त्वरित निष्पादन के लिए ई–टूल्स की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। ऐसे परिवेश में राजभाषा हिंदी का तकनीक के साथ समन्वय न केवल आवश्यक है, बल्कि समय की मांग भी है। राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में ई–टूल्स एक सशक्त माध्यम हैं।

ई–टूल्स से अभिप्राय

ई–टूल्स से अभिप्राय उन इलेक्ट्रॉनिक साधनों एवं प्रणालियों से है, जिनके माध्यम से कार्यालयीन एवं प्रशासनिक कार्य कंप्यूटर, इंटरनेट तथा मोबाइल उपकरणों द्वारा संपन्न किए जाते हैं। ई–ऑफिस प्रणाली, ई–मेल, यूनिकोड आधारित टंकण, मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर, वाक्–से–पाठ एवं पाठ–से–वाक् तकनीक, मोबाइल एप्लीकेशन तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा उपकरण–ये सभी ई–टूल्स के अंतर्गत आते हैं।

डिजिटल युग में हिंदी की भूमिका

ई–टूल्स के प्रयोग से राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन अधिक प्रभावी हुआ है। समय की बचत, त्रुटियों में कमी, पारदर्शिता और कार्यकुशलता–सभी लाभ ई–टूल्स के कारण संभव हुए हैं। अब हिंदी केवल भावनाओं की भाषा नहीं, बल्कि प्रशासन, तकनीक और नवाचार की भाषा बन रही है। एक समय तक यह धारणा प्रचलित थी कि तकनीकी कार्य केवल अंग्रेज़ी भाषा में ही संभव हैं, किंतु वर्तमान परिदृश्य में यह धारणा परिवर्तित हो चुकी है। भारत सरकार की राजभाषा नीति, डिजिटल इंडिया कार्यक्रम तथा विभिन्न मंत्रालयों/कार्यालयों के प्रयासों से हिंदी अब तकनीक की मुख्यधारा में सशक्त रूप से स्थापित हो रही है। ई–ऑफिस प्रणाली के माध्यम से हिंदी में फाइलों का संचालन, टिप्पण लेखन तथा पत्राचार किया जाना इसका सशक्त उदाहरण है।

हिंदी ई–टूल्स की उपलब्धियाँ

हिंदी के तकनीकी विकास में यूनिकोड का योगदान उल्लेखनीय है। यूनिकोड ने हिंदी टंकण को सरल, मानकीकृत एवं सर्वसुलभ बनाया है। इसके अतिरिक्त, अनुवादिनी, भाषिणी, गूगल अनुवाद जैसे टूल्स ने हिंदी–अंग्रेज़ी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद को सहज बनाया है। वाक् पहचान तकनीक के माध्यम से हिंदी में बोलकर कार्य करने की सुविधा ने कार्यालयीन कार्यों को और अधिक सरल बनाया है। इन टूल्स ने न केवल कार्यालयीन कार्य को गति दी है, बल्कि आम नागरिक को भी डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ा है।

राजभाषा कार्यान्वयन में ई–टूल्स का योगदान

ई–टूल्स के प्रयोग से राजभाषा हिंदी के प्रयोग–प्रसार को नई दिशा मिली है। समय की बचत, कार्य की गुणवत्ता में वृद्धि, दस्तावेज़ों का सुरक्षित संधारण तथा त्वरित संप्रेषण–ये सभी ई–टूल्स के प्रत्यक्ष लाभ हैं। तकनीक के माध्यम से हिंदी अब केवल संवैधानिक दायित्व नहीं, बल्कि प्रशासन की कार्यकारी भाषा के रूप में सुदृढ़ हो रही है। इन टूल्स ने न केवल कार्यालयीन कार्य को गति दी है, बल्कि आम नागरिक को भी डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ा है।

चुनौतियाँ एवं अपेक्षाएँ

यद्यपि हिंदी ई–टूल्स के क्षेत्र में निरंतर प्रगति हो रही है, तथापि प्रशिक्षण की कमी, तकनीकी झिझक तथा मानसिकता में परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ अभी भी विद्यमान हैं। हिंदी में लिंग,वचन और आदरसूचक शब्दों की पहचान करने में जटिलता आती है। इन चुनौतियों से निपटने हेतु नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, सरल एवं उपयोगकर्ता–अनुकूल सॉफ्टवेयर तथा अधिकारियों–कर्मचारियों को प्रोत्साहन दिया जाना आवश्यक है।

निष्कर्ष

आज के युग में हिंदी और ई–टूल्स का संगम डिजिटल युग की आवश्यकता है। हिंदी तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाकर न केवल अपनी गरिमा बना रही है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। हिंदी और ई–टूल्स का समन्वय राजभाषा कार्यान्वयन को प्रभावी एवं व्यावहारिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। जब हिंदी तकनीक के माध्यम से प्रशासनिक कार्यों में सहज रूप से प्रयुक्त होती है, तब वह अपनी उपयोगिता और गरिमा दोनों को सुदृढ़ करती है। निःसंदेह, ई–टूल्स के सहयोग से हिंदी डिजिटल युग में एक सशक्त, सक्षम और समावेशी राजभाषा के रूप में निरंतर आगे बढ़ रही है।

आशा
उपनिदेशक (राजभाषा)
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

"हिंदी हमारी राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।" –सुमित्रानंदन पंत

वसंत-अवनि

श्वेत वसन अब तज दो अवनि, फिर नव मांग सजा लो।
आया है जो पुत्र मदन का, इस संग व्याह रचा लो।
वो पतझड़ तो चला गया, अब कब तक बाट निहारोगी।
सर्दी की सूती साड़ी में, कब तक उमर गुजारोगी।

ग्रहण करो ये प्रेम निवेदन, समय आज मुस्काया है।
हरियाली का जोड़ा लेकर, रतिसुत ब्याहने आया है।
राग बजाते विटप मरुत मिल, सब विहंग संग गान करें।
सरिता की कल–कल झर–झर ने मंगल गीत सुनाया है।

नक्षत्रों, शशि रश्मि ने ये मंडप सुवर सजाया है।
खद्योत अग्नि का होत्र बन ये व्याह कराने आया है।
दे आशीष युगल को व्योम वारि बरसाए।
सूर्य मधुर तप्त किरणों की रम्य भेंट दे जाए।

श्वेत रंग को तजकर फिर विविध रंग अपनाओगी।
कर श्रृंगार प्रकट हो जब वनिता बनकर आओगी।
छोटे–छोटे किसलय पल्लव आँगन में फिर आएंगे।
संग प्रसून नव कोपल मिलकर सूनी गोद सजाएँगे।

जीवन देकर हे शक्तिरूपिणी फिर जग जननी बन जाओ।
सबके कष्ट हरो हे अवनि, जग संताप मिटाओ।

नकुल पुनेठा
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
राजभाषा प्रभाग,
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

विजय नाद

तू घबराता क्यों है मात्र एक परिणाम से ?
अभी तेरा इम्तहान जारी है !
ये तो बस ज़रिया है एक;
तेरे आत्मबल को तोड़ने का,
तेरे गहन मन को झकझोरने का।

डरा है क्या तू कभी
किसी आने वाले परिणाम से,
या समय की मार से?

मूँद कर आँखें अब एक बार,
अस्तित्व में तू ज़रा अपने तो झांक !
तू तो इस परपंची समय से पंजे लड़ाता है,
उपद्रवी उफ़ानों तले तरणि पार लगाता है,
प्रयासों के पुल से पथ सदैव ही बनाता है,
क्यों फिर एक मात से मन के दीप बुझाता है?

ज़रा सब्र तो कर,
पल भर स्वयं को थाम;
रख समय पर विश्वास;
और मन को भेंट दे—धैर्य अपार!

ये खेल अभी बाकी है !
समय तो चलता रहेगा चाल,
तेरे जंग—ए—कामयाबी में
हिम्मत तेरी सखी साथी है।
कोशिशें ही तेरा समग्र "हासिल" हैं !
तमाम जीत के तू काबिल है।

प्रियंका
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
राजभाषा प्रभाग,
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

"हिंदी के ऊपर आघात पहुँचाना हमारे प्राणधर्म पर आघात पहुँचाना है।" — जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

एक अनुशासित कर्मचारी

अनुशासन किसी भी संगठन की सफलता की आधारशिला है, और एक अनुशासित कर्मचारी उस संगठन की सबसे बड़ी पूँजी होता है। वह संगठन की गरिमा, प्रतिष्ठा और परंपराओं का संवाहक होता है। अनुशासित कर्मचारी का आचरण, व्यवहार और कार्यशैली केवल व्यक्तिगत नहीं होती, बल्कि उससे पूरे संगठन की छवि प्रतिबिंबित होती है। अनुशासित कर्मचारी न केवल अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करता है, बल्कि अपने आचरण, व्यवहार और कार्यशैली से पूरे कार्यस्थल के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। अतः उसमे यह अपेक्षा की जाती है कि वह हर परिस्थिति में नियमों, प्रक्रियाओं और आदेशों का अक्षरशः पालन करे तथा अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी और साहस से करे।

एक अनुशासित कर्मचारी अपने व्यक्तिगत जीवन में भी संयम, मर्यादा और उच्च नैतिक मूल्यों का पालन करता है। वह अपने 'सभ्य' आचरण से समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है तथा युवाओं को प्रेरित करता है। उसका जीवन सेवा, त्याग और समर्पण का प्रतीक होता है। एक अनुशासित कर्मचारी सदैव ध्यान में रखता है कि हमारी भारतीय सभ्यता, संस्कृति, संस्कार व परंपराएं विश्व में श्रेष्ठतम हैं और इनकी जड़ें हमारे मानव पटल पर जितनी गहरी अंकित होंगी उतने ही हम सभ्य व अनुशासित कहलाने के अधिकारी होंगे और भारत सरकार के "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" के मिशन में यथेष्ट योगदान दे पाएंगे।

एक अनुशासित कर्मचारी समयपालन का विशेष ध्यान रखता है। वह कार्यालय समय पर उपस्थित होकर अपने कार्यों की योजना बनाता है और उन्हें समय–सीमा के भीतर पूर्ण करने का प्रयास करता है। उसकी कार्यशैली में स्पष्टता, सुव्यवस्था और निरंतरता होती है। वह नियमों, प्रक्रियाओं और कार्यालयीन मर्यादाओं का पूर्ण सम्मान करता है।

अनुशासित कर्मचारी अपने वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशों का पालन करता है तथा सहकर्मियों के साथ सहयोगात्मक एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार करता है। वह एकात्मक प्रवृत्ति से दूर रहता है। वह टीम भावना के साथ कार्य करता है। वह यह ठीक प्रकार से जानता है कि टीम भावना से कार्य करके ही किसी संगठन या संस्था को शिखर की सफलता दिलाई जा सकती है। वह कठिन चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी कर्तव्य पथ पर अडिग रहते हुए संयम, धैर्य एवं सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखता है। उसकी कार्यनिष्ठा एवं ईमानदारी संगठन के प्रति उसकी प्रतिबद्धता व सच्चे अनुशासन को दर्शाती है।

एक अनुशासित कर्मचारी अपने ज्ञान एवं कौशल को निरंतर विकसित करता रहता है। वह नवीन तकनीकों, प्रक्रियाओं और नीतियों को सीखने के लिए सदैव तत्पर रहता है, जिससे उसकी कार्यक्षमता और गुणवत्ता में वृद्धि होती है। वह अपने दायित्वों को बोझ न समझकर सेवा के अवसर के रूप में स्वीकार करता है। वह सेवा रूपी धर्म की श्रेष्ठतम आभूषण अवधारणा को ध्यान में रखते हुए निस्वार्थ सेवा के पथ का अनुसरण करता है।

एक अनुशासित कर्मचारी संगठन की रीढ़ होता है। उसमें उपरोक्त वर्णित गुणों के अतिरिक्त निम्न मूलभूत प्रमुख गुण होना आवश्यक हैं:–

1. एक अनुशासित कर्मचारी में कार्य करने की ललक व उत्सुकता होनी चाहिए। उगे ध्यानस्थ रखना होगा कि एक अच्छे व कर्मठ कर्मचारी को प्रचार की आवश्यकता नहीं है क्योंकि "कथनी से ज्यादा करनी मायने रखती है"।

इसलिए उसे उद्देश्य प्राप्ति के प्रति गंभीर, संवेदनशील, समर्पित तथा निष्ठा के गुणों में योग्य होकर अपने शाश्वत स्वरूप को पहचानना होगा।

2. एक अनुशासित कर्मचारी को अपने दायित्वों का निर्वहन करते समय तटस्थ तथा समान सेवा के आदेशों के प्रति प्रतिबद्ध भी होना चाहिए। उसमें निष्पक्षता का गुण प्रचूर मात्रा में होना चाहिए। उसे अपने विवेक का श्रेष्ठतम उपयोग करते हुए निर्भीक तथा पक्षपात रहित होकर कार्यों का निष्पादन करना चाहिए। उसे अपने सहयोगियों तथा अधीनस्थों के प्रति समदर्शी होना चाहिए।

3. एक अनुशासित कर्मचारी को यह ध्यान में रखना होगा कि भौतिक ईमानदारी प्रत्येक कर्मचारी की आधारभूत अर्हता है। इसलिए उसे अपने कार्य–निष्पादन में सदैव "ईमानदारी ही सबसे सर्वोत्तम नीति है"–इन वचनों का अनुसरण करना चाहिए जिसका अर्थ है कि जीवन में झूठ बोलने के बजाय हमेशा सच बोलना और ईमानदार रहना ही सबसे अच्छा और भरोसेमंद तरीका है। उसे चरित्रवान बनने के लिए अपनी वाणी, अपने विचारों तथा अपने कार्यों को एक सूत्र में पिरोकर रखना है।

4. एक अनुशासित कर्मचारी की कार्य पद्धति पारदर्शी तथा सृजनात्मक होनी चाहिए। उसमें मौलिकता का अंश होना चाहिए तथा दिखावा लेशमात्र भी नहीं होना चाहिए। उसे दृढ़ किंतु विनम्र होना चाहिए। उसे संवेदनशील होना चाहिए किंतु उसमें सस्ती लोकप्रियता का भाव कदापि नहीं होना चाहिए। उसके द्वारा किए जा रहे कार्यों में दूरदृष्टि का उपयोग होना चाहिए। उसे अपने कार्य में पूर्णता लाने का प्रयास करना चाहिए।

5. एक अनुशासित कर्मचारी अपने व्यवहार व आचरण में निष्कपट होना चाहिए। उसे "अहं" की भावना को शरण नहीं देनी चाहिए। उसे श्रमसाधक और संपूर्ण होने के साथ–साथ सज्जनता व भद्रता के गुणों से भी युक्त होना चाहिए। उसे एक विचारवान मानव बनना होगा। एक अच्छा व नेक इंसान बनना होगा।

6. एक अनुशासित कर्मचारी को यह स्मरण रखना चाहिए कि उसका प्रत्येक कदम, प्रत्येक निर्णय और प्रत्येक व्यवहार संगठन की प्रतिष्ठा से जुड़ा होता है। इसलिए उसे व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर संगठनात्मक दायित्वों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अनुशासन केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि आत्मनियंत्रण, सेवा–भावना और राष्ट्र के प्रति अटूट समर्पण का नाम है। इसलिए एक अनुशासित संगठन में कार्यरत कर्मचारी से अधिक अनुशासन की अपेक्षा केवल औपचारिक दायित्व नहीं बल्कि संगठन की आवश्यकता और राष्ट्रहित की अनिवार्यता है। ऐसे अनुशासित, कर्मठ, ऊर्जावान और समर्पित कर्मचारी ही संगठन की सुदृढ़ता, विश्वसनीयता और गौरवशाली परंपराओं को जीवंत रखते हुए देश–सेवा में अपना अमूल्य योगदान देते हैं।

सुरेन्द्र पाल सिंह
सहायक कमांडेण्ट (राजभाषा)
द्रुत कार्य बल सेक्टर

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।" – राजेन्द्र प्रसाद

कुएँ का मेंढ़क

मैं कुएँ का मेंढ़क हूँ
मेरा कुआँ छोटा है
इतना छोटा कि मैं कुएँ से एक छलाँग मार बाहर आ जाता हूँ
वापस भी चला जाता हूँ उसी कुएँ में
दिन में उछल–उछल फाँदता सरहदें कई
पता नहीं क्यों शाम को खुद को कुएँ में पाता मैं
करता बड़ी–बड़ी बातें बिन सिर पाँव की
सर से सोचा नहीं
अमल कर उन पर चला नहीं, ऐसी बातें
हैश टैग(#) लगा, इंस्टा स्टोरी में डाल, रैली में विरोध करता हूँ मैं
और शाम को लौट घर पोस्टरों को कूड़े में फेंक देता
दिन भर नदियों में तैर, ढलता सूरज देख
शाम को फिर कुएँ में आ जाता मैं
कुएँ का मेंढ़क हूँ मैं
पर एक प्रयास प्रयासरत है कि
जब भी लौटता कुएँ में, हर बार एक छोटा पत्थर मुंह में रख लाता साथ
उन पत्थरों से धीरे–धीरे कुआँ भर रहा है
एक दिन कुआँ समतल हो जाएगा वास्तविकता से
उस दिन लौटने के लिए मेरे पास कुआँ नहीं होगा
मैं सिर्फ एक मेंढ़क हूँगा
अभी मैं हूँ कुएँ का मेंढ़क
ये क्या मैं–मैं लगा रखा है?
बकरी हो क्या?
माफ़ कीजिएगा
मैं हम और अपने हैं
अब मैं चलता हूँ
अब वक्त हो गया है वापस कुएँ में जाने का
यह कविता आज का मुँह में रखा हुआ पत्थर है।

आशीष सिंह गरखाल 'बकैत'
प्रवर श्रेणी लिपिक
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी

अकेला चना

''कोई व्यक्ति अकेले दुनिया नहीं बदल सकता, लेकिन वह पानी में एक पत्थर फेंककर अनेक लहरें उत्पन्न कर सकता है।''

कल्पना कीजिए शरीर से दुबला–पतला लेकिन दृढ़ इच्छा–शक्ति वाला एक व्यक्ति, जो चिलचिलाती धूप में श्रम करता है, तेज बारिश को सहता है और ठिठुरती ठंड में भी खड़ा रहता है। उसका शरीर ही उसकी पूंजी एवं इच्छा–शक्ति व दृढ़ संकल्प उसका ईंधन है।

बिहार के वजीरगंज जैसे छोटे से गाँव को निकटवर्ती शहर से जोड़ने के लिए उस व्यक्ति ने लगातार 22 वर्षों तक कठिन परिश्रम से अकेले एक पहाड़ को काटकर मार्ग बनाया। आज उस सड़क की शान बढ़ाती दशरथ मांझी की प्रतिमा उनके अदम्य साहस एवं संघर्ष की गवाही देती है, जिनके दृढ़ निश्चय ने इतिहास में स्थायी लहरें पैदा कीं। कहा जाता है कि कोई व्यक्ति अकेले दुनिया नहीं बदल सकता, लेकिन लोग यह भूल जाते हैं कि छोटी–छोटी बूंदों से ही महासागर बनता है।

हमारा इतिहास ऐसे ही लोगों की कहानियों से भरा है, जिन्होंने अपने विचारों, दृष्टिकोण और कर्मों से मानवता की धारा में तरंगें उत्पन्न कीं।

आज जिन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साहित्यिक और वैज्ञानिक व्यवस्थाओं को हम स्वाभाविक मानते हैं, वे इसलिए संभव हो सकीं क्योंकि किसी स्थापित मान्यताओं को चुनौती देने वाली चिड़िया ने अपने पंख फड़फड़ाने का साहस किया।

जो कार्य प्रारंभ में छोटा प्रतीत होता है, वही आगे चलकर अत्यंत महान परिवर्तन का कारण बनता है–इसे ही 'बटरफ्लाई इफेक्ट' कहा जाता है।

सुकरात : प्रथम अपरंपरावाद

''एक अनपेक्षित जीवन जीने योग्य नहीं है।''

यह विचार समय से परे है, किंतु इसके प्रवर्तक स्वयं जेल में बंद थे। तर्कशील चिंतन, युवाओं को सत्ता पर प्रश्न उठाने के लिए प्रेरित करना और प्रचलित विश्वासों को चुनौती देना उनका अपराध था।

सत्ता को सत्य प्रिय नहीं होता। इसलिए उन्हें विषपान कराया गया, किंतु उनके विचारों को मारा नहीं जा सका।

उनके विचारों से उत्पन्न लहरें प्लेटो तक पहुँचीं और प्लेटो से अरस्तू तक, जो आज भी मानव चिंतन को दिशा दे रही हैं। एक व्यक्ति, एक पत्थर–जिसने न केवल लहरें उत्पन्न कीं, बल्कि वास्तव में दुनिया को बदल दिया।

''शक्ति और क्षमा दोनों का संतुलन ही मानवता है।''–रामधारी सिंह दिनकर

राजा के 'दैवी अधिकार' को चुनौती

17वीं शताब्दी के यूरोप में राजतंत्र और दैवी अधिकार शासन का आधार थे। इसी समय थॉमस हॉब्स ने अपने सामाजिक अनुबंध सिद्धांत के माध्यम से राजा को जनता के प्रति उत्तरदायी ठहराया। उन्हें जान बचाने के लिए देश छोड़ना पड़ा, लेकिन उनके विचारों ने लोकतंत्र की नींव रखी—ऐसी व्यवस्था जिसमें शक्ति जनता की सहमति से आती है और जनता के हित में प्रयुक्त होती है।

इतिहास में ऐसे कई साहसिक उदाहरण दर्ज हैं, जिन्होंने अपने चिंतन से सीधे—सीधे सत्ता को चुनौती दी और बदलाव की नींव रखी। रोजा पार्क्स ने बस में अपनी सीट न छोड़कर नस्लभेद को चुनौती दी।

डॉ. भीमराव अंबेडकर ने जाति व्यवस्था के विरुद्ध वैचारिक और संवैधानिक संघर्ष का नेतृत्व किया। इन्होंने अन्याय को अस्वीकार कर समाज में बदलाव की लहरें उत्पन्न कीं।

आइंस्टीन : ''अपरंपरागत चिंतकों में भी सबसे अधिक अपरंपरागत''

न्यूटन के सिद्धांतों को भौतिकी में अंतिम सत्य मान लिया गया था। न्यूटन का विश्वास था कि प्रकाश 'ईथर' नामक माध्यम के कारण निर्वात में यात्रा करता है। जब प्रयोगों ने ईथर के अस्तित्व को नकारा, तब भी वैज्ञानिक समुदाय न्यूटन का खंडन करने से डरता रहा और प्रयोगों को ही दोषपूर्ण मान लिया।

लगभग 300—400 वर्ष बाद आइंस्टीन ने समय की सच्चाई को समझा और इस भ्रम को तोड़ा। उन्होंने सापेक्षता का सिद्धांत प्रस्तुत किया और मानव जाति की ब्रह्मांड संबंधी समझ में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। यह सब असहमति जताने के सरल किंतु साहसिक निर्णय के कारण संभव हुआ।

रोजमर्रा की लहरें

परिवर्तन केवल महान व्यक्तियों से नहीं आता। सामान्य लोग भी अपने दैनिक कर्तव्यों के माध्यम से लहरें उत्पन्न करते हैं। आप और मैं जो रोज़मर्रा की छोटी—छोटी तरंगें पैदा करते हैं, वे अक्सर बिना कोई बदलाव लाने की योजना के होती हैं। जब हम अपना काम ईमानदारी से करते हैं, तो हम ऐसे क्रम और व्यवस्था पैदा करते हैं, जिनके बारे में हम स्वयं भी स्पष्ट रूप से नहीं सोचते।

उदाहरण के लिए, एक ईमानदार पुलिसकर्मी कानून—व्यवस्था बनाए रखता है। यह व्यापार को फलने—फूलने देता है, रोज़गार पैदा करता है और लोगों को भोजन, शिक्षा तथा सम्मानजनक जीवन प्रदान करता है। अर्थात् व्यवस्था की विशाल मशीनरी में एक छोटा—सा पहिया भी अपना कर्तव्य निभाकर बड़ा परिवर्तन ला सकता है।

दशरथ मांझी : व्यक्तिगत पीड़ा से सामाजिक परिवर्तन

दशरथ मांझी ने अकेले ही स्वयं को इस कार्य के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने पहाड़ काटकर सड़क बनाई, क्योंकि एक दुर्घटना के बाद समय पर अस्पताल न पहुँच पाने के कारण उन्होंने अपनी पत्नी को खो दिया था। उनकी प्रेरणा प्रेम थी, लेकिन उस प्रेम से अनेक व्यापक हित सध गए।

इस सड़क ने गाँव को कस्बे से जोड़ा, बाजार विखंडन कम किया, ग्रामीणों को अस्पताल तक शीघ्र पहुँचने में मदद की और रोज़गार के अवसर भी उत्पन्न किए।

यह दर्शाता है कि एक व्यक्ति द्वारा प्रेम और कर्तव्य से किया गया कार्य समाज के लिए बहुआयामी लाभ उत्पन्न कर सकता है।

भारत : सतत प्रवाह की सभ्यता

भारत की कहानी भी ऐसी ही तरंगों से आकार लेती रही है। कलिंग युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने हिंसा का त्याग कर, धर्म और शांति का मार्ग अपनाया।

इसी प्रकार एक साधारण दिखने वाले व्यक्ति ने सत्य और अहिंसा को हथियार बनाकर शक्तिशाली अंग्रेजी साम्राज्य को चुनौती दी।

एक व्यक्ति ने नर्मदा बचाओ आंदोलन के माध्यम से सामाजिक–पर्यावरणीय चेतना जगाई।

केसरिया वस्त्र और पगड़ी धारण किए एक संन्यासी ने शिकागो में ''मेरे प्रिय भाइयों और बहनों'' कहकर विश्व को मंत्रमुग्ध कर दिया।

निष्कर्ष

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कोई व्यक्ति अकेले दुनिया नहीं बदल सकता, लेकिन यदि वह सही कार्य कर रहा है, तो वह कभी अकेला नहीं होता।

जैसा कि मुण्डक उपनिषद कहता है–'सत्यमेव जयते'' अर्थात सत्य को किसी की आवश्यकता नहीं होती; सत्य स्वयं विजयी होता है।

इसलिए सबसे अंधकारमय समय में भी मनुष्य के साथ सत्य होता है–और यही सत्य दुनिया बदलने के लिए पर्याप्त है।

आकाश
सहायक निदेशक,
भारतीय खेल प्राधिकरण, क्षेत्रीय केंद्र,
कोलकाता

''भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, संस्कृति की वाहक भी है।''–हजारी प्रसाद द्विवेदी

नागालैंड

भारत देश का अद्भुत राज्य नागालैंड है नाम,
पूर्वोत्तर पर राज करता अनुपम सुंदरता का धाम।

नागा समुदाय है बसता यहाँ
प्राकृतिक सौंदर्य यहाँ का खास,
जीव–जंतुओं की समृद्ध विविधता
यहाँ का गौरवशाली इतिहास।

अनेकता में एकता का है यहाँ पर वास,
16 विभिन्न जनजातियाँ करती यहाँ निवास।

11 जिलों वाला राज्य अंग्रेजी है भाषा,
ईसाई धर्म को मानने वाले रहते यही है खास।

सारामति है यहाँ की सबसे ऊंची चोटी,
वनस्पति की समृद्ध विविधता यहाँ पर होती।

सन् उन्नीस सौ तिरसठ में
हुआ भारत को प्राप्त,
16वें राज्य के रूप में
शुरू हुआ विकास।

सेरनिसो रोंगपिपी,
ताइक्वांडो खिलाड़ी
भारतीय खेल प्राधिकरण (राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र, गुवाहाटी)

भारतीय खेल प्राधिकरण खेल प्रशिक्षण केंद्रः आशा की एक किरण

विश्वास, जुड़ाव और संस्कृति का संगम

खेल प्रशिक्षण केंद्र हैदराबाद में ज़मीनी स्तर पर काम करना मेरे लिए केवल एक प्रशासनिक दायित्व नहीं, बल्कि एक मानवीय यात्रा रही। उत्तर भारत से आकर दक्षिण भारत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में काम करना चुनौतीपूर्ण था, पर यही विविधता इस प्रशिक्षण केंद्र की सबसे बड़ी ताकत है। खिलाड़ियों से विश्वास का रिश्ता बनाने के लिए मैंने तेलुगु सीखना शुरू किया—यह केवल भाषा सीखना नहीं था, बल्कि उत्तर और दक्षिण की संस्कृति के बीच सेतु बनाना था, जो राष्ट्रीय एकता की भावना को भी मजबूत करता है।

खिलाड़ियों और अधिकारियों का एक साथ मैस में भोजन करना, सुबह मैदान में साथ मौजूद रहना, कभी दौड़ में शामिल होना—इन छोटे प्रयासों ने खिलाड़ियों को खुलकर बात करने का भरोसा दिया। मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक चिंताएँ, खेल से इतर मुद्दे—जो अक्सर अनदेखे रह जाते हैं—उन पर खुली चर्चा संभव हो सकी। एक अधिकारी के रूप में मेरी भूमिका केवल प्रशासक की नहीं, बल्कि अभिभावक और संरक्षक की भी रही। यहाँ तक कि वैलेंटाइन डे जैसे दिन पर सभी कोचों और मल्टी–टास्किंग स्टाफ को एक गुलाब देकर सम्मानित किया गया, ताकि हर व्यक्ति अपने योगदान पर गर्व महसूस करे। इसी सहभागितापूर्ण और लोकतांत्रिक माहौल का सकारात्मक प्रभाव खिलाड़ियों के प्रदर्शन में भी धीरे–धीरे दिखने लगा।

सीमित संसाधनों में अवसर तलाशना

चुनौतियाँ कई थीं—पोषण की कमी, खेल विज्ञान सुविधाओं का अभाव और आधारभूत ढांचे की सीमाएँ। कई बार खिलाड़ियों को हॉकी टर्फ पर स्प्रिंकलर न होने के कारण स्वयं पानी डालना पड़ता था, या आइस थेरेपी के लिए बर्फ़ के टब का सहारा लेना पड़ता था। यह स्थिति राज्य और केंद्र के बीच ज़मीनी स्तर पर समन्वय की कमी को भी दर्शाती थी।

फिर भी, सीमित संसाधनों में अवसर खोजने का प्रयास लगातार किया गया। आंतरिक प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों को प्रोटीन और पोषण की पूर्ति से जोड़ा गया। एनजीओ के सहयोग से ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित की गई। 'हिंदी पखवाड़ा' जैसे कार्यक्रम केवल सांस्कृतिक नहीं, बल्कि प्रोत्साहन के माध्यम बने। वरिष्ठ अधिकारियों को नियमित रूप से स्थिति से अवगत कराया गया, जिसके परिणामस्वरूप राज्य के सहयोग से 21 वर्ष पुराने हॉकी टर्फ के पूर्ण नवीनीकरण की प्रक्रिया शुरू हुई—जिससे पूरे केंद्र में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ। इन परिस्थितियों में नेतृत्व का अर्थ केवल निर्णय लेना नहीं, बल्कि धैर्य, समन्वय और निरंतर संवाद बन गया।

"वाणी में वह शक्ति है जो मनुष्य के हृदय को जीत सकती है।"—महादेवी वर्मा

आशा, संघर्ष और प्रेरणा का संदेश

सरकारी प्रक्रियाओं की धीमी गति के बावजूद, खेल प्रशिक्षण केंद्र में उम्मीद कभी खत्म नहीं हुई। कोच दिन–रात मेहनत करते रहे, खिलाड़ी हर सुबह संघर्ष के साथ उठते रहे; कभी–कभी अभ्यास के लिए राज्य स्तर पर अनुमति प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण होता था, पर समन्वय और प्रयासों से इन समस्याओं का समाधान सुनिश्चित किया गया।

मेरे कार्यकाल के दौरान माननीय केंद्रीय खेल मंत्री श्री मनसुख मांडविया जी का खेल प्रशिक्षण केंद्र हैदराबाद दौरा भी हुआ। उन्होंने सुविधाओं का अवलोकन किया, खिलाड़ियों से संवाद किया और उनके समर्पण की सराहना की। खिलाड़ियों की भागीदारी और ऊर्जा देखकर वे विशेष रूप से प्रसन्न थे। इस अवसर पर जिम, रिकवरी प्रशिक्षण और खेल विज्ञान जैसी आवश्यकताओं को भी उनके समक्ष रखा गया–जिससे भविष्य की दिशा और स्पष्ट हुई।

भारतीय खेल प्राधिकरण खेल प्रशिक्षण केंद्रः जड़ों से वैश्विक मंच तक

भारतीय खेल प्राधिकरण खेल प्रशिक्षण केंद्र केवल अभ्यास का स्थान नहीं, बल्कि उन सपनों की प्रयोगशाला है, जहाँ ग्रामीण और सुदूर क्षेत्रों से आए बच्चे स्वयं को एक खिलाड़ी के रूप में पहचान पाते हैं। यही वह मंच है जहाँ जड़ों से निकलकर वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ी गढ़े जाते हैं–चाहे वह मोहित चौधरी हों, दीप्ति जीवनजी हों या ऐसे अनेक नाम, जो भविष्य में देश का गौरव बनेंगे।

खेल प्रशिक्षण केंद्र वास्तव में आशा की वह किरण है, जो संघर्षरत प्रतिभाओं को दिशा, साहस और पहचान देती है–और यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

निशा विध्यार्थी
सहायक निदेशक, फिट इंडिया
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)
(खेल प्रशिक्षण केंद्र, हैदराबाद में पदस्थापनाः
6 अक्टूबर 2023 से 27 सितंबर 2025 –2 वर्ष)

ये आँखें

दूसरों का इस्तकबाल करती है ये आँखें।
कभी दर्द, कभी खुशी बयान करती है ये आँखें।।
दुनिया सच है या झूठ, कोई नहीं जानता,
पर जो ये दिखाती है, वही सच मानती है ये आँखें।।

जाने कितने रिश्तों को बटोरे हुए,
जाने कितने टूटे दिलों को समेटे हुए।
कही एक उल्लास, तो कही एक उदासी सी
कही एक प्यास, तो कही एक खामोशी सी ।।

अंधेरी गुफा के जैसे, एक गहरे समुंदर के जैसे,
कभी शांत विशाल आसमान के जैसे,

तो कभी बारिश की पहली फूहार के जैसे,
कभी खुशी में तो, कभी गम में,
तारों की तरह झिलमिला जाती है ये आँखें ।।

कभी प्यार में कभी टकरार में,
कभी जीत में तो कभी हार में,
छलक कर, मुस्कुरा कर,
हँस कर गुनगुना कर
कुछ नहीं सब कुछ बयान कर देती है ये आँखें

एक बंद किताब के जैसे,
कभी एक अंधेरे कमरे के जैसे।
कितना कुछ लिखा है,
कितना कुछ छुपा है, इन आँखों में, दो आँखों में।।

अब और क्या कहूं बस इतना समझ लीजिए,
किसी की मिल्कियत नहीं है ये आँखें,
बस इस कुदरत का खूबसूरत उपहार है ये आँखें,
उस ईश्वर की बेमिसाल रचना है ये आँखें, दो आँखें।।

आस्था अग्रवाल
सहायक निदेशक, हस्तशिल्प
उपायुक्त हस्तशिल्प कार्यालय
नई दिल्ली

"साहित्य जीवन की जटिलताओं को समझने की कला है।"–उदय प्रकाश

स्वस्थ जीवन के लिए योग और खेलों की भूमिका

खेल हमारे आत्मविश्वास तथा मानवीय मूल्यों को बढ़ाता है। खेल ही जीवन है।

संदर्भः स्वस्थ जीवन के लिए योग और खेलों की भूमिका का तात्पर्य है कि खेल मानव जीवन के लिए कितना महत्वपूर्ण है न केवल शारीरिक रूप से बल्कि बौद्धिक, नैतिक, मानसिक रूप से भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रसंगः इस विषय से हमें ज्ञात होता है कि खेल मानव जीवन तथा स्वस्थ जीवन के लिए कितना अधिक प्रभावी है तथा स्वस्थ जीवन, स्वस्थ शरीर के लिए हमें खेल खेलना चाहिए।

निबंधः स्वस्थ जीवन तथा स्वस्थ शरीर हेतु खेल मानव जीवन पर गहरा असर डालता है। खेल का हमारे जीवन में अद्वितीय महत्व है। खेल हमारी शारीरिक और मानसिक स्थिति को मजबूत करने एक अनोखा माध्यम है। खेल एक महान सामाजिक संगठन है जो लोगों को एक–दूसरे से जोड़कर रखता है। खेल ही एक ऐसा अभिन्न अंग है जो देश के लोगों के बीच के आपसी मतभेद को नष्ट करता है तथा एकता की भावना को जागृत करता है। खेल पर चर्चा करते हुए हम आगे की ओर बढ़ते हैं। खेल मानव जीवन के स्वास्थ्य के लिए एक अहम भूमिका निभाता है। खेल के माध्यम से ही मानव शरीर में रक्त परिसंचरण होता है, हृदय मजबूत होता है तथा खेल के द्वारा ही मानव शरीर की हड्डियाँ मजबूत होती हैं। खेल हमारे स्वस्थ शरीर के विकास के लिए, मनोवैज्ञानिक विकास तथा सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण उपाय है। खेल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के साथ–साथ हमारे मानसिक विकास तथा वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक विकास को बढ़ाने में सहायता प्रदान करता हैं। खेल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है तथा हमें ऊर्जा प्रदान करता है। खेल खेलने से हमारी श्वसन नली ठीक प्रकार से चलती है जिससे हमें श्वास लेने में किसी प्रकार की परेशानी न हो। खेल न केवल हमारे शारीरिक विकास को प्रबल बनाता है बल्कि हमारे नैतिक गुणों का भी विकास करता है। खेल हमारे मस्तिष्क को शक्तिशाली बनाता है तथा हमें मानवता के गुणों की ओर अग्रसर करता है। मैं अपने शब्दों को स्पष्ट करते हुए उदाहरण देना चाहूंगी कि जैसे हमारे भारत देश के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी, ओलंपिक विजेता, भाला फेंक के दिग्गज खिलाड़ी नीरज चोपड़ा जी न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं बल्कि एक खिलाड़ी होने के साथ–साथ एक अच्छे इंसान भी हैं, मानवीय गुणों से ओतप्रोत हैं, जो जमीन से जुड़े हुए हैं। खेल ही हमें बड़ों का आदर–सम्मान करना, अपने से छोटों को अच्छा ज्ञान देना सिखाता है तथा सदैव दूसरों की सहायता करना सिखाता है। खेल ही एक–दूसरे से जोड़कर रखता है जो हमें टीम वर्क सिखाता है। खेल हमें नियम और संयम की महत्वपूर्ण शिक्षा भी प्रदान करता है। जब हम खेल में भाग लेते हैं तो हमें पारस्परिक और नियमितता का पालन करना चाहिए। खेल हमें अनुशासन में रहना सिखाता है तथा समय के महत्व के बारे में भी सिखाता है। खेल हमारे भीतर धैर्य, संयम तथा नैतिक मूल्यों को विकसित करता है। खेल के बिना हमारा जीवन अधूरा माना जाता है। खेल से हमारे शरीर को मज़बूती मिलती है तथा मानसिक तनाव भी कम होता है और हम सामूहिक जीवन का आनंद ले सकते हैं। खेल खेलने से हमारे शरीर को ऊर्जा मिलती है तथा हमारा मस्तिष्क ऊर्जावान होता जाता है जिससे मानव जीवन के जितने भी तनाव हैं वह खत्म होते जाते हैं। खेल हमारी शारीरिक वृद्धि को प्रबल बनाता है और हमें संघर्ष के साथ–साथ सशक्त व्यवहार करने का अवसर प्रदान करता है। खेल पर आगे विचार करते हुए हम शारीरिक स्वास्थ्य पर बात करेंगे। हमारे फिजियोथेरेपी उपकरण से हमें अपनी शारीरिक क्षमता को पुनः प्राप्त करना है। यह हमारे हृदय को मजबूत बनाता है। रक्त परिसंचरण को पुनः प्राप्त करता है और रोग को कम करता है। खेल खेलने से हमारे शरीर की मांसपेशियां मजबूत होती हैं, हड्डियाँ मजबूत होती हैं तथा हमारा ऊर्जा स्तर बढ़ता रहता है। खेल ही है जो मनुष्य को निरोगी काया प्रदान करता है। वह कहावत तो आपने सुनी होगी :–

स्वस्थ जीवन निरोगी काया

अर्थात् हमारा शरीर स्वास्थ्य तभी रहेगा जब हम स्वयं को खेल से जोड़ेंगे। खेल हमें प्रेरणा देता है। यदि हमारा शरीर स्वस्थ रहेगा तो हमें किसी भी प्रकार का रोग नहीं होगा। जैसे कि हमारे भारतीय क्रिकेटर युवराज सिंह जी, जिन्हें कैंसर रोग था, किंतु उन्होंने कभी हार नहीं मानी तथा धैर्य का परिचय देते हुए वे मैदान में फिर से उतरे तथा भारत को जीत दिलाई। यदि वह यह सोच लेते कि उनका जीवन व्यर्थ है, वह कभी खेल नहीं पाएंगे तो वह अपने जीवन में कभी आगे नहीं बढ़ पाते। देश की युवा पीढ़ी के लिए उदाहरण नहीं बन पाते। युवराज सिंह जी भारत की युवा पीढ़ी के लिए एक उदाहरण बनकर निखरे हैं कि परिस्थिति कुछ भी हो किंतु जो सपने हमने देखे हैं, उन्हें संघर्ष करते हुए, हर परिस्थिति का डटकर सामना करते हुए आगे बढ़ना है। कभी भी घबराना नहीं चाहिए। सदैव स्वयं पर विश्वास रखना चाहिए। इसी प्रकार से मैं आगे बताना चाहूंगी कि खेल ही हमें सिखाता है कि कभी भी परिणाम की चिंता नहीं करनी चाहिए। अपने तन–मन–धन से हर काम करना चाहिए। अपना सौ प्रतिशत देना चाहिए ताकि हमें ये न लगे कि मैंने यह नहीं किया। इसी प्रकार से मैं संस्कृत के श्लोक के माध्यम से अपनी बात को स्पष्ट करना चाहूंगी :–

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

अर्थात् श्रीमद्गवद्गीता के दूसरे अध्याय श्लोक 48 में श्री कृष्ण, अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि हे धनंजय योग में स्थित होकर तुम अपना कार्य करो। फल की चिंता मत करो। सिद्ध और असिद्ध अलग है। यही समत्व योग कहलाता है।

अर्थात् इससे यही तात्पर्य है कि हमें निष्काम कर्म योग करना चाहिए या अपनाना चाहिए। बिना फल की इच्छा किए हुए कर्म करना चाहिए। वो कहते हैं न कि हार और जीत, यह दो अलग–अलग पहलू है तथा यह निश्चित है कि एक जीतेगा और एक हारेगा। हमें कभी भी यह नहीं सोचना चाहिए कि हम जीत गए या हम हार जाएँगे। हमें अपना सौ प्रतिशत देना चाहिए जो कुछ भी हमें आता है वह हमें करना चाहिए। हमारे कोच सर हमें एक ही बात कहते हैं, जो डर गया, समझो वो मर गया। यदि हम हारते हैं तो हमें दुखी नहीं होना चाहिए बल्कि अपनी हार से हमें सीखना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए।

'जीत हार तो पल भर की बात है, खेल भावना ही सबसे बड़ी सौगात है'

शिक्षाः "स्वस्थ जीवन के लिए योग और खेलों की भूमिका" विषय से हमें यही शिक्षा मिलती है कि हमें हमेशा स्वस्थ शरीर के लिए, नैतिक मूल्यों के विकास के लिए तथा शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक विकास के लिए खेल खेलना चाहिए तथा आगे आने वाली हमारी भारतीय युवा पीढ़ी को भी खेल में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि आगे आने वाले समय में वह खेल से जुड़े रहें एवं देश का विकास करने में अपनी अहम भूमिका निभाए तथा सामाजिक विकास में भी सहायक बने।

निष्कर्षः "स्वस्थ जीवन के लिए योग और खेलों की भूमिका" विषय का निष्कर्ष है कि खेल का असर मानव जीवन पर किस प्रकार पड़ता है तथा मानवीय विकास, मानसिक विकास, शारीरिक विकास, मनोवैज्ञानिक विकास के लिए खेल की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। तथा हमने भारतीय खिलाड़ियों का उदाहरण दिया, जिससे हम अपनी बात को स्पष्ट रूप से समझा सकें और संस्कृत के श्लोक द्वारा तथा छोटी–छोटी पंक्तियों के द्वारा हम इस विषय की गहराई को जान सकें।

जहाँ खेल होता है, वहाँ जीवन मुसकुराता है, अनुशासन और हौसला साथ निभाता है।

एकता यादव
हिन्दी पखवाड़ा प्रथम पुरस्कार विजेता

"भाषा मनुष्य के विचारों की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है।"–विद्यानिवास मिश्र

हिंदी भाषा का महत्व - आम जीवन में हिंदी का योगदान

हर एक देश की पहचान उस देश की भाषा और संस्कृति से होती है। हर देश की एक राष्ट्रभाषा होती है। हिंदी विश्व की सबसे पुरानी, सरल और समृद्धि भाषाओं में से एक है। हिंदी भारत की आन है, यह भारतीयों के लिए एक गर्व है। राजा राममोहन राय का मत है ''अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त करना ही सबसे उपयोगी है।''

हिंदी में अपने विचारों, भावनाओं और संवेदनाओं को प्रकट करना सरल है। हिंदी एक सरल और मधुर भाषा है जिसमें एक दूसरे से जुड़ाव जल्दी हो जाता है, क्योंकि यह आम जन की भाषा है।

विज्ञान

आज के वैज्ञानिक युग में जहाँ लोग चाँद पर पहुँच गए हैं परन्तु अपनी भाषा से उनका जुड़ाव कम नहीं हुआ है, इसका जीता जागता उदाहरण हमारे देश के ऐस्ट्रोनॉट (शुभांशु जी), जो स्पेस में रहकर आए हैं। जब वह भारत आए तो उन्होंने अपनी भावनाओं को हिंदी भाषा में ही व्यक्त किया।

मीडिया

अगर हम इस उदाहरण को मीडिया के स्तर पर देखे तो इसका प्रचार–प्रसार मीडिया पर हिंदी भाषा में किया गया। इस कारण पूरा भारत वर्ष उस गर्व के पल के साथ जुड़ पाया। आज हर घर में टेलीविजन के माध्यम से हर पल की खबर पहुँचाई जाती है और वह भी सरल भाषा–हिंदी में, ताकि प्रत्येक नागरिक तक खबर पहुँच सके।

स्कूल

आज प्रत्येक स्कूलों में भी हिंदी भाषा पर अत्यधिक जोर दिया जा रहा है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा में एक विषय हिंदी अनिवार्य है। इसके कारण हर बच्चे में अपनी मातृभाषा का ज्ञान जीवित और श्रेष्ठ बन रहा है। इसके लिए सरकार भी अधिक बल दे रही है। इसको बड़े पैमाने पर आगे बढ़ाने के लिए अलग–अलग कार्यक्रम ला रही है।

दफ़्तर

रोजमर्रा के कार्य हेतु, आज सरकारी कार्यालय भी हिंदी को अति आवश्यक भाषा के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। इसके अंतर्गत हिंदी भाषा कोष बनाया गया है, जिसके अधिकारी प्रत्येक कार्यालय में भिन्न–भिन्न समय पर ''हिंदी की कक्ष एवं कार्यशाला'' का आयोजन करते हैं।

इसी में अतिश्रेष्ठ कार्यक्रम हमारे प्रधानमंत्री जी द्वारा लाया गया है जिसका नाम " हिंदी पखवाड़ा''है। यह 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप मे हर वर्ष हिंदी के प्रोत्साहन के लिए मनाया जाता है।

सिनेमा

हर देशवासी के लिए उनका देश प्रेम प्रकट करने का माध्यम भिन्न लेकिन सरल भाषा हिंदी है। उसी में से एक विषय सिनेमा है जिसके माध्यम से प्रत्येक निवासी हिंदी में विचारों का संप्रेषण करता है। आज बड़ी से बड़ी विचारधारा या

समस्या अथवा सुझाव को समाज के समक्ष प्रकट करने के लिए हिंदी भाषा में सिनेमा के प्रसार के माध्यम से किया जा रहा है।

सोशल मीडिया

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में जहाँ लोग एक दूसरे से शारीरिक रूप से दूर रह रहे हैं, ऐसे समय में यह सोशल मीडिया एक विशिष्ट माध्यम है, जहाँ एक–दूसरे से जुड़ने, अपनी भावनाओं, संवेदनाओं को जाहिर करने के लिए एकमात्र हिंदी भाषा ही सर्वोत्तम उपयोगी सिद्ध हो रही है।

सरकार

यह किसी भी देश की एक मजबूत नींव होती है। सरकार आम आदमियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। आज भी इसके लिए हिंदी ही आम भाषा है। सरकारी योजनाओं, कार्यक्रमों, विषयों, पहलुओं को हिंदी भाषा में ही आमजन तक प्रेषित किया जाता है।

देश

भारत एक बहुभाषी देश है। यहाँ विभिन्न प्रकार की भाषाएँ बोली जाती है परन्तु हिंदी भाषियों की जनसंख्या अत्यधिक है, क्योंकि यह सरल और रसपूर्ण भाषा है। एक देश की प्रगति वहाँ के निवासियों से होती है जब सारे निवासी एक दूसरे से सौहार्दपूर्ण तरीके से रहते हैं।

इस प्रकार, हम देख सकते हैं कि आज हिंदी भाषा का महत्व जीवन के प्रत्येक स्तर पर है। यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर और पौराणिक भाषा के रूप में है। यह प्रत्येक निवासी का कर्तव्य है कि वह हिंदी विषय में अपना योगदान दे।

हिंदी हमारी शान है, हिंदी हमारी जान है।"

"जय हिन्द, जय भारत"

सुकृति आनन्द
उच्च प्रदर्शन विश्लेषक मनोविज्ञान (सोनीपत)
हिंदी पखवाड़ा प्रथम पुरस्कार विजेता

''हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।''–कमलापति त्रिपाठी

वृक्ष देवता

गर्मी वर्षा शीत को,
सहता वृक्ष महान!
फिर भी जो आये निकट,
'करता छाँव प्रदान!!

तन बूढ़ा यदि वृक्ष का,
तब भी देता छाल!
बनकर जीवन औषधि,
करता हमें निहाल!!

पीला तन जब हो गया,
तब भी देकर पात,
खाद बना वह खेत में,
दिया हमे सौगात !!

अंत समय भी कर गया,
वह जीवन बलिदान!
सूखी लकड़ी दे गया,
हमको वृक्ष महान !!

जब भी जाओ पास तुम,
रखिए उसकी शान!
पत्ते सूखे आज है,
रहा हरित परिधान !!

पिता तुल्य यह वृक्ष है,
सहकर भीषण धूप!
सुख हमको देता रहा,
रख वृक्ष का रूप!!

"फल फूल औषधि सहित,
करता वायु प्रदान!
पूजन इसका कीजिए,
यह प्रभु का वरदान!!

श्याम बिहारी गुप्ता
पुस्तकालय एवं सूचना सहायक
एकस्व कार्यालय

खेलों का महत्व और चुनौती

खेलो भारत नीति 2025 भारत के खेल पारिस्थितिकी तंत्र को बदलने के लिए एक साहसिक दिशानिर्देश प्रस्तुत करती है, जिसका लक्ष्य ओलंपिक गौरव, आर्थिक विकास और जमीनी स्तर पर सुधार है।

''खेलों में हार नहीं होती, केवल जीत या सीख होती है।''

खेल भारत नीति 2025 इसी भावना को प्रोत्साहित करती है कि हर हार से सीखकर नई जीत हासिल की जाए।

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

भूमिका

भारत खेलों का देश है। यहाँ कबड्डी से लेकर क्रिकेट और हॉकी से लेकर कुश्ती तक अनेक खेलों की परंपरा है। परंतु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की स्थिति अभी भी अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। इसी उद्देश्य से केंद्र सरकार ने जुलाई 2025 में ''खेलो भारत नीति 2025'' लागू की। इसका लक्ष्य है 2036 ओलंपिक में भारत की मजबूत उपस्थिति और भारत को 2047 तक विश्व के शीर्ष पाँच खेल देशों में शामिल करना।

मुख्य उद्देश्य

1. खेलों में युवाओं की भागीदारी बढ़ाना।
2. ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में भी खेल सुविधाएँ पहुँचाना।
3. खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कोचिंग और प्रशिक्षण देना।
4. खेलों को शिक्षा व्यवस्था से जोड़ना।
5. महिलाओं, दिव्यांग और वंचित वर्गों को खेलों में समान अवसर देना।

प्रमुख विशेषताएँ

1. खेल अवसंरचना – दूर राज्य और जिले में स्टेडियम व मैदान विकसित करना।
2. प्रतिभा खोज – स्कूलों और कॉलेजों में खेल प्रतिभा को चुनकर उन्हें आगे बढ़ाना।
3. निजी क्षेत्रों की भागीदारी – CSR और PPP मॉडल से खेलों में निवेश बढ़ाना।
4. स्वास्थ्य व शिक्षा से जुड़ाव – NEP 2020 के अनुसार स्कूलों में खेल को अनिवार्य करना।

''शब्द तभी जीवित होते हैं जब वे जीवन से जुड़े हों।''–केदारनाथ सिंह

5. ओलंपिक दृष्टि 2036 ओलंपिक में भारत की मजबूत उपस्थिति और 2047 तक शीर्ष 5 खेल राष्ट्र बनना।

बजट एवं क्रियान्वयन

1. वर्ष 2025–2026 में खेल मंत्रालय को लगभग रुपए 3,794 करोड़ आवंटित हुए।
2. इसमें से रुपए 1,000 करोड़ 'खेलो इंडिया कार्यक्रम' को दिए गए।
3. नीति को लागू करने में केंद्र, राज्य, खेल संघ और निजी संस्थाएँ मिलकर कार्य करेंगी।

चुनौतियाँ

1. ग्रामीण इलाकों में सुविधाएँ पहुँचाना कठिन।
2. योग्य कोच और खेल विज्ञान विशेषज्ञों की कमी।
3. निजी क्षेत्र को पारदर्शिता और निष्पक्षता के साथ जोड़ना।
4. समयबद्ध लक्ष्य और सतत् मूल्यांकन की आवश्यकता।

निष्कर्ष

"भारत एक विशाल और विविधता वाला देश है। खेल राष्ट्रीय एकता का महान साधन बन सकते हैं।"

– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

"खेलो भारत नीति 2025" खेलों के माध्यम से भारत को सशक्त, स्वास्थ्य और विकसित राष्ट्र बनाने का संकल्प हैं। यदि इसे सही ढंग से लागू किया जाए तो भारत आने वाले वर्षों में न केवल खेलों में विश्व शक्ति बनेगा, बल्कि युवाओं में अनुशासन, स्वास्थ्य और एकता की भावना भी मजबूत होगी।

तान्या श्रीवास्तव
युवा पेशेवर (लेखा एवं वित)
हिन्दी पखवाड़ा प्रथम पुरस्कार विजेता

यादों की पगडंडी

इससे पहले के भूल जाऊँ तुम्हें, मुझे बतलाओगी ?
क्या वो पगडंडी वाले रास्ते अब भी तुम्हारे गाँव जाते हैं।
क्या अब भी सर्दियों के अमरूद तुम्हें वैसे ही भाते हैं।
क्या अब भी बैठती हो घर की ड्योढ़ी पर वैसे ही शामों को।
क्या अब भी सबसे आगे रखती हो यूँ ही घर के कामों को।
क्या अब भी जोड़े गुड़ियों के तुम्हें ऐसे ही भाते हैं।
क्या अब भी ख्वाब परियों के तुम्हें वैसे ही आते हैं।
क्या अब भी शौक पढ़ने का यूँ ही पहले–सा जारी है।
या घर की ज़िम्मेदारी का अब एक बोझ भारी है।
क्या अब भी यादों में तुम्हारी गुज़रे साल बाकी हैं।
क्या अब भी बीते लम्हों की कसकती कोई झांकी है।
क्या अब भी शामों को पहले सा ही चहकती हो।
क्या अब भी सर्द रातों में तन्हा चाँद तकती हो।
क्या अब भी सफर रेलों के यूँ ही रातों को करती हो।
क्या अब भी काम सारे तुम यूँ ही पल भर में करती हो।
क्या अब भी आँगन के झूले से कोई संदेशा पाती हो
क्या अब भी भीगे सावन में तुम अपने गाँव जाती हो।
क्या अब भी पूस की सर्दी में यूँ ही काँप जाती हो।
क्या अब भी कहने से पहले सभी कुछ भाँप जाती हो।
क्या अब भी रंग मेंहदी का तुम्हें वैसे ही चढ़ता है।
क्या अब भी देर तक हँसना तुम्हें वैसे ही फ़बता है।
क्या अब भी फूल चंपा के तुम्हें पहले से भाते हैं।
क्या अब भी गीत फागुन के तुम्हें वैसे ही आते हैं।
क्या अब भी दूर खामोशी से कोई आवाज़ आती है।
क्या अब भी आँख के कोने पे यादें झिलमिलाती हैं।
जो अब भी मिलना चाहूँ तो कोई बहाना निकालोगी।
या लेके सर्द सी आहें यूँ ही हँस कर के टालोगी।

भवेश वशिष्ठ
सहायक निदेशक (राजभाषा)
केंद्रीय आयुध भण्डार, दिल्ली छावनी

"अपनी सरलता के कारण हिंदी प्रवासी भाइयों की स्वत: राष्ट्रभाषा हो गई।"
– भवानीदयाल संन्यासी

पर्यावरण प्रदूषण

मानव जीवन सदा से ही पर्यावरण से प्रभावित रहा है। उसे अपने जीवन को सुचारू रूप से चलाने के लिए संतुलित पर्यावरण की आवश्यकता रही है। संतुलित पर्यावरण से तात्पर्य है– पर्यावरण संबंधित सभी स्वास्थ्यवर्धक आवश्यक तत्वों का निश्चित अनुपात में रहना। किंतु जब इसमें विषैले तत्वों की अधिकता अथवा किसी अनिवार्य तत्व की अधिकता या कमी हो जाती है, तो पर्यावरण में और असंतुलन पैदा हो जाता है। इसे ही पर्यावरण का दूषित होना अथवा पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण

पर्यावरण में प्रदूषण का मुख्य कारण मानव की बढ़ती जनसंख्या है। जिसके स्वार्थों की पूर्ति के लिए आज मानव ने प्राकृतिक संसाधनों का इतनी बेरहमी से दोहन करना प्रारम्भ कर दिया है कि पर्यावरण का संतुलन बिगड़ चुका है। मानव द्वारा चलाए जाने वाले कल कारखानों से निकलने वाला धुआँ वायु को विषैला बना रहा है। साथ ही उनमें से निकलने वाला विषैला रसायन युक्त जल सीधे ही नदियों में छोड़े जाने के कारण जल को भी दूषित कर रहा है। पृथ्वी पर केवल 1.9 प्रतिशत पीने योग्य जल है जिसका एक बहुत बड़ा भाग नदियों से मिलता है। मानव ने बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए खेती की पैदावार बढ़ाने के लिए रासायनिक खाद और कीटनाशकों का प्रयोग भी बड़े पैमाने में शुरु कर दिया है। अतः हम कह सकते हैं कि पर्यावरण प्रदूषण का मुख्य कारण मानव स्वयं ही है।

'प्रदूषण की समस्या का निराकरण करने के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए। इसके लिए सबसे पहले बढ़ती जनसंख्या पर नियंत्रण करना होगा। इसलिए अधिकाधिक पेड़ लगाने होंगे। ऊर्जा के अनवीनीकृत साधनों को छोड़कर नवीनीकृत साधनों का प्रयोग करना होगा।

आज मानव प्राकृतिक संसाधनों का दोहन अंधाधुंध तरीके से कर रहा है। जिसके घातक परिणाम आज सामने आ रहे हैं और आगे भी यदि इसे नहीं रोका गया तो पृथ्वी पर, मानव जीवन संकट में आ जाएगा।

श्रीजा एस. नायर,
लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान–त्रिवेंद्रम
हिन्दी पखवाड़ा प्रथम पुरस्कार विजेता

सामाजिकता क्यों जरूरी है मानव के लिए?

मानव का अस्तित्व केवल व्यक्तिगत रूप से ही नहीं, बल्कि समाज के साथ जुड़े रहने पर भी निर्भर करता है। समाज एक ऐसा जाल है, जिसमें व्यक्ति अपने अस्तित्व को पहचानता है और जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझता है। समाज और सामाजिक संबंधों का महत्व प्रत्येक मानव के जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि समाज ही उसे मानसिक, भौतिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक दृष्टिकोण से सशक्त बनाता है। सामाजिकता का तात्पर्य केवल दूसरों के साथ जुड़ने से नहीं है, बल्कि यह एक गहरी समझ, सहानुभूति, और परस्पर सम्मान से संबंधित है।

यह लेख सामाजिकता के महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास करेगा, जो मानव जीवन के हर पहलू में आवश्यक है।

1. मानव की मूल प्रवृत्तिः समाज में जीने की आवश्यकता

मनुष्य स्वभाव से एक सामाजिक प्राणी है। अरस्तु ने इसे 'मनुष्य स्वभावतः सामाजिक प्राणी है' (Man is by nature a social animal) कहा था। मनुष्य का विकास समाज के भीतर हुआ है और समाज ही उसे आकार देता है। प्रारंभ में, मानव जब अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए जंगली रूप में रहता था, तब भी उसके अस्तित्व के लिए समूह में रहने की आवश्यकता थी। समूह में रहने से सुरक्षा, भोजन, और अन्य संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित होती थी। यही कारण है कि मानव समाज के बिना जीवन की कल्पना नहीं कर सकता।

सामाजिकता इस विचारधारा का हिस्सा है कि मनुष्य अपने आस–पास के लोगों के साथ संबंध बनाकर अधिक सफल और खुशहाल जीवन जी सकता है। समाज में रहने से व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक विकास के अवसर बढ़ते हैं, और समाज से जुड़ने की प्रक्रिया जीवन को अधिक अर्थपूर्ण और संतोषजनक बनाती है।

2. मानसिक और भावनात्मक समर्थन

सामाजिकता का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह व्यक्ति को मानसिक और भावनात्मक समर्थन प्रदान करती है। हम अपने दोस्तों, परिवार और सहयोगियों के माध्यम से अपने सुख–दुख को साझा करते हैं। जब व्यक्ति दुखी होता है, तो उसे समझने और सहानुभूति देने वाले लोग उसकी मनोबल को बढ़ाते हैं। इसी प्रकार, खुशियों के समय में भी परिवार और दोस्तों के साथ आनंद साझा करना मानसिक संतोष का कारण बनता है।

समाज में जुड़ाव से व्यक्ति को खुद को मूल्यवान महसूस होता है। यह विश्वास और आत्मसम्मान को बढ़ाता है, क्योंकि व्यक्ति जानता है कि वह अकेला नहीं है, उसके आस–पास लोग हैं जो उसे समझते हैं और उसकी मदद करते हैं।

3. सामाजिकता से सामाजिक दायित्वों का पालन

जब हम समाज का हिस्सा होते हैं, तो हमारे ऊपर कुछ ज़िम्मेदारियाँ भी होती हैं। सामाजिकता का मतलब सिर्फ

"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है।"–मैथिलीशरण गुप्त

अपनी ही बातों पर ध्यान देना नहीं है, बल्कि यह भी है कि हम अपने आस–पास के लोगों का ख्याल रखें और समाज में व्याप्त समस्याओं के समाधान में योगदान दें।

समाज में हर व्यक्ति का एक दायित्व होता है, जैसे कि गरीबों की मदद करना, पर्यावरण की रक्षा करना, और समाज में नैतिकता और ईमानदारी का पालन करना। सामाजिकता हमें यह सिखाती है कि हम अपने व्यक्तिगत लाभ से ज्यादा दूसरों की भलाई को प्राथमिकता दें, जिससे समाज का समग्र विकास हो सके।

4. सामाजिक रिश्तों का महत्व

हमारे जीवन में रिश्तों का विशेष स्थान होता है। समाज में रहते हुए हम विभिन्न प्रकार के रिश्तों का निर्माण करते हैं–परिवार, दोस्त, सहकर्मी, आदि। इन रिश्तों से जीवन को अर्थ मिलता है।

परिवार: परिवार का समाज में विशेष स्थान होता है। यह पहले और सबसे अहम सामाजिक इकाई है, जहाँ हम अपने मूल्यों, संस्कृतियों और परंपराओं को सीखते हैं। परिवार की भूमिका किसी व्यक्ति के मानसिक विकास, आत्मविश्वास और सामाजिक आदतों को सुधारने में अहम होती है।

दोस्ती: दोस्ती भी सामाजिकता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। दोस्तों के साथ बिताए गए समय से हमें खुशी, प्रेरणा, और सहारा मिलता है। दोस्त एक दूसरे के साथ अपनी समस्याओं को साझा करते हैं और एक–दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं।

कामकाजी रिश्ते: कार्यस्थल पर अच्छे संबंध बनाने से काम में अधिक सफलता मिलती है। जब सहकर्मी एक–दूसरे के साथ अच्छे संबंध बनाए रखते हैं, तो कार्य का माहौल सकारात्मक रहता है और यह संगठन के समग्र विकास में योगदान करता है।

5. सामाजिकता का शारीरिक और मानसिक विकास पर प्रभाव

समाज में अपनी भूमिका निभाने से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक संपर्क व्यक्ति को मानसिक तनाव, अवसाद, और अकेलेपन से बचाता है। यदि व्यक्ति अपने सामाजिक दायित्वों का पालन करता है और दूसरों से जुड़ा रहता है, तो उसकी मानसिक स्थिति में सुधार होता है और वह जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है।

शारीरिक रूप से भी सामाजिक व्यक्ति की जीवनशैली में बेहतर आदतें होती हैं। अच्छे सामाजिक संबंध व्यक्ति को सक्रिय और गतिशील रखते हैं, क्योंकि वह अपनी सेहत का ध्यान रखता है और स्वस्थ आहार और व्यायाम के लिए प्रेरित होता है।

6. समाज में समावेशिता और समानता

सामाजिकता समाज में समावेशिता और समानता को बढ़ावा देती है। जब समाज के विभिन्न वर्ग, जाति, धर्म और समुदायों के लोग आपस में मिलते हैं, तो उनके बीच विचारों का आदान–प्रदान होता है। इससे न केवल सामाजिक एकता बढ़ती है, बल्कि विभिन्न समाजों के बीच समझ और सहनशीलता भी विकसित होती है।

सामाजिकता विविधता में एकता का संदेश देती है। यह हमें सिखाती है कि हर व्यक्ति की मानवीय गरिमा और अधिकारों का सम्मान करना चाहिए, और सभी को समान अवसर प्रदान करने चाहिए। इस प्रकार, सामाजिकता से समाज में शांति, समझ, और सहनशीलता बढ़ती है।

समाज में सुधार और प्रगति

सामाजिकता का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह समाज में सुधार और प्रगति की दिशा में योगदान करती है। जब लोग सामाजिक रूप से जागरूक होते हैं, तो वे समाज की समस्याओं जैसे कि गरीबी, असमानता, और भेदभाव को समझते हैं और उन्हें हल करने के लिए काम करते हैं।

सामाजिक जागरूकता से लोग शिक्षा, स्वास्थ्य, और अन्य सामाजिक मुद्दों के प्रति संवेदनशील होते हैं और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों और पहलों में भाग लेते हैं। सामाजिकता यह सुनिश्चित करती है कि हर व्यक्ति को एक बेहतर और अधिक समान समाज में जीने का अवसर मिले।

निष्कर्ष

सामाजिकता मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा है और इसके बिना जीवन अधूरा सा लगता है। सामाजिकता न केवल हमें एक–दूसरे से जोड़ती है, बल्कि यह हमें हमारे दायित्वों, अधिकारों और सामाजिक संबंधों के प्रति जागरूक भी बनाती है। यह हमारे मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक विकास में सहायक होती है, और समाज में शांति, समानता और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है।

अंततः, सामाजिकता हमें यह सिखाती है कि हम अकेले कुछ भी हासिल नहीं कर सकते, बल्कि समाज के साथ मिलकर ही हम जीवन को अर्थपूर्ण और समृद्ध बना सकते हैं। इसलिए, सामाजिकता को अपनाना और इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना हम सभी के लिए अत्यंत आवश्यक है।

श्री विकास कुमार
आशुलिपिक
भारतीय खेल प्राधिकरण

"व्यंग्य समाज की बुराइयों पर सबसे तीखा प्रहार है।"–हरिशंकर परसाई

हर्ष

1.
खो गया है हर्ष
कहाँ गया उसका चुंबकीय स्पर्श
अर्ध–विस्मृत सा ढूँढ रहा हूँ
हर गली...हर घर...हर मोहल्ले में
वह कोमल शिशु
अनजाने तिमिर में चुपके–से
चला गया कहाँ...

देखता हूँ खुद को
वह मुख की लालिमा
मानो किसी 'जोंक'' ने चूस ली
अब बाकी है कंकाल,
खोखला, रक्त–हीन,
पसलियाँ टूटी हुई
कमजोर.....
जान पड़ती है उसकी क्षणप्रभा
इस देह को घसीटता हूँ,
प्रयत्न करता हूँ आगे बढ़ने का,
गिर पड़ता हूँ
कमज़ोरी और दर्द आदत बन गई है,
इच्छा तो है
पाने की अर्जुन सी तीक्ष्णता
भीम की ताकत
पर दबा हूँ अपने ही बोझ तले
घिरा हूँ आलस्य....ईर्ष्या....अंगारों से
यह अंगारे हैं वही
जिसने जंगल नाश किए सभी
जिसने झुग्गी–झोपड़ियाँ जलाई
घर फूंके, पैदा की खून की धारें,
बिखेरे चहूँ–ओर माँस के लोथड़े
पनपाए अनगिनत और अंगारे

2.
ऐसे में ही खो गया मेरा हर्ष,
उसकी खिलखिलाहट, उसकी तोतली बातों ने
दिल में कितने थे फूल खिलाए,
उसकी अनुपस्थिति में, वे सब हैं मुरझाए,
कहाँ ढूँढू मैं उसको?
पर्वतों पर? पठारों में!
सागर के बेताब किनारों पर?
या ढूँढू उसको,
शहरों में, महानगरों में
जहाँ प्रश्न का उत्तर है
एक और प्रश्न जहाँ फँसा है
समय के काटने–वाले जबड़ों में
जहाँ मुस्कान में छिपा है अपमान
जहाँ हर शय पर नज़र रखता शैतान
जहाँ दबी है दिलों में अकुलाहट,
जहाँ डर से सुनी जाती, हर आहट
या ढूँढू उसको
गाँवों की धूल–भरी वीरान राहों में,
आज हम हो चले फिर स्वतंत्र
ऐसे तंत्र का लाभ क्या
जहाँ हर्ष ही न हो
इसलिए उसे तलाश रहा हूँ
हर गली...हर घर...हर मोहल्ले में
हर व्यक्ति की पथरीली आँखों में,
उसकी कड़वी मुस्कान में,
ज़मीन पर, आसमान में
सुबह में, अपराह्न में
अफसोस वह कहीं नहीं दिखता,
मुझे छोड़ चला है असहाय,
ज़मीन पर पड़ा
खोखला, रक्तहीन, कमजोर!

रोहित भारद्वाज
मीडिया प्रभाग
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

यथार्थ गीता : भगवद्गीता को समझने की सही और क्रियात्मक दृष्टि

भूमिका

भगवद्गीता विश्व के महानतम आध्यात्मिक ग्रंथों में से एक है। इसके 700 श्लोक केवल भारतीय दर्शन ही नहीं, बल्कि समूची मानवता के लिए जीवन का पथ प्रदर्शित करते हैं। गीता पर सहस्रों टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं– संस्कृत, हिंदी, अंग्रेज़ी और अन्य भाषाओं में। इसके बावजूद आज भी यह प्रश्न बना हुआ है कि गीता वास्तव में क्या कहती है? यदि योगेश्वर श्रीकृष्ण ने एक ही सत्य का उपदेश दिया, तो फिर व्याख्याओं में इतना मतभेद क्यों है?

इसका उत्तर मनुष्य की ग्रहण–शक्ति में छिपा है। एक ही वाणी को सुनने वाले श्रोता यदि भिन्न–भिन्न मानसिक स्तर, गुण और संस्कारों वाले हों, तो अर्थ भी अलग–अलग निकलते हैं। तामसी, राजसी और सात्त्विक बुद्धि के अनुसार गीता को समझने का ढंग बदल जाता है। इसी कारण गीता का यथार्थ आशय अनेक बार शब्दों के जाल में उलझकर रह जाता है।

गीता और व्याख्याओं का भ्रम

आज गीता की अनेक टीकाएँ उपलब्ध हैं और प्रायः हर टीका स्वयं को प्रामाणिक सिद्ध करती है। परंतु सच्चाई यह है कि उनमें से अधिकांश गीता के शुद्ध और मूल आशय से बहुत दूर हैं। कुछ महापुरुषों ने अवश्य सत्य का स्पर्श किया, किंतु सामाजिक, धार्मिक या परिस्थितिगत कारणों से वे उसे पूरी तरह समाज के सामने नहीं रख सके।

गीता को न समझ पाने का सबसे बड़ा कारण यह है कि श्रीकृष्ण एक योगी थे। वे जिस स्तर से बोल रहे थे, उस स्तर को केवल वही व्यक्ति समझ सकता है जो स्वयं उस योगिक अवस्था तक पहुँचा हो। गीता केवल शब्दों का ग्रंथ नहीं है। उसमें भाव, संकेत, और क्रियात्मक अनुभव समाहित हैं। कुछ बातें कही जा सकती हैं, कुछ भाव–भंगिमा से व्यक्त होती हैं और कुछ केवल साधना के मार्ग पर चलकर ही जानी जा सकती हैं।

यही कारण है कि गीता को केवल पढ़ने या रटने से उसका रहस्य नहीं खुलता। जो महापुरुष उसी अवस्था को प्राप्त कर चुका हो, वही गीता के भावों को जीवंत कर सकता है। वह न केवल बताता है, बल्कि दिखाता भी है– साधक को उसी पथ पर चलाता है।

यथार्थ गीता और सद्गुरु की भूमिका

यथार्थ गीता पूज्य श्री परमहंस जी महाराज की वाणी और अंतःप्रेरणा से प्राप्त गीता–बोध का संकलन है। इसमें लेखक का अपना कुछ भी नहीं है। यह ग्रंथ इस सत्य पर बल देता है कि गीता क्रियात्मक है। साधना करने वाला प्रत्येक

"कविता मनुष्य के मन का संगीत है।"–हरिवंश राय बच्चन

साधक उसी परिधि से गुजरता है। यदि कोई व्यक्ति उस परिधि से नहीं गुजरता, तो वह वास्तव में साधना नहीं कर रहा, बल्कि केवल परंपराओं और रूढ़ियों को दोहरा रहा है।

श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं –

"तत्त्वदर्शी के पास जाओ, निष्कपट भाव से सेवा करो और उस ज्ञान को प्राप्त करो।"

उन्होंने कभी यह दावा नहीं किया कि सत्य केवल उनके पास है। उन्होंने ऋषियों द्वारा खोजे गए सनातन सत्य को ही उद्घाटित किया। यही कारण है कि गीता को समझने का सर्वोत्तम उपाय सद्गुरु का सानिध्य है।

कर्म, यज्ञ और युद्ध का यथार्थ अर्थ

गीता में प्रयुक्त शब्दों का सामान्य अर्थ लेने से भारी भ्रांति उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए–

- **कर्म** को आजीविका या सांसारिक कार्य मान लिया गया
- **यज्ञ** को अग्नि में हवन समझ लिया गया
- **युद्ध** को तलवार और बाणों से लड़ा जाने वाला संग्राम मान लिया गया

जबकि श्रीकृष्ण ने स्वयं स्पष्ट किया कि–

- कर्म = **आराधना**
- यज्ञ = **श्वास–प्रश्वास का चिंतन, इंद्रियों का संयम**
- युद्ध – **दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों का आंतरिक संघर्ष**

गीता का युद्ध किसी बाहरी शत्रु से नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर चल रहा संघर्ष है। यही कारण है कि गीता का धर्मक्षेत्र और कुरुक्षेत्र कोई भौगोलिक भूमि नहीं, बल्कि स्वयं यह मानव शरीर है–

"इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।"

इस शरीर–क्षेत्र में ही दैवी और आसुरी प्रवृत्तियाँ संघर्ष करती हैं। सद्गुरु के मार्गदर्शन में साधना करने पर दैवी संपदा का उत्कर्ष और आसुरी संपदा का शमन होता है।

वर्ण, जाति और वर्णसंकर का वास्तविक आशय

यथार्थ गीता यह स्पष्ट करती है कि वर्ण व्यवस्था जाति–आधारित नहीं, साधना–आधारित है। चार वर्ण साधक की चार अवस्थाएँ हैं, न कि जन्म से निर्धारित सामाजिक वर्ग। वर्णसंकर का अर्थ जातियों का मिश्रण नहीं, बल्कि साधना–पथ से विचलन है।

इसी प्रकार देवता और असुर कोई बाहरी शक्तियाँ नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर के गुण हैं। दैवी गुण मनुष्य को परमात्मा की ओर ले जाते हैं, जबकि आसुरी गुण उसे प्रकृति और बंधन में उलझाते हैं।

अर्जुन : एक व्यक्ति नहीं, एक प्रतीक

गीता का अर्जुन केवल एक ऐतिहासिक पात्र नहीं है। वह अनुराग का प्रतीक है— वह साधक जो श्रेय चाहता है, प्रेय नहीं। अर्जुन का श्रीकृष्ण से कहना—

"मैं आपका शिष्य हूँ, आपकी शरण में हूँ।"

यही शरणागति गीता की आत्मा है। अनुराग के बिना न पहले किसी ने ईश्वर को देखा है, न भविष्य में देख सकेगा—

"मिलहिं न रघुपति बिनु अनुरागा।"

अर्जुन प्रतीक है उस साधक का, जिसके हृदय में गुरु सदा विद्यमान रहते हैं।

गीता : कर्मकाण्ड नहीं, अमरत्व का पथ

गीता जीवन—निर्वाह की कला नहीं सिखाती। वह जीवन—संग्राम में शाश्वत विजय का मार्ग दिखाती है। यह न स्वर्ग—नरक के भय में उलझाती है, न कर्मकाण्डों के जाल में। गीता प्रत्येक श्लोक के माध्यम से साधक से आंतरिक युद्ध की मांग करती है।

जब साधना पूर्ण होती है, तब दैवी संपदा भी विलीन हो जाती है और अंतिम शाश्वत सत्य प्रकट होता है। इसके बाद महापुरुष जो भी कर्म करता है, वह केवल लोकसंग्रह के लिए होता है।

यथार्थ गीता यह सिखाती है कि गीता को समझना एक बौद्धिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक जीवंत साधना—पथ है। यह ग्रंथ हमें रूढ़ियों, बाह्य पूजा—पद्धतियों और शब्द—जाल से ऊपर उठाकर आत्मा और परमात्मा की प्रत्यक्ष अनुभूति की ओर ले जाता है।

गीता किसी एक धर्म या समाज की नहीं, बल्कि समूची मानवता की धरोहर है। जब इसे सद्‌गुरु के सानिध्य में, निष्कपट भाव से, क्रियात्मक रूप में समझा जाता है— तभी गीता "ग्रंथ" से "जीवन" बनती है।

यही यथार्थ गीता का संदेश है।

ओंकार नाथ यादव
निदेशक
मानव संसाधन प्रभाग
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

"स्वाधीनता मनुष्य की सबसे बड़ी आकांक्षा है।"—रामधारी सिंह दिनकर

मेरी कहानी, मेरी ज़ुबानी

आई थी साई में कुछ साल पहले,
नहीं पता था काम कैसे संभाले।
कड़ी मेहनत के बाद जब नौकरी पाई,
तब सब कुछ नया–नया मैं पाई।
नोटिंग, ड्राफ्टिंग – यह कैसी बला,
कुछ भी समझ न आए भला।
आगे सुनो मेरी कहानी, मेरी ज़ुबानी।

जिमनास्टिक, सेपकटाकरा, ताइक्वांडो, कुश्ती– इतने सारे खेल,
तब उनके नाम और पहचान को जाना सही ढंग से हर पहल।
सही मायनों में समझी खेलों की भूमिका,
क्या होती है राष्ट्रमंडल और ओलंपिक की उपलब्धियाँ।
एडमिन, ऑपरेशन, पर्सनल, कोआर्डिनेशन
इतने सारे डिपार्टमेंट, तब मैने जाना।
सरकारी दफ्तर ऐसा होता है
जब मैंने पहचाना।
आगे सुनो मेरी कहानी, मेरी ज़ुबानी।

फिर आई कोरोना की भयानक आँधी,
सभी ने कहा– अब तू कहाँ से आई?
तब सब कुछ हो गया पराया,
इसका आना किसी को न भाया।
इसने सबको घर बिठाया,
कामकाज को ठहराया।
आगे सुनो मेरी कहानी, मेरी ज़ुबानी।

अब आई फाइलों की बारी,
इन पर काम करने लगा भारी।
फिर ई–ऑफिस ने दस्तक दी,
इसके महत्व को सबने समझ ली।
अब न फाइलों का चक्कर,
न अनुमोदन में देरी का डर।
काम होने लगा फटाफट,
चाहे दफ्तर हो या घर।
यही थी मेरी कहानी, मेरी ज़ुबानी।

वैशाली
डाटा एंट्री ऑपरेटर
भारतीय खेल प्राधिकरण, इंदिरा गांधी स्टेडियम

"हिंदी" से अपनी पहचान

किसी भी बोली या भाषा का राष्ट्र के उत्थान में विशेष इतिहास होता है। हिंदी भाषा भी कुछ ऐसा ही इतिहास रखती है। भारत के स्वाधीनता संग्राम में हिंदी भाषा की अहम भूमिका रही है। विभिन्न स्वतंत्रता सेनानी ने हिंदी भाषा में देश भक्ति के गीत का गुणगान करके हिंदी भाषा के प्रचार व प्रसार में योगदान दिया था।

आज़ादी से पहले हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया लेकिन 14 सितंबर 1949 को राजभाषा का दर्ज़ा दिया गया था। इसी कारण हर साल '14 सितंबर' को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी दुनिया की चौथी सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है। हिंदी को राजभाषा का दर्ज़ा दिए जाने के साथ यह माना गया कि धीरे–धीरे हिंदी अंग्रेजी का स्थान ले लेगी और अंग्रेजी पर हिंदी का प्रभुत्व होगा। स्वतन्त्रता के इतने समय बाद भी हिंदी को जो गौरवपूर्व स्थान प्राप्त होना चाहिए था वह उसे नहीं मिला वर्तमान में युवाओं के अंग्रेजी के प्रति रुझान को देखते हुए यह चिंतन का विषय है कि हर एक स्थान पर हिंदी का विकास किया जाना चाहिए। स्कूल, सरकारी दफ़्तर व कंपनियों में हिंदी की सरलता व व्याकरण की वैज्ञानिकता बताना आवश्यक है। यह समझना है कि हिंदी ने अपने भीतर कई भारतीय बोलियों को समाहित किया हुआ है।

इन सभी चुनौतियों के बावजूद भी हिंदी का भविष्य बहुत उज्ज्वल है चाहे इंस्टाग्राम हो, फेसबुक हो, दिन–प्रतिदिन हिंदी लेख, हिंदी गानों व हिंदी नाटकों की माँग बढ़ रही है, बस हिंदी के महत्व के प्रति जागरूक होने की अवश्यकता है।

हिंदी को अपने दिल में स्थान देना है "हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की संस्कृति, इतिहास की आत्मा है, यह हिन्दुस्तान की पहचान है।"

पूजा
(डाटा एंट्री ऑपरेटर)
(सामान्य प्रशासन व क्रय विभाग)
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

"संघर्ष ही जीवन को सार्थक बनाता है।"–हरिवंश राय बच्चन

एक किलकारी बोली......

कविता की भूमिका : राजस्थान के झुंझुनू ज़िले के एक सैनिक शिवराम, पुलवामा हमले के दौरान शहीद हुए। उनकी पत्नी सुनीता अस्पताल में 9 माह की गर्भवती थीं। शिवराम शहीद हुए तो उनका अस्थि कलश आया। 9 माह की गर्भवती शहीद की साहसी पत्नी, अस्पताल से उठकर अपने पति के अस्थि कलश को कंधा देने आई।

ये हिंदुस्तान है साथियों।

एक किलकारी बोली नियति से, कि आँसू मत बहाओ
न भीगने दो नयन को, करुणा और वेदना का भाव न लाओ,
कहना चाहता हूं वतन को कि मैंने अब तक आँखें नहीं खोली हैं,
मां–पिता के संबोधन की भाषा भी नहीं बोली है।
अरे लहू का रंग क्या है ये मैंने जाना नहीं है,
पर व्यथित हूं मैं, ये मैंने माना नहीं है।
अरे मुझसे ज्यादा भाग्यशाली कौन है बताओ तो,
मुझसे ज्यादा गौरवशाली कौन है दिखाओ तो,

मैं हूं उस पिता की संतान, जिसने पीठ नहीं दिखाई,
जिसने शत्रुओं पर गोलियाँ बरसाई हैं,
जो सीना तानकर राष्ट्र के लिए खड़ा रहा।
जो तिरंगे की आन हेतु अड़ा रहा,
जिसके नेत्र ज्वाला से भभकते रहे
जो शत्रु संहार के अंगारे दहकते रहे
जिसने जान न बख्शी आतंकी कामरान की
वो अमृत्व की बेदी है, न की उनकी चिता है
गर्व है कि शहीद शिवराम मेरे पिता हैं
और मां, तुम तो सीमा पर न रही,
फिर भी कितनी महान हो गई,
तुम न रही, हिंदुस्तान हो गई।

अरे जब भीग गई वतन की करोड़ों पलकें,
पर है वीरता की प्रतिमूर्ति, तेरी आँखों से आँसू न छलके
वीरता विश्वास की गाथा चेतना में समाई
जब पिता का अस्थि कलश उठाने तुम स्वयं ही चली आई
अरे जिस देश पर मर मिटने को मेरे पिता की जवानी खड़ी हो
जहाँ मेरी माँ की तरह शक्ति की कहानी बनी हो,
तब मत समझना कि मैं किसी शोक में हूँ,
गर्व है माँ कि मैं तुम्हारी कोख में हूँ।

गर्व है कि तुम्हारी हिम्मतों का जुनून मुझमें है।
गर्व है कि पिता की राष्ट्र भक्ति का खून मुझमें है।
मां का साहस, पिता का बलिदान मुझमें है,
हाँ हाँ, हिंदुस्तान मुझमें है।
सुनीता और शिवराम मुझमें हैं।

तारुषी शर्मा
फेंसिंग एथलीट
(राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र, पटियाला)
हिन्दी पखवाड़ा प्रथम पुरस्कार विजेता

"सफलता ही भाषा की सबसे बड़ी शक्ति है।"—भवानी प्रसाद मिश्र

सोशल मीडिया का जन जीवन पर प्रभाव

प्रस्तावना – सोशल मीडिया अर्थात् सामाजिक संचार का माध्यम, समाज को गाँव, कस्बे से लेकर शहर को एक मंच पर जोड़ने वाला माध्यम है। दुनिया का कोई भी हिस्सा वर्तमान में सोशल मीडिया की पहुँच से बाहर नहीं होगा। इतना व्यापक एवं फैला हुआ है सोशल मीडिया का संसार।

संदर्भः सोशल मीडिया कहें या इसे सोशल वर्ल्ड, आज जन–जीवन का प्रत्येक समूह सोशल मीडिया से कहीं न कहीं जुड़ा हुआ है। सोशल मीडिया हर आयु वर्ग के लिए कुछ न कुछ उपाय हमेशा प्रदान करती है, जिससे यह प्रतीत होता है कि सोशल मीडिया न केवल मनोरंजन मात्र है, पर विभिन्न जरूरतों की पूर्ति का स्रोत भी है। जैसे हर चीज़ के दो पहलू होते हैं वैसे ही सोशल मीडिया के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलू हैं।

सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभाव

कौशल मंच प्रदाताः भारत जैसे विशाल देश का नागरिक होना गौरव की बात है, इस अद्भुत वैभवशाली देश में आदिकाल से महान व्यक्तित्व के लोगों ने जन्म लिया है और अपने कौशल के दम पर दुनिया में अपना डंका बजवाया। इस कड़ी में सहयोग प्रदान करने एवं और अधिक कौशल को दुनिया के सामने लाने का कार्य किया है सोशल मीडिया ने। वर्तमान में हर आयु वर्ग के लोग अपना कौशल सोशल मीडिया पर दिखाने के कारण वैश्विक स्तर पर ख्याति प्राप्त कर रहे हैं।

रोज़गार प्रदाताः आज सोशल मीडिया न केवल कला–कौशल को मंच प्रदान कर रहा है पर इसके साथ ही, रोज़गार का भी माध्यम साबित हो रहा है। हजारों युवा इन कंपनियों से जुड़े हुए हैं एवं अच्छी तनख्वाह प्राप्त कर रहे हैं। जो लोग कंटेंट क्रिएटर हैं, वे लोग अपने कौशल का वीडियो बनाकर उनके व्यूज़ और लाइक्स के द्वारा अच्छी कमाई कर रहे हैं। रोज़गार का माध्यम बन सोशल मीडिया जन–जीवन पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ रहा है।

जोड़ने का माध्यमः आज दूर बैठे दो व्यक्ति सोशल मीडिया के माध्यम से जुड़े हुए हैं। सोशल मीडिया ने विभिन्न देशों की भिन्न संस्कृतियों को एक मंच प्रदान किया है। 'अनेकता में एकता भारत की विशेषता' को साकार करता है। सोशल मीडिया–जहाँ हर कोई अपनी अभिव्यक्ति की आज़ादी का सदुपयोग कर सकता है।

आज भारत के ग्रामीण इलाके में युवा सोशल मीडिया के माध्यम से जान सकते हैं कि उनके सम आयु, युवा वर्ग क्या कर रहा है एवं सीधा संपर्क भी किया जा सकता है। सोशल मीडिया ने भौतिक दूरी को कम करके एक ऐसा मंच तैयार किया है जहाँ हर कोई एक दूसरे से अपने आप को जुड़ा हुआ और करीब पाता है।

खबर का संचारः कई इलाकों में समाचार संवाददाताओं का पहुँच पाना भी मुश्किल होता है तो फिर वहाँ की खबर कौन पहुँचाएगा। इस कठिन कार्य को आसान किया है सोशल मीडिया की पहुँच ने। सोशल मीडिया की व्यापक पहुँच के कारण ही हमें देश के हर कोने से खबर चंद मिनटों में ही मिल जाती है। आज खबर प्राप्त करने में, इसकी पहुँच पर कोई पाबन्दी नहीं लगा सकता है क्योंकि सूचना का अधिकार हमारा मौलिक अधिकार भी है जो हमें संविधान द्वारा प्रदत्त है।

वैश्विक पहुँचः सोशल मीडिया एक देश तक ही सीमित नहीं है। इसकी व्यापकता इतनी फैली है कि शायद ही ऐसा कोई देश वर्तमान में होगा जहाँ इंटरनेट एवं सोशल मीडिया न पहुँचा हो। इसी वैश्विक पहुँच के कारण सोशल मीडिया एक श्रेष्ठ माध्यम साबित हुआ है एवं कई सारे व्यापारों की नींव सोशल मीडिया पर आधारित है। वैश्विक पहुँच के कारण सोशल मीडिया का सामर्थ्य भी बहुत है। यह देश की राजनीति को बना भी सकता है व देश में अस्थिरता भी ला सकता है।

वर्तमान में आंदोलन का माध्यमः जिसकी कोई आवाज़ नहीं, जिसके साथ कोई खड़ा नहीं उसके साथ खड़ा है सोशल मीडिया। 'मी–टू' जैसे आंदोलन ने पूरी दुनिया को बताया कि सोशल मीडिया पर संगठित समूह क्या कर सकता है। एक विचार का प्रभावी तौर पर फैलाव और बदलाव लाने की पहल को सोशल मीडिया ने बल दिया है।

आज हर आयु वर्ग अपनी बात को सोशल मीडिया के माध्यम से खुलकर व्यक्त कर सकता है। ट्विटर, इंस्टाग्राम ट्रेन्डस किसी भी विषय को सरकार एवं समाज के सामने लाने में प्रभावी साबित हुए हैं।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

जेन ज़ी समाज का जन्म: सोशल मीडिया ने एक अलग ही दुनिया को उत्पन्न किया है। यह वह पीढ़ी है जो तकनीकी समझ तो बहुत रखती है पर उसके दुष्प्रभाव से अज्ञान है। यह पीढ़ी नैतिक मूल्यों से अधिक, व्यक्तिगत मूल्यों को बढ़ावा देती है। सोशल मीडिया ने इस नव पीढ़ी को इंटरनेट व सोशल मीडिया पर इतना निर्भर बना दिया है कि इसके बिना जीवन ही संभव नजर नहीं आता है। उदाहरण के तौर पर नेपाल देश में अस्थिरता का मुख्य कारण ही सोशल मीडिया पर लगाया हुआ बैन है और इसके खिलाफ जेन ज़ी पीढ़ी का विरोध उत्पन्न हुआ।

अकेलेपन की ओर: सोशल मीडिया ने सबको जोड़ तो दिया पर इतना ज्यादा जुड़ाव और अधिक समय ले लिया कि आज अपनों के साथ समय बिताने या बात करने की फुर्सत नहीं है। आज हर कोई अपने कमरे में या अपने मोबाइल से ही समाज से जुड़ना चाहता है पर सामने या साथ में बैठे व्यक्ति से बात नहीं करना चाहता है। नई बीमारियाँ जैसे–डिप्रेशन, स्ट्रेस आदि आज के युवाओं में बढ़–चढ़कर नज़र आ रही है।

ऑनलाइन धाँधली/धोखेबाज़ी: ऑनलाइन दुनिया में कौन, कहाँ है कोई नहीं जानता, वास्तविक चेहरा परदे के पीछे छिपा रहता है, इसलिए सोशल मीडिया एक आसान माध्यम है जहाँ ऑनलाइन गड़बड़ी या धोखेबाज़ी आसानी से हो सकती है। विभिन्न वस्तुओं का लालच देकर लोगों के मन पर कब्जा किया जाता है, फिर उनकी मर्ज़ी के बगैर उनसे धोखा किया जाता है। उदाहरण ऑनलाइन गेम्स, रुपये डबल करो स्कीम, भाव का गिरना आदि।

गलत खबर फैलाना: सोशल मीडिया जहाँ अच्छी खबर को फैलाता है, वहीं बुरी खबर पर कोई रोक न होने के कारण गलत ख़बर भी चंद मिनटों में फैल जाती है और उसे सही करने में अधिक कार्य करना पड़ता है। कई बार गलत ख़बर के फैलने से सोशल मीडिया में कई दंगे व युद्ध नजर आए हैं। इसलिए सोशल मीडिया की ख़बर की जांच होना अति आवश्यक हो जाता है। यह इसकी विश्वसनीयता पर भी प्रभाव डालती है।

उदाहरण – एक समूह के लोगों का दूसरे समूह को प्रताड़ित करना धर्म जाति, भाषा के नाम पर।

निष्कर्ष:

यदि सोशल मीडिया नहीं होता तो:–

- मैं अपने मित्रों से कैसे जुड़ पाता,
- मैं अपने विचारों को कैसे व्यक्त करता,
- मैं अपनी खुशी किसके साथ व्यक्त करता।

आज सोशल मीडिया ने मुझे गैरों से तो जोड़ दिया पर उनके लाइक्स, शेयर, सब्सक्राइब के चक्कर में मैंने अपनों को ही समय देना बन्द कर दिया। मेरी अपनी पहुँच तो दुनिया के आर–पार हो गई, पर मैंने अपने आपको एक बंद कमरे एवं एक मोबाइल तक सीमित कर दिया।

आज मैं तो सोशल मीडिया पर किंग हो गया पर मैं अपने समाज (वास्तविक समाज) से विलीन हो गया।

विशाल पिपल्दे
युवा पेशेवर – खिलाड़ी संबंध प्रबंधक, राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र
हिन्दी पखवाड़ा प्रथम पुरस्कार विजेता

"हिंदी और नागरी का प्रचार तथा विकास कोई भी रोक नहीं सकता।" – गोविन्दवल्लभ पंत।

एन.आई.एस. हॉस्टल का पहला दिन

ओल्ड हॉस्टल का कमरा नंबर 21
अपने बैग को रखकर मैंने जैसे ही चारों तरफ नज़र घुमाई,
कमरे की दीवारों पर मुझे कुछ पंक्तियाँ दी दिखाई,
लिखा था "हम चले – तुम फँसे" ये पढ़कर मेरा माथा चकराया
"इस कमरे में भूत रहता है" देखकर मेरा सिर भन्नाया
ये सब पढ़कर मुझे लगा कि खोद लिया मैंने अपने ही लिये गद्ढ़ा,
तभी एक और पंक्ति दिखी

"कमरा नंबर 21 किताबों का दुश्मन, यारों का अड्डा"
मैंने जैसे–तैसे खुद को संभाला और गया धोने मुँह और हाथ
बाथरूम के दरवाज़े के पास लिखा था,
"भाई तेरी जिंदगी झंड बनने वाली है, भगवान है तेरे साथ"
मैंने मन ही मन भगवान को याद किया और सोचा कि
जैसे–तैसे दिन कट ही जायेंगे।

तभी एक और लाइन दीवार पर लिखी देखी
"फोटो स्टेट की दुकान पर काले मुँह वाले लड़के के पास सारे नोट्स मिल जायेंगे।
"ये सारी पंक्तियाँ बारी–बारी मुझे कभी डरा और कभी गुदगुदा रहीं थीं और
हॉस्टल के इस कमरे की कहानी बता रही थी।
सभी ने अपने–अपने हिस्से के किस्से किए थे बयाँ,
तभी मैंने अपनी अलमारी खेली तो मैं रह गया हैरान
पंक्ति में लिखा था,

"चिंता मत कर भाई तेरे भाई ने इसी कमरे से टॉप किया है (नीचे से)"
इस पंक्ति को पढ़ कर मेरी हँसी छूट गयी और में मन ही मन बोला
कि सबके अपने–अपने अनुभव और नतीजे होते हैं।
लेकिन मैं आज तक उस लाइन को नहीं भुला पाया
जो मेरे बेड की स्टडी टेबल के पास लिखी हुई थी।
"भाई यहाँ नींद कम और सपने ज्यादा पूरे होते हैं।"
मैं बाहर का दृश्य देखने के लिए खिड़की पर गया तो वहाँ पर भी एक पंक्ति थी चस्पा,
"कैंटीन वाला शर्मा अंकल सबकी खबर है रखता"

हरि शंकर शर्मा
सहायक प्रशिक्षक
भारोत्तोलन, पटियाला (हिन्दी पखवाड़ा प्रथम पुरस्कार विजेता)

'कर्म ही धर्म है': जीवन के प्रति एक दृष्टिकोण

'कर्म ही धर्म है' जीवन का एक ऐसा दृष्टिकोण है जो कर्तव्यों के ईमानदारीपूर्ण निर्वहन को सर्वोच्च पूजा मानता है। यह भाग्य के भरोसे बैठने के बजाय निरंतर प्रयास, संघर्ष और मेहनत को सफलता की कुंजी बताता है। यह विचार सिखाता है कि निस्वार्थ कर्म से ही व्यक्तिगत विकास और सामाजिक समृद्धि संभव है।

'कर्म ही धर्म है' के मुख्य बिंदु:

- **परिभाषा और महत्व:** कर्म से तात्पर्य केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि हर वह कार्य है जो हम पूरे समर्पण और ईमानदारी से करते हैं। इसे ईश्वर की पूजा माना गया है।
- **भाग्य बनाम कर्म:** यह दर्शन भाग्य को कम और कर्म को अधिक महत्व देता है। यदि कोई कर्म नहीं करता, तो भाग्य भी साथ नहीं देता।
- **निष्काम कर्म:** गीता के अनुसार, फल की चिंता किए बिना अपना कर्तव्य (धर्म) निभाना ही सच्चा कर्म है।
- **जीवन में दृष्टिकोण:** यह दृष्टिकोण भय के स्थान पर ज़िम्मेदारी की भावना जगाता है। यह सिखाता है कि आपके कर्म ही आपके जीवन को सुखी या दुखी बना सकते हैं।
- **सफलता का मूलमंत्र:** जीवन के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण, जो संघर्ष को सफलता का आधार मानता है।
- **जैसा करोगे, वैसा भरोगे:** यह कर्म का मूल सिद्धांत है, जहाँ आपके हर कार्य, सोच और भावना का एक ऊर्जा उत्पन्न होती है और वही ऊर्जा आपको लौटकर मिलती है।

जो व्यक्ति कर्म पर विश्वास करता है वह व्यक्ति को एक अच्छा इंसान, निडर, ज़िम्मेदार, दूसरों का सम्मान करने वाला, दूसरों की सहायता करने वाला, सच की राह पर चलने वाला, गलत कार्य का विरोध करने वाला, दूसरों को भी कर्म के प्रति शिक्षा देने या प्रोत्साहित करने वाला, सकारात्मक सोच/दृष्टिकोण रखने वाला, मेहनत करने वाला, कोई भेद–भाव न करने वाला, सभी के प्रति प्रेम की भावना रखने वाला जैसे– इंसान, जीव–जन्तु, पेड़–पौधे इत्यादि। वह एक ऐसा व्यक्ति बन जाता है जिससे वह निस्वार्थ कर्म करने से अपना व्यक्तिगत विकास करता है और समाज को समृद्ध बनाता है।

'कर्म ही धर्म है' इसीलिए हमें कर्म करते जाना चाहिए फल अपने आप हमें मिलेगा, यही संसार का नियम है।

अनु कुमारी
डाटा एंट्री ऑपरेटर
समन्वय प्रभाग/ खेल पुस्तकालय
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

"साहित्य मनुष्य के भीतर छिपे सत्य को उजागर करता है।"–श्रीलाल शुक्ल

जीवन की अनमोल यात्रा

जीवन ईश्वर द्वारा दिया गया सबसे अनमोल उपहार है। यह केवल साँस लेने का नाम नहीं, बल्कि सीखने, समझने और आगे बढ़ने की एक निरंतर प्रक्रिया है। जीवन कभी सुख का एहसास कराता है तो कभी दुख की कसौटी पर परखता है, पर यही उतार–चढ़ाव इसे सार्थक बनाते हैं।

जीवन हमें हर मोड़ पर कुछ न कुछ सिखाता है। कठिन परिस्थितियाँ हमें मजबूत बनाती हैं और असफलताएँ, सफलता का मार्ग दिखाती हैं। जो व्यक्ति जीवन की चुनौतियों से घबराने के बजाय उनका सामना करता है, वही सच्चे अर्थों में जीवन जीना सीखता है।

आज की भागदौड़ भरी दुनिया में हम अक्सर जीवन की वास्तविक खुशियों को भूल जाते हैं। सफलता, धन और प्रतिष्ठा की दौड़ में हम अपनों के साथ बिताए गए पलों और मानसिक शांति को नज़रअंदाज कर देते हैं। जबकि सच्चा जीवन वही है जिसमें संतुलन, संतोष और प्रेम हो।

जीवन का उद्देश्य केवल स्वयं के लिए जीना नहीं, बल्कि दूसरों के लिए भी कुछ अच्छा करना है। सेवा, करुणा और सहयोग से ही जीवन को वास्तविक अर्थ मिलता है। जब हम किसी के चेहरे पर मुस्कान लाते हैं, तभी जीवन की सुंदरता का अनुभव होता है।

अंततः, जीवन क्षणभंगुर है। इसलिए हर पल को सकारात्मक सोच, अच्छे कर्म और सच्चे संबंधों के साथ जीना चाहिए। यही जीवन की सच्ची सफलता और सार्थकता है।

शालिनी कैन
डाटा एंट्री ऑपरेटर
क्षमता निर्माण प्रभाग
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

यादों का सफर और मेरी तन्हाई

आज फिर वो भीनी खुशबू ने मुझे महकाया,
कुछ भूली बिसरी यादों को ज़हन में गुनगुनाया,
दबा था जिन यादों का कतरा कहीं ख्यालों में,
सामने आ कर आज आँखों में झलक आया।

जो बचपन खो गया था फिर लौट सामने आया,
दोस्तों की किलकारियों ने फिर मन को गुदगुदाया,
बेफिक्र, बेखबर हर पल में मन मुस्कुराया,
आज मुझे दिल से दिल का मिलन ही भाया,
याद आ रहा है मुझे वो माँ का प्यार,
वो पिता की डाँट और फिर दुलार,
ना थे ज्यादा सपने, ना चाहत अपार,
था तो बस दादा, दादी का प्यार बेशुमार।

वो मिट्टी की खुशुबू और चूल्हे की रोटी,
वो हांडी की सब्जी, सिल–बट्टे की चटनी,
मुझे याद आ रहा है वो गुज़रा जमाना,
जब खाते थे अपने सब यारों संग खाना।
फिर एक हवा का झोंका मुझे खींच लाया,
उन यादों की गलियों से, जहाँ था मेरा साया,
टूटा सब भ्रम जब हकीकत को पाया,
ना बचपन, ना दोस्त, ना ही बड़ों का साया।

एक वीरान घर पर खड़ा खुद को पाया,
बस पत्थर, लकड़ी और मिट्टी की काया,
देरी का अहसास बहुत देर से आया,
अब अपना ही घर लगने लगा पराया।
सोचता हूँ ये अहसास अब क्यूँ मुझको आया,
ये मेरी ही सोच है या जीवन की है माया,
कि ना आया जब मुझको माँ बाबा ने बुलाया,
और आज मैंने खुद को भी अकेले ही पाया।

हिमांशु तिवारी
प्रमुख परियोजना अभियंता
संचार नेटवर्क विभाग, रेलवे सूचना प्रणाली केंद्र (क्रिस)

"भाषा मनुष्य की आत्मा की आवाज़ है।"–माखनलाल चतुर्वेदी

महादेवी जी के काव्य में बिम्ब विधान

'बिम्ब रचना काव्य का मुख्य व्यापार है। बिम्बों के द्वारा कवि वस्तु, गुण, विशेषता, विचार, घटना, व्यापार, मूर्त एवं अमूर्त पदार्थों तथा मानसिक स्थितियों को प्रत्यक्ष तथा इंद्रिय ग्राह्य बनाता है। यही काव्य अन्य शास्त्रों से भिन्न है, क्योंकि काव्य रचना की प्रथम–प्रक्रिया बिम्ब रचना ही है। आधुनिक हिंदी आलोचना में 'बिम्ब' को 'इमेज' का हिंदी रूपांतर माना है। हिंदी के छायावादी कवि सुमित्रानंदन पंत ने बिम्ब पर प्रकाश डालते हुए कहा है– "कविता के लिए चित्र भाषा की आवश्यकता होती है। उसके शब्द सस्वर होने चाहिए जो बोलते हो, सेब की तरह जिनकी रस–मधुर लालिमा भीतर न समा सकने के कारण, बाहर छलक पड़े, जो अपने भाव को अपनी ही ध्वनि में आँखों के आगे चित्रित कर सके, जो झंकार में चित्र और चित्र से झंकार हो अतएव काव्यभाषा में 'बिम्ब विधान' निःसंदेह महत्वपूर्ण है। 'बिम्ब' के रूप में प्रत्येक कवि की व्यक्तिगत अनुभूति होती है और वह यहीं व्यक्तिगत अनुभूति को काव्य के माध्यम से समष्टिगत अनुभूति के रूप में परिणत करता है, जिससे पाठक या श्रोता उसके हृदय की भावनाओं को उसी की भांति अनुभव कर सके। प्रसिद्ध कवि अज्ञेय ने कवि का शाश्वत धर्म नहीं माना है।

वास्तव में काव्य–रचना में दो वस्तुओं की अति आवश्यकता होती है– दर्शन की तथा वर्णन की। दर्शन से तात्पर्य मानसिक बिम्ब या कल्पना ही है और वर्णन से तात्पर्य अभिव्यक्ति में प्रयुक्त भाषिक कला तत्व। इसलिए प्राचीन ऋषियों ने जिन्होंने मन द्वारा जिन देवताओं के स्वरूप को देखा या दर्शन किया या बिम्बात्मक प्रस्तुति की वे ऋषि कहलाए। केवल दर्शन से व्यक्ति दार्शनिक होता है, अतः कवि वह है जो अनुभूति के अनुरूप भाषा की अभिव्यक्ति करे। अर्थात् दृष्टि एवं सृष्टि का मंजुल सामंजस्य ही काव्य है एवं काव्य में अभिव्यक्ति कवि की कल्पना काव्य–बिम्ब।'बिम्ब' शब्द का सामान्य अर्थ है, 'छाया', 'प्रतिमा' या 'प्रतिबिंब'। अतः बिम्ब से तात्पर्य है किसी मूर्त या अमूर्त का मनश्चित्र। काव्य में यह समूरतन व्यापार कहलाता है। तह जार्ज ब्हाइली ने कहा है– "बिम्ब किसी अमूर्त विचार अथवा भावना की पुनर्निर्मिती है।"

काव्य में बिम्ब की उपादेयता कई तत्वों में निहित होती है। जैसे– भावनाओं को उत्तेजित करने की शक्ति, भावों को तीव्रता के साथ प्रस्तुत करने की शक्ति,अभिव्यक्ति में नूतनता एवं ताजगी, उर्वरता एवं औचित्य। जहाँ तक महादेवी जी के काव्य में बिंबविधान का प्रश्न है तो इनके काव्य का आधार भारतीय आदर्शवाद है जो जीवन एवं जगत में एक सत्य की अखंड सत्ता मानता है। जगत के खंड–खंड में अखंडता प्राप्त कर लेना ही सत्य है। उसकी विषमताओं में सामंजस्य देखना ही सौन्दर्य है। महादेवी जी इन्हीं तथ्यों को साहित्य में साध्य एवं साधन मानती हैं। सत्य काव्य का साध्य और सौन्दर्य उसका साधन है। मनुष्य का जीवन भी चक्र के पहिये की तरह घूमता है और उस दौरान वह अपने लिए सहस्त्र बंधनों का आविष्कार कर लेता है और फिर बंधनों से कसकर उनको तोड़ने में सारी शक्तियाँ लगा देता है। 'छायावाद' का मूल कारण भी मनुष्य के इसी स्वभाव में छिपा है। वास्तव में यह भारतीय विचारधारा अद्वैतवाद का ही प्रोद्‌दास है। महादेवी के छायाकाव्य में आदि कवि के करुणा का बिम्ब प्रतिबिंबित होता है अर्थात यह चिंतन के क्षणों की अनुभूति है, अतः स्वभावतः अंतर्मुखी कविता है। मूर्त–अमूर्त के सामंजस्य की पूर्णता है और इन्हीं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में क्रमशः बिम्ब दृष्टिगत होता है। इनके काव्यों में बिम्बों की अभिव्यक्ति में जीवंत अनुभवों के आधार पर नए उपमानों का प्रयोग हुआ है।

भाव प्रधान कवयित्री महादेवी के काव्य में भावबिम्बों की संप्रेषणीयता अद्‌भुत है–

"एक सुधि अनजान उनकी,
दूसरी पहचान मन की,
पुलक का उपहार दूँ या
अश्रु–भार अशेष भेजूँ!"

एक अन्य भावबिम्ब दृष्टव्य है–

''बिछाती थी सपनों के जाल,
तुम्हारी वह करुणा की कोर,
गई वह अधरों की मुस्कान,
मुझे मधुमय पीड़ा में बोर।''

महादेवी जी की संवेदन शक्ति अद्भुत है, जो सहृदय संवैध बिम्बों की अद्भुत योजना में दृष्टिगत होती है। चाक्षुष बिम्बों के माध्यम से महादेवी ने मन के रोग, द्वेष, नैराश्य, विरह, वेदना आदि मनों भावों को प्रकट किया है, निम्न पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

''आँखों में रात बिताकर
विधु ने पीला मुख फेरा,
आया फिर चित्र बनाने,
प्राची में प्रात चितेरा।''
''रजनी के श्याम कपोलों पर
ढरकीले श्रम के कन!''
''हँस देता जब प्रात सुनहरे
अंचल में बिखरा रोली।''
''नीलम मंदिर की हीरक
प्रतिमा सी हो चपला निस्पंद।''

उपरोक्त सभी पंक्तियों में श्याम वर्ण, स्वर्ण वर्ण और नीलम वर्ण का चाक्षुष बिम्ब उपस्थित होता है, चित्रकत्री होने के कारण ही उनके काव्य में भी रंगों का वर्णन एक काल्पनिक मूर्तमान चित्र उपस्थित करता है। काले बादलों में विद्युत को 'नीलम मंदिर में हीरक प्रतिमा' कहकर उन्होंने एक समूर्तन बिम्ब उपस्थित किया है। चाक्षुष बिम्बों के अतिरिक्त अन्य इंद्रिय परक बिम्बों का प्रयोग भी कम अद्भुत छटा नहीं बिखेरता।

जैसे– ''शशि को छूने मचली सी,
लहरो का कर कर चुम्बन,
बेसुध तम की छाया में,
तटिनी करती आलिंगन।''
''वह सौरभ हूँ मैं जो उड़कर,
कलिका में लौट नहीं पाता।''
''किसी जीवन की मीठी याद,
लुटाता हो मतवाला प्रात।''

इस प्रकार महादेवी वर्मा जी के काव्यों में प्राकृतिक बिम्बकों की निराली छटा दिखाई देती है।

शेफाली दुष्यन्त
सहायक निदेशक (राजभाषा) प्रभारी
विद्युत प्राधिकरण

''लेखन का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, जागरण भी है।''–अमृतलाल नागर

मेरी रेल यात्रा

मैं जब बारहवीं कक्षा के बाद जयपुर इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ने गई, तब से अक्सर रेल यात्रा करती हूँ। जब भी कोटा से निकलती थी तो माँ समझाती थीं कि अपना समान संभाल कर रखना और पैसों का पर्स सुरक्षित रखकर कहीं मत जाना। इतने वर्ष हो गए, अब मैं 37 वर्ष की सेवा पूर्ण करके सेवानिवृत्त हो चुकी हूँ, परंतु ईश्वर की कृपा से पहले कभी मेरा सामान चोरी नहीं हुआ।

अब मैं दिल्ली में डिस्कॉम में कंसल्टेंट के पद पर कार्यरत हूँ और अक्सर महीने में एक–दो बार दिल्ली से जोधपुर रेल से आती–जाती हूँ। इस बार भी 10 नवम्बर 2025 को मैं जोधपुर से सायं 6:30 बजे जोधपुर–सराय रोहिल्ला सुपरफास्ट रेल में चढ़ी। मेरी नीचे वाली बर्थ थी। सामने एक युवक लेटा हुआ था तथा साइड वाली बर्थ पर एक युवक, एक युवती और दो बच्चे थे। मेरी पड़ोसी सीट पर भी एक व्यक्ति बैठा हुआ था, जो यात्रा के दौरान सामान्य व्यवहार कर रहा था।

मेरे पास दो बैग थे–एक बड़ा बैग और एक छोटा बैग। बड़े बैग में मेरे कपड़े, कुछ आवश्यक दस्तावेज़ तथा कुछ नकद रुपये भी रखे हुए थे, जो बाद में मेरे घर पहुँचने में सहायक सिद्ध हुए। बड़े बैग को मैंने अपनी बर्थ के नीचे सुरक्षित रख दिया था। छोटे बैग में मेरा मोबाइल फोन, आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक एटीएम कार्ड, घर और ऑफिस की चाबियाँ तथा अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज़ थे। छोटे बैग को जंजीर से बाँधकर मैंने अपनी बर्थ के नीचे रखा और सो गई।

रात लगभग 2:30 बजे गाड़ी किसी स्टेशन पर रुकी। हलचल होने पर मेरी आँख खुली। मैंने देखा कि मेरी पड़ोसी सीट पर बैठा व्यक्ति जल्दी–जल्दी उतर गया। उसका व्यवहार संदिग्ध लगा, पर मैंने उस समय अधिक ध्यान नहीं दिया।

कुछ समय बाद जब मैंने अपना छोटा बैग देखा तो वह गायब था। मैं घबरा गई। बड़ा बैग सुरक्षित था, पर छोटा बैग चोरी हो चुका था। सहयात्रियों ने भी बताया कि बीच में उतरने वाला व्यक्ति संदिग्ध प्रतीत हो रहा था।

छोटे बैग के साथ बड़े बैग की चाबियाँ भी चली गई थीं। एक सहयात्री ने मेरी सहायता कर बड़े बैग का लॉक खुलवाने में मदद की, जिससे मैं उसमें रखी नकद राशि निकाल सकी और आगे की यात्रा कर सकी।

दिल्ली पहुँचकर मैंने आर.पी.एफ. में शिकायत दर्ज करवाई। संदिग्ध व्यक्ति के संबंध में जानकारी माँगने पर एस.एच.ओ. ने यह कहते हुए विवरण देने से मना कर दिया कि व्यक्तिगत जानकारी साझा नहीं की जा सकती।

बाद में जब मैंने अपने मोबाइल का आई.एम.ई.आई. नंबर के माध्यम से ट्रैक करवाया, तो उसकी अंतिम लोकेशन रेवाड़ी पाई गई। यह जानकारी मैंने रेवाड़ी के एस.एच.ओ. के साथ भी साझा की, परंतु इसके बावजूद आज तक न तो मेरा मोबाइल मिला और न ही मेरा बैग बरामद हुआ।

दिसंबर 2025 में अपनी अगली यात्रा के दौरान मैंने टी.टी. एवं रेलवे स्टाफ से पुनः जानकारी ली। उन्होंने बताया कि रेवाड़ी स्टेशन चोरी की घटनाओं के लिए कुख्यात है, जहाँ प्रतिदिन 3–4 ऐसी घटनाएँ दर्ज होती हैं, परंतु न तो किसी को पकड़ा जाता है और न ही सामान बरामद होता है। यह सुनकर मुझे अत्यंत दुःख हुआ।

कोमल किरण
कार्यालय सहायक, ऊर्जा दक्षता ब्यूरो

पर्यावरण परिवर्तन और भारत की चुनौतियाँ

1. प्रस्तावना 'पर्यावरण' शब्द का उद्भव दो शब्दों के योग द्वारा होता है जिसमें प्रथम शब्द 'आवरण' का अर्थ है 'वातावरण' अथवा 'घेरा'। अर्थात् प्रकृति में मनुष्य के चारों ओर जो भी जैविक, अजैविक वस्तुएं विद्यमान हैं वह सब मिलकर 'पर्यावरण' का निर्माण करती हैं।

मनुष्य के जन्म के साथ से ही मरणोपरान्त तक पर्यावरण का अस्तित्व दृष्टिगत प्रतीत होता है। पृथ्वी, जल, आकाश, मिट्टी, हवा, वन, पेड़, पहाड़, नदियां, झरने इत्यादि समस्त प्राकृतिक संसाधन पर्यावरण का हिस्सा हैं। प्राचीन काल में मनुष्य प्रकृति एवं प्राकृतिक संसाधनों के प्रति कृतज्ञ एवं उत्तरदायी व्यवहार रखते थे, वे प्रकृति की पूजा करते थे एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति उत्तरदायित्व का उचित निर्वहन भी करते थे।

बदलते सामाजिक परिवेश, बढ़ते हुए नगरीकरण, औद्योगिक इकाइयों के विस्तार, बढ़ती जनसंख्या, प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित दोहन इत्यादि के कारण पर्यावरण दिन–प्रतिदिन प्रदूषण का शिकार हो रहा है। पर्यावरण प्रदूषण के वर्तमान हालात को देखते हुए यह प्रतीत होता है कि यदि समय रहते उचित देखरेख एवं निस्तारण का अभाव रहा तो वह दिन दूर नहीं जब प्रकृति की गोद में पलने वाला मनुष्य भीषण सुनामी, बाढ़, दावानल (प्राकृतिक जंगली आग), महामारियों, भुखमरी जैसी तमाम विपत्तियों में स्वयं का सर्वनाश सुनिश्चित कर लेगा।

2. 'पर्यावरण परिवर्तन' से आशय एवं प्रभाव पर्यावरण का परिवर्तन से आशय केवल एक दिन, एक महीना या एक साल में होने वाली कोई सामान्य घटना नहीं है वरन् यह तो दिन–प्रतिदिन अनवरत रूप से विनाश की तरफ बढ़ता वह कदम है जिसके परिणाम मात्र की कल्पना से मन आशंकित हो उठता है। पर्यावरण के परिवर्तन के कुछ प्रमुख कारक निम्नानुसार हैं: –

- भूमि प्रदूषण
- जल प्रदूषण
- वायु प्रदूषण
- ध्वनि प्रदूषण
- ग्लोबल प्रदूषण (वार्मिंग)
- अनियन्त्रित जनसंख्या
- घटते प्राकृतिक संसाधन
- औद्योगिक इकाइयों का विस्तारीकरण
- बढ़ता नगरीकरण एवं घटते जंगल

उपरोक्त लिखित बिन्दुओं पर यदि प्रकाश डाला जाए तो निश्चित रूप से यह स्पष्ट होता है कि अनियन्त्रित जनसंख्या के कारण न केवल प्राकृतिक संसाधनों का ह्रास हो रहा है अपितु बढ़ते हुए शहरों एवं औद्योगिक इकाइयों के विस्तार के कारण विभिन्न प्रकार के प्रदूषण (जो कि समेकित रूप से पर्यावरण प्रदूषण कहलाते हैं) बढ़ते जा रहे हैं।

उपरोक्त बिन्दुओं में से यदि सर्वाधिक रूप से देखा जाए तो 'ग्लोबल वार्मिंग' पर्यावरण परिवर्तन का प्रमुख कारक है एवं लम्बे समय से इससे होने वाले दुष्प्रभावों को नजरअंदाज करना पूर्णतया विनाश को चुनौती देने जैसा है। एक शोध

"भाषा मनुष्य के विचारों की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है।"–विद्यानिवास मिश्र

के अनुसार हरित क्रान्ति के पश्चात् सन् 1750 ई. से लेकर अब तक पृथ्वी के सामान्य तापमान में 0.7 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि देखी गयी है एवं एक अनुमान के अनुसार सन् 2060 तक यह तापमान वृद्धि 2 डिग्री सेल्सियस तक हो जाएगी। पृथ्वी के तापमान में यह वृद्धि ग्लेशियर पर मौजूद बर्फ़ को पिघला देगी जिसके प्रभाव स्वरूप भीषण समुद्री लहरें, सुनामी, समुद्री तूफान एवं चक्रवात विनाश मचाएँगे।

यदि इसके अतिरिक्त अन्य बिन्दुओं की बात करें तो भूमि प्रदूषण के चलते पृथ्वी की उर्वरक शक्ति कमजोर होती जा रही है, जिसके कारण फसलों एवं पैदावार में निरन्तर कमी होती जा रही है।

3. पर्यावरण परिवर्तन का मानव जीवन पर प्रभाव पर्यावरण परिवर्तन के कारण मानव जीवन के विभिन्न कारकों पर दुष्प्रभाव प्रतीत होता है जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैंः –

- **प्राकृतिक संसाधनों का अभाव** प्राकृतिक संसाधनों जैसे जल, वायु, भोजन, कृषि, भूमिगत संसाधन पेट्रोल, डीजल, कोयला इत्यादि का अनुचित दोहन होने से प्राकृतिक भण्डारों में निरन्तर कमी आ रही है। भारत शहर के चेन्नई एवं बेंगलुरु शहरों समेत कई शहरों में भूमिगत जल स्रोतों को शून्य घोषित किया जा चुका है।

- **प्रदूषण जनित विकास एवं बीमारियाँः** जल प्रदूषण, दूषित जल, जहरीली वायु एवं गैसें मानव जीवन में विभिन्न घातक बीमारियों को जन्म दे रहे हैं। प्लास्टिक बर्तनों एवं थैलियों का बढ़ता उपयोग कैंसर जैसी लाइलाज बीमारियों को बढ़ावा दे रहे हैं। वाहनों, रेफ्रिजरेटर, हीटर, एयर कण्डीश्नर एवं औद्योगिक इकाई एवं कल–कारखानों से निकला धुआँ एवं जहरीली गैसें वायु मण्डल की ओजोन परत को निरन्तर रूप से कमजोर बना रही है जिसके कारण सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों से मनुष्यों में विभिन्न प्रकार के मानसिक एवं त्वचा सम्बन्धी रोग पनप रहे हैं। साथ ही 'ग्लोबल वार्मिंग' भी इसी के कारण उपजी समस्या है।

- **बढ़ते शहर एवं घटते जंगल नगरों** एवं शहरों के लगातार विकास के चलते जंगलों का कटाव किया गया। मानव ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के चलते औद्योगिक इकाइयों का विस्तार किया, जिससे भारी मात्रा में वृक्षों की कटाई हुई। आनुपातिक रूप से जंगली पशुओं, मनुष्यों एवं वृक्षों की मात्रा में केवल मनुष्य ही अपनी संख्या बढ़ाते रहे, परिणामस्वरूप समय पर वर्षा का न होना या अतिवृष्टि होना, भूस्खलन एवं अन्य विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाएं आती रहती हैं।

- **कृषि पर प्रभाव** समय पर वर्षा का न होना, या अतिवृष्टि अथवा ओलावृष्टि होना, मानसून का समय पर न आना, भूस्खलन, मिट्टी की उर्वरक शक्ति का कमजोर या समाप्त हो जाना, पॉलीथीन के उपयोग के कारण भूमि का उपजाऊपन समाप्त होना या बंजर हो जाना। उपरोक्त तमाम प्रभावों के लिए पूर्ण रूप से पर्यावरण परिवर्तन ही उत्तरदायी है।

- **मनुष्य जन–जीवन पर प्रभाव** उपरोक्त लिखित समस्त बिन्दुओं को देखने से प्रतीत होता है कि पर्यावरण परिवर्तन के कारण मनुष्य जीवन विभिन्न आपदाओं एवं चुनौतियों का सामना कर रहा है परन्तु फिर भी मनुष्य हर आपदा के प्रबन्धन की कोशिश में किसी न किसी कृत्य के कारण अन्य प्राकृतिक संसाधन का दोहन कर बैठता है। बढ़ती बीमारियों, प्राकृतिक आपदाओं, मानसिक अस्थिरता, महामारियां, प्राकृतिक आग 'दावानल' इत्यादि तमाम परेशानियाँ मानव जीवन को समय–समय पर आगाह करती रहती हैं कि प्रकृति यदि निर्माण कर सकती है तो वह विनाश का भी सामर्थ्य रखती है।

- **पर्यावरण परिवर्तन के सापेक्ष भारत देश की चुनौतियाँः** पर्यावरण परिवर्तन के सापेक्ष प्रत्येक देश, चाहे वह

संसार में किसी भी हिस्से या भौगोलिक परिवेश में हो, के लिए चुनौतियाँ है कि किस प्रकार मानव जीवन के समग्र विकास के साथ–साथ समानान्तर रूप से प्राकृतिक पर्यावरण एवं प्रकृति के साथ सामन्जस्य स्थापित करें। यदि भारत देश की बात करें तो भौगोलिक दृष्टि से यह सबसे सम्पन्न राष्ट्रों में से एक राष्ट्र था परन्तु पार्श्व में ज्ञान के अभाव एवं अंग्रेजी हुकूमत के कारण विभिन्न संसाधनों का बड़े पैमाने पर अनुचित दोहन हुआ।

इसके बावजूद भी आज हम सम्पन्न राष्ट्रों की गिनती में आते हैं, परन्तु फिर भी कुछ चुनौतियाँ है जो पर्यावरण परिवर्तन की दृष्टि में हमारे लिए चुनौतीपूर्ण हैं जिनमें से कुछ निम्न हैंः–

- जनसंख्या नियन्त्रण।
- अधिकाधिक मात्रा में वृक्षारोपण।
- प्राकृतिक संसाधनों के अनुचित दोहन पर रोक।
- वाहनों एवं कल–कारखानों एवं औद्योगिक इकाइयों से निकले दूषित धुएँ, पानी एवं अपशिष्ट पदार्थों का उचित रूप से निस्तारण।
- प्राकृतिक भूमिगत संसाधनों जैसे पेट्रोल, डीजल, कोयला, विभिन्न धातुएँ इत्यादि के दोहन का निर्धारण।
- अधिकाधिक मात्रा में बायो–गैस एवं सोलर ऊर्जा संचालित उपकरणों का विकास एवं संचालन।
- वनों एवं जंगलों की सुरक्षा एवं विकास।
- वन्य – प्राणियों की सुरक्षा का निर्धारण।
- मांसाहार की बढ़ती प्रवृत्ति पर रोकथाम।
- प्लास्टिक एवं पॉलीथीन के उपयोग पर रोक।

उपरोक्त लिखित चुनौतियों एवं उनके उपायों पर कार्य कर, भारत देश पुनः एक सुखी, सम्पन्न एवं खुशहाल देश बन सकता है।

5. उपसंहार 'प्रकृति' को वेदों में 'जननी' की उपमा प्रदान की गई है। प्रकृति में ही सृजन एवं विनाश समाहित हैं। अतः मनुष्य को समय रहते पर्यावरण के प्रति सजग एवं उत्तरदायी रवैया अपनाते हुए इसके संरक्षण एवं विकास पर ध्यान देना चाहिए। केवल सरकार पर निर्भर रहना ही उपाय नहीं है अपितु देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि पर्यावरण के प्रति अपने दायित्वों का उचित निर्वहन करें एवं अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुखी, सम्पन्न एवं खुशहाल देश बनाने की कोशिश करें ,जो कि न केवल आर्थिक रूप से बल्कि प्राकृतिक रूप से भी परिपूर्ण हो। मनुष्य का उद्भव भी प्रकृति से ही हुआ है और यह बात उससे बेहतर कोई और नहीं समझेगा जब तक कि वह कोई बड़ा विनाश नहीं देख लेता।

हरिशंकर शर्मा
सहायक प्रशिक्षक (भारोत्तोलन)
हिंदी पखवाड़ा प्रथम पुरस्कार विजेता

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्तोत्र है।"–सुमित्रानंदन

पथिक

एक–एक यात्रा कठिन और मैं विकल रहा,
जब भी यह मुसाफ़िर घर से निकल रहा।
जीवन एक सफर सा निकल रहा,
कभी पहुँचा मंजिल पर कभी विफल रहा।
सीखा बहुत छोटे–छोटे पड़ाव से,
फिर भी कुछ में असफल रहा।
डोर टूटेगी नहीं जब तक साँसों की,
अभिलाषा पल–पल बदल रही।
निकला जब मैं घर से सफर को,
तब पता चला पूरा जनसैलाब साथ चल रहा।
देखा उस नजर से सभी मुसाफ़िर लगे,
जब से मैं एक मुसाफ़िर बन रहा।
भटकते–भटकते ही सही राहों पर,
एक–एक गज मंजिल के पास चल रहा।
दूरी को देख क्यों हो हताश,
कुहाँसे के आगे भी तो सूरज निकल रहा।
बहुत अजनबी भी मिलेंगें पथिक,
भीड़ में तू अकेला तो नहीं चल रहा।

जितेन्द्र कुमार मद्धेशिया,
सशस्त्र सीमा बल मुख्यालय, नई दिल्ली

डिजिटल युग में पुस्तकालयः सप्रू हाउस पुस्तकालय (आईसीडब्ल्यूए) में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी – सोशल मीडिया का विकास और प्रभाव

पुस्तकालयों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी सोशल मीडिया (ICT-SM) के विकास ने उपयोगकर्ताओं से जुड़ने के तरीकों को पूरी सेवाओं, कार्यक्रमों और नई पुस्तकों की जानकारी तुरंत साझा करते हैं। सोशल मीडिया ने उपयोगकर्ताओं की सहभागिता बढ़ाने का तरीका बदल दिया है। फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से पुस्तकालय अब अपने संसाधनों, प्रतिक्रिया प्राप्त करने, डिजिटल साक्षरता को प्रोत्साहित करने और भौतिक सीमाओं से परे एक ऑनलाइन समुदाय बनाने में सहायक है, जिससे पुस्तकालय सेवाएँ अधिक परस्पर संवादात्मक, सुलभ और उपयोगकर्ता–केंद्रित बन गई हैं। भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA) सप्रू हाउस पुस्तकालय एक आधुनिक, डिजिटल और उपयोगकर्ता–केंद्रित अनुसंधान पुस्तकालय के रूप में विकसित हुआ है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग से सेवाओं व संसाधनों की पहुँच बढ़ी है तथा विद्वानों और शोधकर्ताओं के साथ संवाद और सहभागिता सशक्त हुई है।

1. भूमिका–पुस्तकालयों में सोशल मीडिया का विकास

आधुनिक युग में पुस्तकालय विशेषज्ञों की भूमिका अधिक गतिशील और चुनौतीपूर्ण हो गई है। पुस्तकालय विशेषज्ञों ने उपयोगकर्ताओं की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सूचना के संग्रहण, पुनर्प्राप्ति, प्रबंधन और प्रसंस्करण हेतु नई–नई दक्षताएँ अपनाई हैं।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया (ICT-SM) के आगमन के साथ पारंपरिक पुस्तकालय क्रमशः स्वचालित, डिजिटल, हाइब्रिड और वर्चुअल पुस्तकालयों में परिवर्तित हो गए हैं। आज ICT-SM सूचना के प्रसार का एक अत्यंत शक्तिशाली माध्यम बन चुका है, जो उपयोगकर्ता समुदाय और लाइब्रेरी प्रोफेशनल्स की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करता है। उपयोगकर्ताओं की मांग के अनुसार सूचना को बेहतर, तेज़ और अधिक प्रभावी ढंग से उपलब्ध कराने में ICT-SM की महत्वपूर्ण भूमिका है। अब पुस्तकालय सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया की सहायता से अपने उपयोगकर्ताओं के लिए नई सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

पारंपरिक पुस्तकालयों में सूचना को भौतिक रूप में संग्रहित किया जाता था और सामग्री को सीमित दायरे में रखा जाता था। सोशल मीडिया ने सूचना विज्ञान एवं संचार प्रौद्योगिकी की सहायता से केवल एक क्लिक में विश्व–भर में सूचना के प्रसार की एक नई अवधारणा के रूप में जाना जाता है। पिछले एक दशक में इसका समाज में अत्यंत तीव्र गति से विस्तार हुआ है। डिजिटल संसाधनों के अनेक लाभ मुद्रित संसाधनों की तुलना में अधिक हैं, इसलिए पुस्तकालय भौतिक रूप से उपलब्ध सामग्री को डिजिटल स्वरूप में परिवर्तित कर रहे हैं। पुस्तकालय अपने स्वयं के डिजिटल रिपॉज़िटरी बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

"हंसते–हंसते सच कह देना ही व्यंग्य की असली ताकत है।"–हरिशंकर परसाई

वर्तमान समय में डिजिटल साक्षरता ने सूचना खोजकर्ताओं को अपने दैनिक कार्यों के लिए संबंधित सूचना प्रौद्योगिकी (ICT) का उपयोग करने में सक्षम बनाया है। पुस्तकालय ज्ञान का प्रवेश द्वार है, जहाँ उपयोगकर्ता की मांग पर सूचना उपलब्ध कराई जाती है। पुस्तकालय और सूचना केंद्र उपयोगकर्ताओं की सूचना आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी– सोशल मीडिया (ICT-SM) नेटवर्किंग को अपनाने के प्रति अधिक जागरूक हो गए हैं।

इस युग में सूचना खोजकर्ता, शोधकर्ता और सूचना के प्रति रुचि रखने वाले लोग फेसबुक, ट्विटर, लिंक्डइन, अकादेमिया, फ़्लिकर, ब्लॉग, यूट्यूब, माय स्पेस आदि जैसे विकसित सोशल मीडिया नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। उपयोगकर्ता विभिन्न सोशल मीडिया साइट्स पर अपनी प्रोफ़ाइल बनाकर समान रुचि वाले समुदायों के साथ ज्ञान और कौशल साझा करते हैं, जैसे ऑनलाइन चर्चा मंच, चैट रूम और वर्चुअल संवाद आदि।

पुस्तकालय अपने परिसर के भीतर उपयोगकर्ताओं को इंटरनेट सहित बहुत–सी डिजिटल सुविधाएँ प्रदान करते हैं। आज उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं के अनुसार पुस्तकालय साइबर पुस्तकालयों में परिवर्तित हो रहे हैं।

2. सोशल मीडिया

सोशल मीडिया एक इंटरनेट आधारित उपकरण है, जो लोगों को सूचना, विचार, चित्र/वीडियो, आभासी समुदायों तथा नेटवर्कों का निर्माण करने, साझा करने अथवा आदान–प्रदान करने की सुविधा प्रदान करता है। सोशल मीडिया को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है– "यह इंटरनेट आधारित अनुप्रयोगों का एक समूह है, जो वेब 2.0 की वैचारिक एवं तकनीकी नींव पर आधारित है और उपयोगकर्ताओं को उपयोगकर्ता निर्मित सामग्री के सृजन एवं आदान–प्रदान की अनुमति देता है।"

पुस्तकालयों में सोशल मीडिया का उपयोग सूचना साझा करने के एक प्रभावी उपकरण के रूप में किया जाता है। इसके माध्यम से उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं के अनुसार सूचना प्रदान की जाती है, जिससे पुस्तकालय सेवाएँ अधिक सुलभ, त्वरित और उपयोगकर्ता–केंद्रित बनती हैं।

वर्तमान दशक में सोशल नेटवर्किंग साइट्स संचार का एक प्रभावी और लोकप्रिय माध्यम बन गई हैं, जो उपयोगकर्ताओं को निजी अथवा सार्वजनिक प्रोफ़ाइल बनाने तथा अपने नेटवर्क से जुड़े लोगों के साथ संवाद करने की सुविधा प्रदान करती हैं। ये साइट्स संदेश प्रेषण, ब्लॉगिंग, ऑडियो–विजुअल सामग्री साझा करना, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसी अनेक ऑनलाइन सेवाएँ उपलब्ध कराती हैं। वैश्विक समुदाय नई सूचनाओं, नवाचारों और जागरूकता प्राप्त करने के लिए इन प्लेटफ़ॉर्मों का व्यापक उपयोग कर रहा है, जहाँ समान रुचि वाले लोग ओपन एक्सेस वातावरण में जुड़कर ज्ञान का आदान–प्रदान करते हैं और निःशुल्क विशाल सूचना संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करते हैं।

वेब प्रौद्योगिकी के विकास को निम्नलिखित चरणों में समझा जा सकता है:

वेब 1.0: यह केवल रीड ओनली (Read Only) माध्यम के रूप में प्रारंभ हुआ, जिसमें उपयोगकर्ता केवल उपलब्ध जानकारी को पढ़ सकते थे, उसमें कोई परिवर्तन या सहभागिता संभव नहीं थी।

वेब 2.0: वेब 2.0 एक रीड/राइट (Read/Write) माध्यम के रूप में विकसित हुआ, जिसमें उपयोगकर्ताओं को न केवल सामग्री पढ़ने बल्कि उसे बनाने, संपादित करने और साझा करने की सुविधा मिली। इसे "रीड–राइट वेब" भी कहा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म का विकास हुआ। वर्ष 2005 से व्यापक रूप से प्रचलित वेब 2.0

ने उपयोगकर्ताओं को आपस में संवाद, सहभागिता और सहयोग करने के साथ–साथ स्वयं सामग्री निर्माण की क्षमता प्रदान की।

वेब 3.0: यह एक तकनीकी रूप से उन्नत माध्यम के रूप में विकसित हुआ, जो उपयोगकर्ताओं को रीड/राइट/एक्ज़ीक्यूट (Read/Write/Execute) की सुविधा प्रदान करता है। इसके अंतर्गत नई उपकरणों और तकनीकों का विकास हुआ है, जो वेब आधारित सेवाओं, शिक्षा तथा अधिगम (Learning) को अधिक प्रभावी और उपयोगकर्ता–केंद्रित बनाते हैं।

वेब 3.0 एक ऐसा युग है जिसमें सेमांटिक वेब, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, 3–डी वेब और वेब को डेटाबेस के रूप में उपयोग करने जैसी अवधारणाएँ शामिल हैं, जहाँ मशीनें न केवल जानकारी पढ़ती हैं बल्कि उसे समझकर उपयोगकर्ताओं से लगभग मानवीय तरीके से संवाद भी करती हैं। इस दौर में उपयोगकर्ता और वेब के बीच की दूरी समाप्त हो गई है और दोनों सह–निर्माण की निरंतर प्रक्रिया में जुड़े हैं। परिणामस्वरूप, इंटरनेट हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है, जहाँ हम कभी भी और कहीं भी निरंतर रूप से जुड़े रहते हैं।

3. भारतीय वैश्विक परिषद, सप्रू हाउस पुस्तकालय में सोशल मीडिया का विकास और प्रभाव

भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA) की स्थापना 1943 में एक गैर–राजनीतिक, गैर–लाभकारी थिंक टैंक के रूप में की गई थी, जिसे 2001 में संसद के अधिनियम द्वारा राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और विदेशी मामलों के अध्ययन के लिए समर्पित है तथा भारत के उपराष्ट्रपति इसके पदेन अध्यक्ष हैं एवं नई दिल्ली स्थित सप्रू हाउस इसका मुख्य केंद्र है, जिसका उद्घाटन 1955 में पंडित जवाहरलाल नेहरू जी द्वारा किया गया था, तथा 13 सितंबर 2023 को नवनिर्मित (पुनर्निर्मित) सप्रू हाउस पुस्तकालय का उद्घाटन भारत के माननीय उपराष्ट्रपति एवं भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA) के अध्यक्ष श्री जगदीप धनखड़ जी द्वारा हुआ।

यह भवन शैक्षणिक एवं बौद्धिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा है, जहाँ आज भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की बैठकों, सेमिनारों और पैनल चर्चाओं का आयोजन होता है। परिषद् ने 1947 का एशियन रिलेशन कॉन्फ्रेंस और 1994 का "यूनाइटेड नेशन्स एंड द न्यू वर्ल्ड ऑर्डर" जैसे ऐतिहासिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया और लगातार ऐतिहासिक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है।

4. सप्रू हाउस पुस्तकालय

भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA) पुस्तकालय, जिसे पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उद्घाटित किया था, भारत के प्रमुख और प्रतिष्ठित अनुसंधान पुस्तकालयों में से एक है। 1943 में स्थापित भारतीय वैश्विक परिषद, सप्रू हाउस पुस्तकालय ज्ञान और शोध का एक प्रतिष्ठित केंद्र है।

7 नवंबर 2025 को सप्रू हाउस लाइब्रेरी को गुणवत्ता प्रबंधन प्रणालियों के लिए आईएसओ 9001:2015 प्रमाणन प्राप्त हुआ, जिससे यह भारत के चुनिंदा पुस्तकालयों में शामिल हो गई। यह प्रमाणन उच्च गुणवत्ता वाली सेवाओं, निरंतर सुधार और बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव के प्रति पुस्तकालय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और कूटनीति के

"इतिहास केवल घटनाओं का क्रम नहीं, अनुभवों की धरोहर है।"–अमृतलाल नागर

क्षेत्र में एक प्रमुख शोध पुस्तकालय के रूप में इसकी स्थिति को और सुदृढ़ करता है। साथ ही, यह उपलब्धि पुस्तकालय द्वारा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया (ICT-SM) के प्रभावी उपयोग के सभी प्रमुख बिंदुओं को सफलतापूर्वक पूरा किए जाने को भी प्रमाणित करती है।

विद्वानों, शोधकर्ताओं और नीति विश्लेषकों के लिए यह पुस्तकालय में हार्ड कॉपी 1.57+ लाख से अधिक पुस्तकों (अंग्रेजी/हिंदी), 39,000+ बाउंड वॉल्यूम जर्नल और 800 से अधिक मुद्रित व इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं के माध्यम से व्यापक संसाधन उपलब्ध कराता है।

प्रमुख ऑनलाइन डेटाबेस शोध क्षमता को और सुदृढ़ बनाती है। 4500 दुर्लभ पुस्तकों के डिजिटल संस्करण (हाइपरलिंक), डिजिटल प्रारूप में दस लाख अखबारों की कतरनों (प्रेस क्लिपिंग) का एक संग्रह भी है। 1966–2003 तक की अवधि की 202 पत्रिकाओं से 3.5 लाख से अधिक सूचकांक उपलब्ध कराता है, जो अंतर्राष्ट्रीय मामलों और भारतीय राजनीति पर शोध में सहायक हैं। 1946 के बाद से संयुक्त राष्ट्र के सभी प्रमुख दस्तावेज और सुरक्षा परिषद एवं महासभा के संकलन शामिल हैं, साथ ही यूरोपीय संघ से संबंधित प्रकाशनों के कारण यह पुस्तकालय अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और नीति शोध के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण गंतव्य के रूप में स्थापित है।

इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया के विकास ने भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) के सप्रू हाउस पुस्तकालय की सेवाओं और उपयोगकर्ताओं से जुड़ाव को नई दिशा दी है। फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे मंचों के माध्यम से पुस्तकालय अपने संग्रह, शोध संसाधनों, कार्यक्रमों, व्याख्यानों और नई पहलों की जानकारी व्यापक दर्शकों तक पहुँचा रहा है। इससे विद्वानों, शोधकर्ताओं और नीति विश्लेषकों के साथ संवाद सशक्त हुआ है तथा पुस्तकालय की दृश्यता और पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सोशल मीडिया ने सप्रू हाउस पुस्तकालय को एक आधुनिक, उपयोगकर्ता–केंद्रित और डिजिटल रूप से सक्रिय ज्ञान केंद्र के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

जनवरी 2020 से जनवरी 2026 के बीच परिषद की हिंदी वेबसाइट पर 82,01,950 से अधिक उपयोगकर्ताओं ने परिषद के विभिन्न विभागों जैसे पुस्तकालय, अनुसंधान लेख आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त की। यह आँकड़ा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी–सोशल मीडिया (ICT-SM) नेटवर्किंग को अपनाने के प्रति उपयोगकर्ताओं की बढ़ती सूचना आवश्यकताओं, डिजिटल सहभागिता और जागरूकता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

सप्रू हाउस पुस्तकालय के ऑनलाइन संसाधन

ऑनलाइन संसाधन वे डिजिटल माध्यम हैं जिनके द्वारा उपयोगकर्ता इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न शैक्षणिक, शोध और सूचना सामग्री तक आसानी से पहुँच प्राप्त कर सकते हैं। इनमें ई–पुस्तकें, ई–पत्रिकाएँ, ऑनलाइन डेटाबेस, ओपैक (OPAC) और डिजिटाइज़्ड संग्रह शामिल होते हैं, जो शोध कार्य को अधिक सरल, त्वरित और प्रभावी बनाते हैं।

ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (OPAC); स्कोपस (SCOPUS); ईबीएससीओहोस्ट (EBSCOhost database); प्रोजेक्ट म्यूज़ (Project MUSE database); मैग्ज़ेटर डेटाबेस (Magzter Database); डिजिटाइज़्ड दुर्लभ पुस्तकें (hyperlink); ई–पत्रिकाएं: डेलनेट ऑनलाइन (DELNET Online database); इंडिया क्वार्टरली अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर परिषद का प्रमुख प्रकाशन है, जो 1945 से नियमित रूप से से प्रकाशित हो रहा है। यह सहकर्मी–समीक्षित पत्रिका SCOPUS, EBSCO और क्लैरिवेट एनालिटिक्स जैसे प्रमुख डेटाबेस में सूचीबद्ध है और 2020 से हिंदी में भी उपलब्ध है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के विकास और व्यापक प्रसार ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर गहरा और महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। वे सभी सेवाएँ और गतिविधियाँ, जो पहले भौतिक रूप से मानव द्वारा की जाती थीं, आज इलेक्ट्रॉनिक स्वरूप में परिवर्तित हो चुकी हैं, क्योंकि गृह–संचालन प्रक्रियाएँ, सेवाएँ तथा सूचना पुनर्प्राप्ति प्रक्रियाएँ भौतिक सहभागिता की तुलना में अधिक प्रभावी, सशक्त और सुविधाजनक हो गई हैं।

5. निष्कर्षत

सोशल मीडिया साइट्स उपयोगकर्ताओं और शोधार्थियों के लिए एक अनुकूल तथा मित्रवत संचार वातावरण प्रदान करती हैं, जिससे उनके ज्ञान में वृद्धि होती है। सोशल मीडिया ने पुस्तकालयों और उपयोगकर्ताओं के बीच एक सुदृढ़ और घनिष्ठ संबंध स्थापित किया है। यह प्रत्येक उपयोगकर्ता को सूचना, ज्ञान और सेवाएँ साझा करने का एक साझा मंच प्रदान करता है, जहाँ विशेष समुदायों से जुड़े लोग एक ही प्लेटफ़ॉर्म पर आपस में मिलते हैं और संवाद करते हैं। आज लगभग प्रत्येक व्यक्ति सोशल मीडिया प्लेटफार्म के प्रति जागरूक है। सर्वाधिक उपयोग किया जाने वाला उपकरण मोबाइल फोन है, क्योंकि इसे ले जाना और उपयोग करना अत्यंत सरल है। आज का मोबाइल फोन एक छोटे कंप्यूटर के समान है, जिसमें सेवा प्रदाताओं द्वारा अनेक सुविधाएँ विकसित की गई हैं।

भारतीय वैश्विक परिषद (ICWA) का सप्रू हाउस पुस्तकालय पारंपरिक ज्ञान केंद्र से विकसित होकर एक आधुनिक डिजिटल और उपयोगकर्ता–केंद्रित अनुसंधान पुस्तकालय के रूप में स्थापित हो चुका है। सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग ने पुस्तकालय की सेवाओं, संसाधनों और गतिविधियों को व्यापक उपयोगकर्ता वर्ग तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे विद्वानों, शोधकर्ताओं और नीति विश्लेषकों के साथ संवाद और सहभागिता सशक्त हुई है।

साथ ही, समृद्ध मुद्रित एवं डिजिटल संग्रह, दुर्लभ पुस्तकों और अभिलेखों के डिजिटलीकरण, प्रमुख ऑनलाइन डेटाबेस तथा निःशुल्क उपलब्ध अंतर्राष्ट्रीय दस्तावेजों ने सप्रू हाउस पुस्तकालय को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और नीति शोध के क्षेत्र में एक विशिष्ट पहचान प्रदान की है। उपलब्ध ऑनलाइन संसाधनों का निरंतर उपयोग यह दर्शाता है कि पुस्तकालय न केवल वर्तमान शोध आवश्यकताओं को पूरा कर रहा है, बल्कि भविष्य में भी ज्ञान सृजन और सूचना प्रसार के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में अपनी भूमिका निभाता रहेगा।

डॉ. शशि रावत,
पुस्तकालय सहायक,
भारतीय वैश्विक परिषद सप्रू हाउस पुस्तकालय

"कविता मनुष्य की संवेदनशीलता का प्रमाण है।"–अज्ञेय

नन्ही कली आयी आँगन में

नन्ही कली आयी आँगन में, जैसे तुषार बिन्दु का पर्ण—पल्लव पर गमन,
आना उसका सहज था, पर कुछ समझ न पाया अश्रुपूरित दुविधा का मन,
नवजीवन का स्वागत या एक उत्तरदायित्व का आजीवन निर्वहन,
प्रथम दृष्टि जब पड़ी नवजात पर, भर आया वात्सल्य से विचलित मन ।

करूण क्रंदन उसका निश्चल था, नन्हीं कली आई आँगन में, जैसे तुषार बिन्दु का पर्ण—पल्लव पर गमन, आना उसका सहज था, पर कुछ समझ न आया अनुपूरित दुविधा का मन, नवजीवन का स्वागत या एक उत्तरदायित्व का आजीवन निर्वहन, प्रथम दृष्टि जब पड़ी नवजात पर, भर आया वात्सल्य से विचलित मन।

करूण क्रन्दन उसका निश्छल था, ओज भरा था उसके मुख पर पाक, उसकी चंचल भाव भंगिमा मे साह लिया जन मानस का मन, मैं भी नारी हूँ उसी के परिश्रम से सिंचित यह तन, यह तुषार बिंदु भी उसी नारी का एक स्वरूप है, इस विचार से किया उसका अभिनंदन।

संकीर्ण मानसिकता, नारी सुरक्षा, लिंग भेद, दहेज प्रथा और बुढ़ापे का एकाकीपन, यह सब क्षणिक दुविधा के स्रोत थे, जिनका भेद समझ न आया दिग्भ्रमित मन।

है समाज उठ जाग मिटा दे यह अन्तर यह ढकोसला यह दकियानूसीपन, जिससे एक नन्हीं कली के आगमन पर, फिर से व्यथित न हो किसी पिता का मन।

इस नन्हीं कली की अठखेलियों से जीवन्त हो जाता है फिर से मेरा बचपन, इसका एक सफल सुखद भविष्य हो, तभी साकार होगा मेरा जीवन, नारी शक्ति स्वरुपा है, सबला है, भर देती है खुशियों से आँगन, जिस समाज को नारी का मोल नहीं, निश्चित है उस समाज का पतन।

जाग मिटा दे यह अन्तर यह ढकोसला ,

फिर से एक बार मेरा यह निवेदन... यह निवेदन ?

नोट : — उपरोक्त कविता केवल भाव एवं विचार की अभिव्यक्ति का माध्यम है। इसका किसी व्यक्ति विशेष अथवा मुझसे व्यक्तिगत लगाव महज एक संयोग होगा।

आनंद मिश्र
पेटेंट कार्यालय, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

विकसित भारत 2047 में बौद्धिक संपदा, राजभाषा और नवाचार की समन्वित भूमिका

तीन स्तंभों का संगम

वर्ष 2047 में जब भारत अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, तब देश के समक्ष एक स्पष्ट प्रश्न होगा – क्या हमने एक ऐसे भारत का निर्माण किया जहाँ प्रत्येक नागरिक अपनी पूर्ण क्षमता के साथ राष्ट्र–निर्माण में भागीदार बन सके? प्रधानमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व में 'विकसित भारत 2047' का संकल्प इसी प्रश्न का उत्तर है। यह केवल आर्थिक समृद्धि का लक्ष्य नहीं है बल्कि यह समावेशी विकास, सामाजिक न्याय और तकनीकी उत्कर्ष का महासंकल्प है।

इस महासंकल्प में तीन तत्व विशेष महत्त्व रखते हैं: बौद्धिक संपदा, राजभाषा हिंदी, और नवाचार। बौद्धिक संपदा नवप्रवर्तकों को उनकी सृजनशीलता का कानूनी संरक्षण देती है। राजभाषा हिंदी इस संरक्षण को जन–जन तक पहुँचाने का माध्यम बनती है। और जब ये दोनों मिलते हैं, तब नवाचार का सच्चा लोकतंत्रीकरण होता है। यह लेख इसी त्रिवेणी संगम की विवेचना प्रस्तुत करता है।

विकसित भारत 2047: नवाचार आधारित विकास की परिकल्पना

नीति आयोग द्वारा तैयार 'विकसित भारत 2047' का दृष्टिपत्र स्पष्ट करता है कि देश का भविष्य नवाचार और तकनीकी उत्कर्ष पर निर्भर है। इस दृष्टिकोण में बौद्धिक संपदा केवल एक कानूनी व्यवस्था नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास का आधार स्तंभ है। जब किसी किसान का कृषि उपकरण, किसी शिल्पकार की अनूठी अभिकल्पना, या किसी वैज्ञानिक की खोज को पेटेंट संरक्षण मिलता है, तब केवल व्यक्तिगत अधिकार सुरक्षित नहीं होते, बल्कि राष्ट्रीय बौद्धिक पूंजी का निर्माण होता है।

प्रधानमंत्री जी ने स्वतंत्रता दिवस 2024 के अपने संबोधन में स्पष्ट कहा कि विकसित भारत युवाओं, गरीबों, महिलाओं और किसानों की सक्रिय भागीदारी से बनेगा। यह भागीदारी तभी सार्थक होगी जब इन सभी वर्गों को नवाचार की व्यवस्था में समान रूप से प्रवेश मिले और यहीं राजभाषा की भूमिका अपरिहार्य हो जाती है।

बौद्धिक संपदा: विकसित भारत का आधार

वर्ष 2024–25 में भारत की बौद्धिक संपदा यात्रा ने नया इतिहास रचा। पहली बार एक लाख से अधिक पेटेंट आवेदन दर्ज हुए, जिनमें से 61.79 प्रतिशत भारतीय नवप्रवर्तकों के थे। पिछले पाँच वर्षों में कुल बौद्धिक संपदा आवेदनों में 44 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। विश्व बौद्धिक संपदा संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने शीर्ष बीस देशों में सर्वाधिक 19.1 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की, यह लगातार छठा वर्ष था जब भारत की वृद्धि दोहरे अंकों में रही।

"साहित्य मनुष्य की चेतना को विस्तृत करता है।"–धर्मवीर भारती

ये आँकड़े विकसित भारत 2047 की नींव को दृढ़ करते हैं। परंतु एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है – क्या यह नवाचार–शक्ति देश के सभी कोनों, सभी भाषाओं और सभी वर्गों तक पहुँच रही है? जब तक बौद्धिक संपदा की व्यवस्था केवल अंग्रेजी–भाषी नागरिकों तक सीमित रहेगी, तब तक भारत की वास्तविक नवाचार क्षमता अधूरी रहेगी। यहीं राजभाषा का महत्त्व प्रकट होता है।

राजभाषा हिंदी: समावेशन का सेतु

भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है। राजभाषा अधिनियम 1963 में स्थापित राजभाषा विभाग ने इस संवैधानिक प्रावधान को व्यावहारिक रूप दिया। वर्तमान सरकार ने राजभाषा नीति को नई गति प्रदान की है, गृह मंत्री जी ने हिंदी दिवस 2024 पर घोषणा की कि "हमें इस लक्ष्य के साथ आगे बढ़ना है कि 2047 में स्वतंत्रता दिवस पर हमारे देश का संपूर्ण कार्य भारतीय भाषाओं में गर्वपूर्वक संपन्न हो"।

यह घोषणा केवल भाषायी लक्ष्य नहीं है, यह सामाजिक समावेशन का संकल्प है। यह केवल भविष्य की कल्पना नहीं, बल्कि एक सुखद वास्तविकता है। भारतीय पेटेंट कार्यालय में हिंदी में आवेदन करने की सुविधा पहले से ही उपलब्ध है, और देश के अनेक नवप्रवर्तक इसका लाभ उठा भी रहे हैं। वह किसान जो महाराष्ट्र में बैठकर एक नई कृषि तकनीक विकसित करता है, वह शिल्पकार जो राजस्थान में पारंपरिक डिज़ाइन में नवाचार करता है, वह युवा जो उत्तर प्रदेश के एक छोटे शहर से तकनीकी समाधान सोचता है; ये सभी आज अपनी भाषा में पेटेंट आवेदन कर सकते हैं, अपने अधिकारों को समझ सकते हैं, और अपने नवाचार को संरक्षित कर सकते हैं। आवश्यकता है तो केवल इस व्यवस्था के व्यापक प्रचार–प्रसार की, ताकि जो लाभ कुछ लोगों तक पहुँचा है, वह करोड़ों तक पहुँचे।

भारत में 50 करोड़ से अधिक लोग हिंदी बोलते या समझते हैं। जब बौद्धिक संपदा की यह सुलभ व्यवस्था इस विशाल जनसमूह तक पूरी तरह पहुँचेगी, तब विकसित भारत का स्वप्न केवल कागज़ों पर नहीं, बल्कि गाँवों और कस्बों की गलियों में साकार होगा और राष्ट्र की नवाचार शक्ति कई गुना बढ़ जाएगी।

त्रिवेणी संगम: बौद्धिक संपदा, राजभाषा और विकसित भारत

विकसित भारत 2047 की परिकल्पना में बौद्धिक संपदा और राजभाषा का समन्वय तीन स्तरों पर कार्य करता है:

प्रथम स्तर: जागरूकता: राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा जागरूकता अभियान के अंतर्गत अब तक 25 लाख से अधिक विद्यार्थियों और शिक्षकों तक पहुँचा जा चुका है। जब ये कार्यक्रम हिंदी और स्थानीय भाषाओं में आयोजित होते हैं, तो उनका प्रभाव कई गुना बढ़ जाता है। ये सभी कदम जागरूकता के लोकतंत्रीकरण की दिशा में हैं।

द्वितीय स्तर: पहुँच: भारतीय पेटेंट कार्यालय विश्व के उन विरल कार्यालयों में से एक है जहाँ पेटेंट आवेदन हिंदी में स्वीकार किए जाते हैं। यह प्रावधान विकसित भारत की उस परिकल्पना को मूर्त रूप देता है जहाँ भाषा बाधा नहीं, बल्कि सेतु बनती है। मार्च 2024 तक भारत में 1.25 लाख से अधिक DPIIT–मान्यता प्राप्त स्टार्टअप थे, जिनमें से काफी बड़ा प्रतिशत द्वितीय और तृतीय श्रेणी के शहरों से हैं – ये वही क्षेत्र हैं जहाँ हिंदी और स्थानीय भाषाएँ अधिक स्वाभाविक माध्यम हैं।

तृतीय स्तर : सशक्तिकरण: जब कोई नवप्रवर्तक अपनी मातृभाषा में पेटेंट आवेदन करता है, तो वह केवल कानूनी प्रक्रिया पूरी नहीं करता; वह अपने आत्मविश्वास और अपनी पहचान को भी सुदृढ़ करता है। यह स्वाभाविक ही है कि जब कोई नवप्रवर्तक अपने विचारों को अनुवाद की बाधा पार किए बिना, सीधे अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्त करता है, तो उसके आवेदन अधिक स्पष्ट, सटीक और प्रभावशाली होते हैं क्योंकि भाषा केवल माध्यम नहीं, विचार की नींव होती है।

पारंपरिक ज्ञानः राजभाषा और बौद्धिक संपदा का स्वर्णिम उदाहरण

विकसित भारत 2047 की परिकल्पना में भारत की प्राचीन ज्ञान–परंपरा को आधुनिक बौद्धिक संपदा व्यवस्था से जोड़ना एक महत्त्वपूर्ण लक्ष्य है। "पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी" इसका सर्वोत्तम उदाहरण है। इस पुस्तकालय में 5 लाख से अधिक आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और योग से संबंधित सूत्र संरक्षित हैं, जो मुख्यतः संस्कृत, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में थे। इन्हें डिजिटल रूप में संरक्षित कर विश्व के 17 प्रमुख पेटेंट कार्यालयों को उपलब्ध कराया गया है, ताकि भारत के पारंपरिक ज्ञान पर कोई अनुचित पेटेंट न प्राप्त कर सके।

प्रयास और नीतिगत प्रतिबद्धता

राजभाषा के क्षेत्र में, गृह मंत्री ने 'भारतीय भाषा अनुभाग' मंच का शुभारंभ किया है जो विभिन्न भाषाओं में अनुवाद सुलभ बनाता है। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के माध्यम से विभिन्न सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। पेटेंट कार्यालय में राजभाषा पखवाड़े के दौरान बौद्धिक संपदा और राजभाषा पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, यह सब विकसित भारत की उस परिकल्पना को साकार करने की दिशा में हैं जहाँ भाषा और नवाचार एक–दूसरे के पूरक बनें।

आगे का मार्गः 2047 तक का संकल्प–तीन स्तंभों पर टिका विकसित भारत

विकसित भारत 2047 का स्वप्न तीन स्तंभों पर टिका है– बौद्धिक संपदा जो नवाचार को संरक्षण देती है, राजभाषा जो इस संरक्षण को जन–जन तक पहुँचाती है, और नवाचार जो देश को आत्मनिर्भर और समृद्ध बनाता है। ये तीनों तभी सार्थक होते हैं जब ये एक–दूसरे से जुड़े हों।

आँकड़े इस यात्रा की सफलता की गवाही देते हैं– एक लाख से अधिक पेटेंट आवेदन, 44 प्रतिशत की समग्र वृद्धि, वैश्विक नवाचार सूचकांक में 38वाँ स्थान, और 25 लाख विद्यार्थियों तक बौद्धिक संपदा जागरूकता की पहुँच। परंतु असली सफलता उस दिन होगी जब देश के हर कोने से राजभाषा में पेटेंट आवेदन आएंगे जब एक गाँव का किसान, एक कस्बे का शिल्पकार, और एक छोटे शहर का युवा उद्यमी, सभी अपनी मातृभाषा में अपने नवाचार को संरक्षित कर सकेंगे।

'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' यह मंत्र तभी पूर्ण होगा जब बौद्धिक संपदा और राजभाषा का यह संगम हर भारतीय तक पहुँचेगा। 2047 का विकसित भारत उस दिन साकार होगा जब भाषा बाधा नहीं, बल्कि नवाचार का सेतु बनेगी जब प्रत्येक भारतीय की प्रतिभा को पंख मिलेंगे और राष्ट्र नई ऊँचाइयों को छुएगा।

जय हिन्द! जय भारत!

यह लेख लेखक के अध्ययन एवं सेवा–अनुभव पर आधारित है।

शुभम रत्नम

(सहायक नियंत्रक, एकस्व एवं अभिकल्प, पेटेंट कार्यालय,
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय)

"प्रेम और करुणा ही मनुष्य को महान बनाते हैं।"–धर्मवीर सिंह

दिल नहीं था... सिर्फ एक शहर था

किसी ने पूछा– "वहाँ क्यों न ठहरे तुम?"
हमने मुस्कुरा के कहा
"वो दिल नहीं था... सिर्फ़ एक शहर था।
जहाँ हर चेहरा मुखौटे में था लिपटा,
हर रिश्ता, ख़ामोश सौदों का कहर था।"
वहाँ हर रिश्ता था बस दिखावे का,
हर चेहरे पर झूठी मुस्कान जमी थी।
हमने चाहा था वहाँ अपनापन ढूँढना,
भीड़ तो बहुत थी, पर अपनों की कमी थी।
अपने तो धूप में भी साया बन जाते हैं,
नाराज़गी में भी चुपचाप हाथ थाम लेते हैं।
ना चेहरे पे कभी झूठी हँसी सजाते हैं,
मुश्किल घड़ी में भी साथ निभाते हैं।
अब तो हमने भी ज़िंदगी में ये तजुर्बा किया,
हर दर्द छुपाकर, आँसुओं को ख़ामोशी से पिया।
जो मिला, उसे तक़दीर का सबक मान लिया,
जो छूट गया—उसे भी ख़ामोशी से खुदा किया।
जब भी कोई पूछे—"फिर लौटोगे उस शहर?"
हमने मुस्कुरा के कहा
"वो दिल नहीं था... सिर्फ़ एक शहर था।
जहाँ हर चेहरा मुखौटे में था लिपटा,
हर रिश्ता, ख़ामोश सौदों का कहर था।"

योगेश कुमार बीलवाल
प्रमुख परियोजना अभियंता
संचार नेटवर्क विभाग, रेलवे सूचना प्रणाली केंद्र (क्रिस)

हिंदी : समन्वय, संकल्प और सृजन

भारत की हर भाषा में, संस्कृति की पहचान है।
बहुभाषिक चेतना में ही, राष्ट्र की मुस्कान है।
तमिल की सरिता है यह, बांग्ला की तान है।
मराठी, कन्नड़, उर्दू शब्दों से, बढ़ी हिंदी की शान है।

सब भाषाओं के सम्मान में, हिंदी का योगदान है।
सेतु बनकर जोड़ती, विविधता का मधुर गान है।
देवनागरी लिपि बनी, विचारों की उड़ान है।
अक्षर–अक्षर में संचित, युगों–युगों का ज्ञान है।

सरलता इसकी शक्ति है, सहजता इसका मान है।
जन–जन की अभिव्यक्ति में, इसका ही तो स्थान है।
राजभाषा का लक्ष्य यही, स्पष्ट जन–संवाद है।
शासन का हर कार्य बने, सुबोध, सरल, आसान है।

पत्र, आदेश, टिप्पणी में, हिंदी की पहचान है।
कार्यालयी संस्कृति का, यह सशक्त आधार है।
नराकास की बैठकों से, लक्ष्य सदा प्राप्य है।
राजभाषा के प्रयोग से, कार्य–संस्कृति साध्य है।

विचार, विमर्श, मार्गदर्शन, इनका यही विधान है।
संकल्प से सिद्धि तक, चलता सतत अभियान है।
नराकास की पत्रिका से, रचनात्मकता का विकास है।
लेखन, चिंतन, अभिव्यक्ति में, नव चेतना का प्रकाश है।

हिंदी का प्रगामी प्रयोग, समय की पहचान है।
उत्तरोत्तर विकास में, इसका उज्ज्वल मान है।
विज्ञान, तकनीक, संचार में, हिंदी का विस्तार है।
डिजिटल युग की वाणी में, इसका भी अधिकार है।

साई (भाखेप्रा) का योगदान इसमें, अत्यंत ही महान है।
खेल जगत में भी भाषा, चेतना की शान है।
हिंदी है, संवाद की शक्ति, हिंदी ही अभियान है।
हिंदी से ही सुदृढ़ होगा, आत्मनिर्भर हिंदुस्तान है।

बसंत कुमार,
राजभाषा प्रभारी
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक –3, दिल्ली छावनी

"साहित्य जीवन की आलोचना है।"–रामचंद्र शुक्ल

बसंत का आगमन

सर्द हवाओं की विदाई संग,
धरती ने ली नई अँगड़ाई।
पीले वस्त्र पहन आई धरा,
बसंत ने दस्तक दी आई।

टहनियों पर कोपल फूटी,
अमुआ बौरा, सरसों हँसती।
भौंरों की गुंजन, तितली की चाल,
हर दिशा में खुशी बसती।

खेतों में लहराई आशा,
किसान के चेहरे पर मुस्कान।
गीत बन गए पेड़ों के पत्ते,
मधुर हुआ सारा आसमान।

न मन में आलस, न विषाद,
उत्साह नया हर मन लाया।
जीवन फिर से रंगीन हुआ,
जब बसंत ने रूप दिखाया।

दुष्यंत गुप्ता
व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण,
रेलवे सूचना प्रणाली केंद्र,
चाणक्यपुरी, नई दिल्ली

स्वच्छता

हमारे जीवन में स्वच्छता का बहुत महत्व है। केवल शारीरिक ही नहीं, मन की स्वच्छता भी जरूरी है। स्वच्छता शरीर के साथ–साथ मन और सामाजिक तौर पर भी जरूरी है। स्वच्छता से ही आत्मविश्वास बढ़ता है। स्वच्छता से ही उस समाज का सृजन होता है।

प्रत्येक नागरिक को नव समाज के निर्माण हेतु स्वच्छता को दैनिक जीवन में शामिल करना चाहिए। सबसे पहले तो प्रत्येक नागरिक को शारीरिक स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए। स्नान के साथ साफ–सुथरे कपड़े पहनने चाहिए जिससे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

शारीरिक स्वच्छता के साथ–साथ, प्रत्येक व्यक्ति को घर की स्वच्छता पर भी ध्यान देना चाहिए। मक्खी, मच्छरों को घर से दूर भगाना चाहिए। अगर आस–पास का वातावरण स्वच्छ होगा तभी तो शरीर निरोग बनेगा।

प्रत्येक व्यक्ति को शारीरिक स्वच्छता के साथ–साथ कार्य स्थल पर भी सफाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक शौचालय की सफाई पर ध्यान देना चाहिए। वातावरण को प्रदूषण से बचाना चाहिए।

प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए वृक्षरोपण करे एवं उनका ध्यान रखे। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह सरकार द्वारा जारी किए गए कार्यक्रमों एवं नियमों का अनुपालन करें जो वातावरण की स्वच्छता के लिए जरूरी है।

प्रत्येक व्यक्ति को जल स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि जल अनमोल तत्व है। व्यर्थ व किसी अन्य पदार्थ/वस्तुओं को जल, नदी एवं नालों में नहीं गिराना चाहिए। साथ ही हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए की हम कूड़ा–कबाड़ा सड़कों पर न फेंके, ताकि सड़के स्वच्छ रहें। कूड़ा सिर्फ कूड़े दान में ही गिराना चाहिए। सभी व्यक्तियों को स्वच्छता के प्रति प्रण लेना चाहिए कि – ना गंदगी करेंगे और ना ही करने देंगे।

बबीता, युवा पेशेवर
क्षेत्रीय केंद्र, चंडीगढ़
हिंदी पखवाड़ा प्रथम पुरस्कार विजेता

''भाषा मनुष्य के विचारों की सबसे सशक्त अभिव्यक्ति है।''–विद्यानिवास मिश्र

मारीच

अनुमति नहीं मुझे
कि आकांक्षाओं को विस्तार दूँ
पंख दूँ उन्हें
नभ छू लेने दूँ
नया पथ चुन लिया मैंने
सीमित को असीम कर लिया मैंने
हाँ, मन मयूर के पंख कटे हैं
बिखरे हैं,
मेरी भग्नाषाओं की तरह,
चुन कर सहेज लिया है मैंने
मारीच का पीछा ना किया
लांघी नहीं कोई सीमा मैंने
पर यह क्या
कहानी ही बदल गई
कुटिया में घुटकर मैं रह गई
ना राम लौटे, न रावण ही आया
ना असत्य टूटा, ना सत्य पाया
क्या स्वर्णमृग की आकांक्षा
किसी पूर्णता का द्वार है
कुंठित हो जीना
किसी शुभ संभावना पर प्रहार है
तो श्रेयस्कर क्या है
रावण की मुक्ति औ
विजय दिवस की राह की बाधा बनूँ
या पंख फैला कर उड़ूँ
और मारीच का पीछा करूँ।।

रेणु खरे
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, राष्ट्रीय प्रशिक्षण अकादमी

भारतीय खेल प्राधिकरण में कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी के रूप में मेरा अनुभव (अक्टूबर 2025)

अक्टूबर 2025 मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण पड़ाव लेकर आया, जब मैंने भारतीय खेल प्राधिकरण में कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी के रूप में राजभाषा प्रभाग में कार्यभार ग्रहण किया। यह अवसर मेरे लिए अत्यंत गौरवपूर्ण था, क्योंकि इसके माध्यम से मुझे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार और उसके प्रभावी क्रियान्वयन में योगदान देने का अवसर प्राप्त हुआ। साथ ही, एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतिष्ठित संस्था की कार्यप्रणाली को निकट से समझने का अनुभव भी मिला।

भारतीय खेल प्राधिकरण देश में खेलों के विकास, खिलाड़ियों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्रदान करने तथा खेल अधिसंरचना को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से कार्य करता है। ऐसी संस्था में राजभाषा प्रभाग की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी के रूप में मेरा प्रमुख दायित्व विभिन्न कार्यालयी पत्रों, आदेशों, परिपत्रों तथा अन्य दस्तावेजों का हिंदी और अंग्रेज़ी के बीच अनुवाद करना तथा राजभाषा नीति के अनुरूप कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना रहा। इसके साथ ही मुझे खेलों से संबंधित विभिन्न खेल विधा पुस्तकों के अनुवाद के कार्य में भी योगदान देने का अवसर प्राप्त हुआ। इन पुस्तकों के माध्यम से विभिन्न खेलों की तकनीक, नियमों तथा प्रशिक्षण पद्धतियों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी खिलाड़ियों और प्रशिक्षकों तक पहुँचाई जाती है। इनका हिंदी में अनुवाद करना एक महत्वपूर्ण और जिम्मेदारीपूर्ण कार्य था, क्योंकि इसके माध्यम से खेल संबंधी ज्ञान को अधिक व्यापक स्तर पर पहुँचाने में सहायता मिलती है। इस कार्य ने न केवल मेरी अनुवाद क्षमता को और सुदृढ़ किया, बल्कि खेलों की विविध विधाओं के बारे में मेरी समझ को भी समृद्ध किया।

कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात मुझे संस्थान द्वारा आयोजित इन–हाउस प्रशिक्षण में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य नए अधिकारियों और कर्मचारियों को संस्थान की विभिन्न शाखाओं और उनकी कार्यप्रणाली से परिचित कराना था। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न प्रभागों के अधिकारियों द्वारा व्याख्यान दिए गए, जिनमें उन्होंने अपने–अपने विभागों के कार्यों, जिम्मेदारियों और कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

इस प्रशिक्षण के अंतर्गत क्षेत्रीय केंद्र सोनीपत के भ्रमण का अवसर भी प्राप्त हुआ। वहाँ खिलाड़ियों के प्रशिक्षण की व्यवस्थाओं, खेल सुविधाओं तथा प्रशिक्षण केंद्र के वातावरण को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अनुभव अत्यंत प्रेरणादायक रहा। इसके अतिरिक्त भारतीय खेल प्राधिकरण के अंतर्गत आने वाले विभिन्न खेल परिसरों और स्टेडियमों का भी दौरा करने का अवसर मिला। इन परिसरों में खिलाड़ियों को उपलब्ध कराई जा रही आधुनिक सुविधाओं को देखकर यह अनुभव हुआ कि देश में खेलों के विकास के लिए गंभीर और सुनियोजित प्रयास किए जा रहे हैं।

इसके पश्चात मुझे आईएसटीएम (सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबन्ध संस्थान) में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर भी मिला। इस प्रशिक्षण के दौरान राजभाषा नीति, अनुवाद की तकनीक तथा सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई, जिससे मेरे ज्ञान और कार्यकुशलता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

इन सभी अनुभवों ने मेरे दृष्टिकोण को व्यापक बनाया और मुझे अपने दायित्वों को अधिक आत्मविश्वास और समर्पण के साथ निभाने की प्रेरणा दी। भविष्य में भी मेरा प्रयास रहेगा कि मैं निरंतर सीखते हुए अपने कार्य कौशल को और विकसित करूं तथा राजभाषा हिंदी के प्रभावी क्रियान्वयन में सक्रिय योगदान देती रहूँ।

मेरा यह भी संकल्प है कि भारतीय खेल प्राधिकरण में अपनी इस यात्रा को समर्पण, परिश्रम और सीखने की निरंतर इच्छा के साथ सफलतापूर्वक आगे बढ़ाऊं और संस्थान की प्रगति में अपना सकारात्मक योगदान देती रहूँ।

अनीता सहरावत
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, राजभाषा प्रभाग
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

"भाषा जितनी सरल होगी, उतनी ही प्रभावशाली होगी।"–राहुल सांकृत्यायन

नारी सशक्तिकरण

आज के वक्त में हम किसी से कम नहीं
कौन–सा वो क्षेत्र है जहाँ हमारा परचम नहीं !!
रसोई घर हो चाहे, खेत या खलिहान हो
राजनीति हो या खेल का मैदान हो,
हर जगह हमने अपना हक़ पाया है
देश हो या विदेश अपना लोहा मनवाया है!
अब नहीं रही मैं वो मजबूर दुखियारी नारी
अब मैं बनी सानिया मिर्ज़ा और दीपिका कुमारी,
नहीं पसंद अब मुझे जीना अपना आत्मसम्मान खोकर
सही मौका मिलने पर बन दिखाऊं मैं चंदा कोचर!
आज के वक्त में हम किसी से कम नहीं
कौन–सा वो क्षेत्र है जहाँ हमारा परचम नहीं !!

जब–जब देश पर काले बादल छाए
नारियों ने अपनी शक्ति दिखाई,
रियो ओलम्पिक्स में मेडल्स जीत कर
सिंधू और साक्षी ने अपने देश की लाज बचाई!
अब कोई ये ना समझे की नारी है, इसलिए कमज़ोर है
देख लो देश वासियों अब हमारा ही दौर है,
मैं सम्भाल सकती हूँ घर, तो दफ़्तर भी
बन सकती हूँ लेखिका, तो सेना में अफ़सर भी!
आज के वक्त में हम किसी से कम नहीं
कौन–सा वो क्षेत्र है जहाँ हमारा परचम नहीं !!

तुम मुझको निर्बल मत समझो
गीता फोगाट जैसी पहलवान हूँ मैं
ज़मीन से लेकर अंतरिक्ष तक जा पहुँची
कल्पना चावला जैसी जाबाज़ हूँ मैं !
जब नारी में शक्ति है सारी, तो कोई क्यूँ कहे हमें बेचारी
आज पुरुषों से कदम से कदम मिला कर चल रही नारी,
मदर टेरेसा बनकर ज़ख़्मों पर मरहम लगा सकती हूँ तो
रानी लक्ष्मीबाई बन दुश्मनों को धूल चटा सकती हूँ !
आज के वक्त में हम किसी से कम नहीं
कौन–सा वो क्षेत्र है जहाँ हमारा परचम नहीं !!

कड़े संघर्षों के बाद मिल रही हमें हमारी पहचान है
आज मैं नीता अंबानी, निर्मला सीतारमण,
और हूँ मैं प्रियंका चोपड़ा और मनु भाकर
देश भर में आज हमारा नाम है !
घर को चलाने वाली नारी पूरा देश चला सकती है
कभी द्रोपदी मुर्मू बन तो कभी इंदिरा गांधी,
रोकले अब मुझे अब कहाँ किसी में इतना दम
चल पड़ी हूँ उन्नति की राह पे अब ना लूँ पीछे कदम!
आज के वक्त में हम किसी से कम नहीं
कौन–सा वो क्षेत्र है जहाँ हमारा परचम नहीं !!

सना आफ़रीन
अनुभाग अधिकारी
समन्वय प्रभाग/ पुस्कालय
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

"हिंदी भाषा भारत की आत्मा से जुड़ी हुई भाषा है।"–मैथिलीशरण गुप्त

आओ खेल का नियम बनाएँ

आओ खेल का नियम बनाएँ,
खेल की किसी विधा से जुड़ जाएँ।
आओ खेल का नियम बनाएँ।

हर दिन थोड़ी देर तेज़ चल जाएँ,
तन–मन को ताज़ा कर जाएँ।
योग से निरोगता आए,
आओ खेल का नियम बनाएँ।

फुटबॉल में जोश बढ़ाएँ,
कबड्डी में हिम्मत आज़माएँ।
खो–खो की गति अपनाएँ,
दौड़ में सपनों को छू जाएँ।
खेल से निरोगता पाएँ,
आओ खेल का नियम बनाएँ।

विज्ञान कहता–व्यायाम अपनाएँ,
खेलों से तन–मन स्वस्थ बनाएँ।
खेलों से जीवन संतुलन पाएँ,
खेल से निरोगता पाएँ।
आओ खेल का नियम बनाएँ।

संडे ऑन साइकिल का मंत्र अपनाएँ,
फिट इंडिया के लिए खेलों को अपनाएँ।
मैदानों की ओर चल जाएँ,
स्वस्थ रहें, मुस्कान फैलाएँ।
खेल से निरोगता पाएँ–
आओ खेल का नियम बनाएँ।

अरविन्द मुखरैया
कनिष्ठ सलाहकार (अवसंरचना)
भारतीय खेल प्राधिकरण, इंदिरा गांधी खेल परिसर

जीवन के रंग

''बचपन'', सुनते ही कितना सुखद व सुंदर स्मरण हो उठता है, मीलों दूर रहकर भी वो यादें एकदम से सभी दहलीज़ों को लांघकर मन के उन दरवाजों को खटखटा देती हैं, जो बढ़ती उम्र के साथ–साथ अब कुछ धुँधली सी होती जा रही है।

वो सुनहरे दिन जो काटते न कटते थे, आज सोचने पर स्वप्न से प्रतीत होते हैं। वो गाँव का सादा–सा हरा–भरा जीवन, परिवार की छाया, यारों की माया, इन सब से आज की भागदौड़ वाली आधुनिक दुनिया में इतने आगे निकल गए हैं कि मानो अपनी जड़–जमीन से ही कहीं पीछे छूट रहे हो। गर्मी के मौसम (शुरूआती गर्मी) में खेत पर काम करके घर लौट रहे किसान, सूरज की लालिमा का आसमान का रंग लाल कर देना, ऐसा मनोहर दृश्य देखकर मेरा मन खुश हो जाता था। उस समय मैं भी अपने कुछ दोस्तों के साथ गाँव की सड़कों पर घूमने के लिए जाया करता था, शाम का वो मनोहर दृश्य देखकर मुझे अच्छा लगता, एक दिन घूमने न जाऊँ तो मेरा मन नहीं लगता था। कभी–कभी तो दोपहर होने से पहले (लगभग सुबह 09–11 बजे) मैं अपने खेतों पर काम करने के लिए जाया करता, काम करके थक जाता तो आराम के लिए पेड़ की छांव के नीचे जब लेटता तो उस समय प्रकृति के उस सुनहरे रूप को देखता तो मेरा चित्त प्रसन्न हो जाता था। ऐसा महसूस होता था जैसे मैं उनसे बात कर रहा हूँ, पेड़ मेरी हंसी को देख खुद भी हँस रहे हैं जैसे वो मुझसे कुछ कहना चाहते हो, वो नीला आसमान देखकर मन आनंदित हो उठता।

आज के जमाने में तो युवाओं के मनोरंजन के तरीके भी हम नब्बे के दशक के बच्चों से अलग हैं। झट से मोबाइल फोन निकालो और अपनी पसंद के गाने से लेकर फिल्म, नौकरी के तरीके, ऑनलाइन गेम और न जाने कितना कुछ, जो चाहो सब मोबाइल से संभव है। मैं जब अपना वो समय याद करता हूं, जहाँ अगर रेडियो पर कोई अच्छा गाना आ जाए तो उसकी पूरी आवाज़ तेज कर सारे मोहल्ले को सुनाता था। फिल्मों के लिए कैसेट, बैट्री और टीवी (टेलीविजन) खरीदकर किराए पर लाते और पूरा मोहल्ला इकट्ठा होकर अपनी पसंद की फिल्में देखते थे। उस समय का क्रेज ही अलग था। आज सोचता हूँ कि कहाँ चला गया वो बचपन, वो सारे खेल, वो सब मित्र.................। समय रेत की तरह हाथ से फिसलता दिखाई दे रहा है।

समय का चक्र कितनी तेजी से चल रहा है। जब मैं अकेला होता हूँ तो वो बचपन, खेल, मित्र, गाँव, गाँव के लोग, सब बहुत याद आते हैं, आँखें भर आती हैं। कभी–कभी जब मैं ये सोचता हूं कि मेरे सामने, मेरे गाँव के कितने आदमी अब तक गुजर चुके हैं, हिसाब लगाने पर पाता हूँ कि पूरे गाँव का लगभग भाग मेरे सामने चला गया। उस समय जब मैं युवा हो चुका था, जो बच्चे मेरे सामने छोटे थे आज जब काम से गाँव लौटता हूँ तो उनके दाढ़ी, मूछें देखकर ये सोचता हूँ कि इतना समय कितनी जल्दी बीत गया।

उस समय मैं हाईस्कूल में पढ़ रहा था, मेरे पिताजी को सत्संग सुनना, उनमें जाना अच्छा लगता था। उनका भगवान के प्रति एक अजीब–सा प्रेम था। वो कहते थे की गुरू के बिना ज्ञान नहीं है, इसलिए वो अपने गुरूजी के प्रति अनन्य प्रेम

''मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए जीता है।''–मुंशी प्रेमचंद

रखते थे। मेरे पिताजी और उनके एक पड़ोसी मित्र जब कभी घर या खेतों के काम से खाली रहते तो दोपहर के समय आपस में गुरू कीर्तन में लग जाते। मैं उस समय पढ़ रहा होता था, उनके भजन मुझे भी अच्छे लगते थे। उस समय बढ़ती उम्र थी मेरी फिर उस समय कुछ धर्मगुरूओं के कर्मकांड मैंने देखे–सुने थे, इसलिए मुझे इन धर्मगुरूओं के प्रति एक हीन भावना रहती थी। मैं अपने पिताजी से यूँ ही बहस कर बैठा कि क्या दिया है आपको आज तक भगवान ने ? जो गलत काम करते हैं या गरीबों को सताते या फिर अपने बल/शक्ति का गलत इस्तेमाल करते हैं, वो सभी मौज के दिन काट रहे हैं। इस संसार में कोई भगवान नहीं है! सब बेकार है! ऐसी कोई चीज होती ही नहीं है। मैं कर्म/मेहनत करके अमीर बनने पर विश्वास करता था। मेरे पिताजी मुझे समझाते हुए कहते थे कि तू अभी नादान है, तुझे इस चीज की समझ नहीं है, फिर जब मैं नहीं समझता बेकार की बहस उनसे करता, तो वो मुझे कहने लगते कि तू महामूर्ख है।

आज मुझे जब उनकी वो सब बातें याद आती हैं, तो सोचता हूँ कि पिताजी सही कहते थे, मैं मूर्ख ही था, जो उनसे यूँ बेवजह बहस करता रहता था। उनसे जो तर्क–वितर्क हुए, आज याद करता हूं तो आँखें भर आती है। उस समय जीवन कितना आसान लगता था, जैसे मेरे सोचने मात्र से सब आसानी से हो जाएगा, लेकिन जीवन क्या है? ये अब समझ आता है।

मेरे माता–पिता भी अब बूढ़े हो रहे है, मेरा पूरा समय नौकरी में चला जाता है, उससे मिली तनख्वाह से अपने बच्चों का पालन–पोषण कर पाना दिन–प्रतिदिन बहुत मुश्किल होता जा रहा है। ऊपर से इतनी महँगाई का दौर, अकेले में सोचने लगता हूँ कि दुनिया अपने माता–पिता को चारों धाम की यात्रा कराती है, घुमाती–फिराती है, उनकी हर इच्छा को पूरा करती है और एक मैं हूँ जो आज तक उनके लिए कुछ नहीं कर पाया, चारों धाम तो छोड़ो उन्हें वृंदावन तक नहीं लेकर जा पाया। सोचकर स्वंय से घृणा होने लगती, क्या फायदा ऐसा बेटा होने का.......................?

आज तक जीवन में मैंने जो कमाया, लगता है सब बेकार है, कठिनाई के समय सभी रिश्ते–नाते झूठे से लगते हैं। आज मैं अपने–आप को अकेला महसूस करता हूँ। जिंदगी बड़ी रूखी– सी लगती है, न कुछ पाने की इच्छा ना खोने का डर, परंतु जिंदगी इतनी बुरी भी नहीं है। समय का चक्र घूमता रहता है और शायद लोग सही कहते हैं अच्छा और बुरा तो जीवन के दो पहलू हैं क्योंकि इन सब के बावजूद जीवन में कुछ नए दोस्त भी बने जिनसे मिलकर लगता है कि जिदंगी बहुत हसीन है, जिंदगी में फिर से कुछ अच्छा किया जा सकता है। सुख–दुख तो जीवन में आते जाते रहेंगे, पेड़ भी धीरे–धीरे बड़े होकर एक दिन टूटकर गिर जाते हैं और उनकी जगह कुछ नए पौधे उग आते हैं। यही तो जीवन का बदलाव है और इसी बदलाव का नाम जिंदगी है।

राहुल कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर
राजभाषा प्रभाग
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

आधुनिकता - विकास या ह्रास

अनंत काल से आदिम ने
सर्वस्व ही प्रकृति से पाया

जल जीवन, जमीन भेंटकर प्रकृति ने, किया सबको कृतार्थ, कर्तव्य निभाया,
प्राप्त कर संपूर्ण संसाधन धरा से, मनुष्य ने विकास का रथ बढ़ाया

गूढ़—गुफा जंगलों से निकलकर
गाँव कस्बों से शहरों तक का पथ उसने बनाया,
विकास की इस राह में, उसने न जाने क्या—क्या नहीं पाया,
जीव—जंतु, वन—वनस्पति और अन्य, पर भी उसने अपना अधिकार जमाया

क्षीण कर सब सूक्ष्म स्थूल को, इस धरा पर हड़कंप मचाया
नदियों को नाला कर, जीवन को जंजाल किया
जी भर वृक्षों को काटा, हवा को भी दूषित किया

तब भी मन न माना उसका तो, जमीनों को भी बंजर किया
अहम की आग में फिर, स्वयं का भी ह्रास किया
थोड़ा और की चाह में, ईमान—इंसानियत का सौदा कर
स्वंय को खोखला किया, हँसते खेलते परिवारों को
आधुनिकता की दौड़ ने अकेला किया

बनवारी लाल
अनुभाग अधिकारी
राजभाषा प्रभाग
भारतीय खेल प्राधिकरण (मुख्य कार्यालय)

"हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।" —माखन लाल चतुर्वेदी

क्रीड़ा शब्दावली

• Athlete– खिलाड़ी	• Agility– चपलता
• Coach– प्रशिक्षक	• Coordination– समन्वय
• Training– प्रशिक्षण	• Injury– चोट
• Competition– प्रतियोगिता	• Rehabilitation– पुनर्वास
• Referee– निर्णायक / रेफरी	• Fair Play– निष्पक्ष खेल
• Tournament– प्रतियोगिता / टूर्नामेंट	• Sportsmanship– खेल भावना
• Event– प्रतिस्पर्धा	• Sports Complex– खेल परिसर
• Arena– खेल परिसर	• Practice– अभ्यास
• Performance– प्रदर्शन	• Warm-up- वार्म–अप / प्रारंभिक व्यायाम
• Selection Trial– चयन परीक्षण	• Cool-down– शिथिलीकरण व्यायाम
• Training Camp– प्रशिक्षण शिविर	• Participant– प्रतिभागी
• Fitness– शारीरिक दक्षता	• Recovery– पुनर्प्राप्ति
• Endurance– सहनशक्ति	• Doping Test– डोपिंग परीक्षण
• Strength– शक्ति	• Tactics– युक्ति
• Flexibility– लचीलापन	• Qualification– अर्हता

चित्रावली

राजभाँषा
कार्यालय
राजभाषा विभाग
हिंदी

नराकास छमाही बैठक

कार्यालय प्रमुख

21 जुलाई, 2025
स्थान - विज्ञान भवन, नई दिल्ली
संयोजक
भारतीय खेल प्राधिकरण, मुख्य कार्यालय,
जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम, नई दिल्ली

स्थान - विज्ञान भवन

पंजीकरण काउंटर
नगर राजभाषा
दक्षिण दिल्ली - 2
की

सरस्वती वंदना
SAI
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

हिन्दी पखवाड़ा मुख्य कार्यालय

SAI
भारतीय खेल प्राधिकरण
SPORTS AUTHORITY OF INDIA

SAI

संडेज ऑन साइकिल

SAI
हिन्दी पखवाड़ा
2025

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र बैंगलुरु

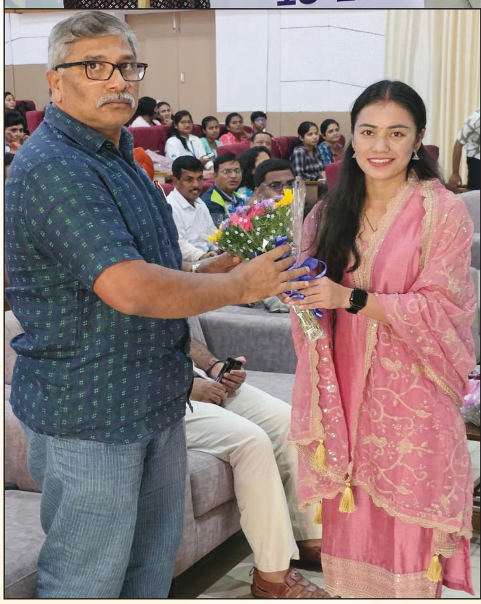

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र भोपाल

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र चंडीगढ़

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र गांधीनगर

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र गुवाहाटी

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र इम्फाल

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र कोलकाता

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र लखनऊ

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र मुंबई

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र त्रिवेन्द्रम

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र पटियाला

हिन्दी पखवाड़ा-क्षेत्रीय केन्द्र सोनीपत

राजभाषा निरीक्षण 2025-26

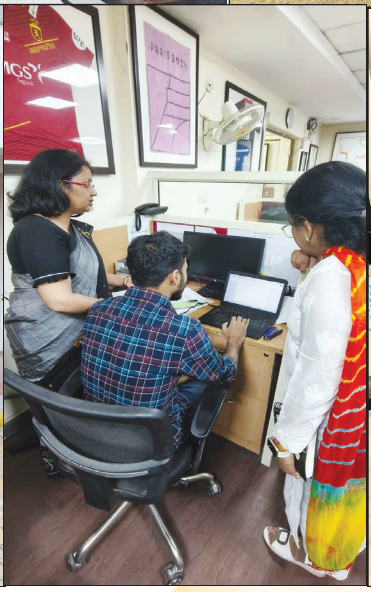

GHOSH DECORATORS

SAI NCOE GANDHINAGAR
PARALYMPIC
INDIA
SPIRIT IN MOTION

JUNIOR WORLD CUP
SIUS

R.S. Rathore
Silver Medalist 2004
Olympic Games
Dr. Karni Singh
SHOOTING RANGE

SAI
1ST STATE GAMES TRIPURA
ORGANIZED BY
TRIPURA OLYMPIC ASSOCIATION
DATE: 22ND TO 24TH FEBRUARY 2026
1ST STATE GAMES TRIPURA
ORGANIZED BY
TRIPURA OLYMPIC ASSOCIATION
DATE: 22ND TO 24TH FEBRUARY 2026

राजभाषा सम्मेलन

RTS AUTHORITY OF TELANGANA
अति विशिष्ट अतिथियों हेतु

भारत सरकार, गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
हिंदी दिवस-2025 एवं
श्री नरेंद्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री
महात्मा मंदिर कन्वेंशन एवं एग्ज़िबिशन सेंटर, गांधीनगर, गुजरात
14-15 सितंबर/ સપ્ટેમ્બર, 2025

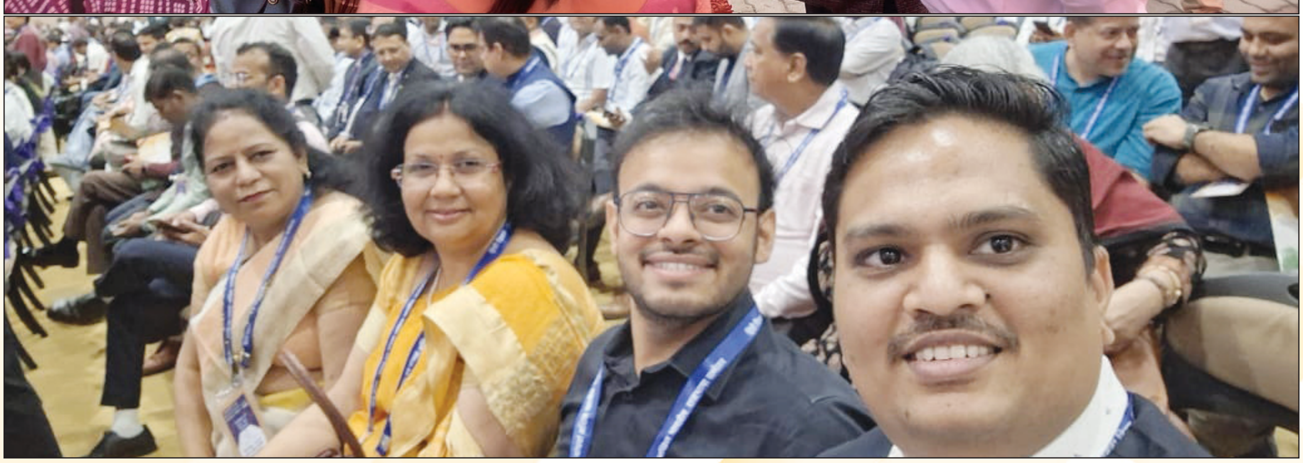

संसदीय समिति निरीक्षण

स्वर्ण जयंती समारोह

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही कार्यशाला

विश्व हिन्दी दिवस

SAI
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।
भारतेंदु हरिश्चंद्र
विश्व हिन्दी दिवस
दिनांक : 13.01.2026 (मंगलवार, अपराहन 3:00 बजे)
स्थान : भाखेप्रा मुख्य कार्यालय, सम्मेलन कक्ष, नई दिल्ली
PREMIER

PREMIER
PREMIER

https://www.facebook.com/plugins/post.php?href=https%3A%2F%2Fwww.facebookcom%2Fsportsauthorityofindi
aMYAS%2Fposts%2 Fpfbid0V334GHDug3A3BBtgDdfrnBjqCqo9aNpTtpCVdg1bswgNdc6i4XTs4m8RrgaNQshkl

https://www.facebook.com/plugins/post.php?href=https%3A%2F%2Fwww.facebook.com%2Fsportsauthorityofindi
aMYAS%2Fposts%2Fpfbid02 TpvRbi9LPV8TZzkpkifiTLqNzSrPPUNTxaf4wgQYnNsXB4gdDKpsXZegFsLdAuecl

https://www.facebook.com/plugins/post.php?href=https%3A%2F%2Fwww.facebook.com%2Fsportsauthorityofindi
aMYAS%2Fposts%2Fpfb id022ZKfo9EwWRRH3b5G7rfnzSD6M1qxr21t9RJXu6cX5aXbqFXREaeTbN1W5TpgqD5ul

https://www.facebook.com/plugins/post.php?href=https%3A%2F%2Fwww.facebook.com%2Fsportsauthorityofindi
aMYAS%2Fposts%2Fpfbid0EkTZVQQ iJ3YbRbNvd16PEPDYpo3PW3k1fJ7wDNrGzVkqdqCv2kKxPxU5yEgB2ikjl

https://www.facebook.com/plugins/post.php?href=https%3A%2F%2Fwww.facebook.com%2Fsportsauthorityofindi
aMYAS%2Fposts%2Fpfbid036krqys QCLkYdqSEeduGq1X4XX941JoHoaXDQ6B3GkKiY1YibrLTDMFkkUUVwWkXPl

https://www.instagram.com/p/DVNjeQ2kfbE/?igsh=N3BkNzA4NzdoN3Bl

https://www.facebook.com/share/1KmhW4s62m/

https://x.com/Media_SAI/status/2006324893789606019

https://x.com/Media_SAI/status/2011356986101936541

https://x.com/Media_SAI/status/2049466566023229905

https://x.com/Media_SAI/status/2016888114166513961

https://x.com/Media_SAI/status/1968146432159830159